के० के० सिंह 'मयंक' अकबराबादी

क़ायनात

दीवान-ए-मयंक

कायनात

(सबरंग-दीवाने-मयंक)

शायर :

के० के० सिंह 'मयंक' अकबराबादी

संकलन :

श्रीमती सरोज सिंह

SADHNA PUBLICATIONS

साधना पब्लिकेशन्स

© : लेखकाधीन

प्रकाशक :
साधना पब्लिकेशन्स
K-4/4, मॉडल टाउन-II
दिल्ली-110009
फोन : 55496808, 274415504, 9891070005
ई-मेल : sadhna_publications@yahoo.co.in

मूल्य : 40/-

संस्करण : 2005

लेजर :
रावत कम्प्यूटर्स, गांधी नगर, दिल्ली-110031
दूरभाष : 011-22070075

मुद्रक :
डी॰ जी॰ प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक की सामग्री के प्रस्तुतीकरण के सभी अधिकार 'साधना पब्लिकेशन्स' K-4/4, मॉडल टाउन-II, दिल्ली-110009 के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटिल-डिजाइन, रेखाचित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़कर हिंदी अथवा किसी भी अन्य भाषा में छापने का प्रयास न करें। अन्यथा कानूनी कार्यवाही के हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार स्वयं होंगे।
किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र दिल्ली होगा।

अपने बारे में

इस मजमुआ से पहले मेरे 16 मज़मुए क़लाम मंज़रे आम पर आ चुके हैं जिनमें मैंने हर सिन्फ़े सुख़न पर तबाआ आज़माई की है। मेरी क़ुल्यात में भजन, नऑत, हमूद, मनक़बत, सलाम, नज़में, गीत, ग़ज़लें, वग़ैरह शामिल हैं। जहाँ तक मेरी शायरी का सवाल है, इस बारे में अर्ज़ करना चाहूंगा कि मैं तालिबइल्मी के दौर से ही हर सिन्फ़े सुख़न की तरफ़ माइल हो गया और मेरा यह शौक़ रफ़ता-रफ़ता जनून की हदों तक आ पहुंचा। रेलवे की नौकरी में आने के बाद मैं एक जगह पर मुक़ीम नहीं रह सका। मैं जहां भी गया वहां के अदबी हलक़ों से वाबसता हो गया और वहां के आला क़दर उस्तादों से मश्वरा लेने लगा क्योंकि मेरा मानना है कि चाहे जो कोई फ़न हो वह उस्तादों के मश्वरा के बग़ैर पाये तकमील तक नहीं पहुंच सकता। मेरे इस नज़रिये ने रफ़ता-रफ़ता मेरे कलाम को पोख़तगी, सलासतसय, नग़मग़ी, फ़साहत और दीगर मौज़ूआत से रूशनास कराया। जिन हज़रात का मुझ पर दस्ते करम रहा उनके इस्माएगरामी हैं जनाब फ़ैज रतलामी, जनाब बिसमिल नक़शबन्दी और जनाब असीर बुरहानपुरी।

गोरखपुर आकर मैं उस्ताद महशर बरेलवी साहब से मशवरअे सुख़न लेने लगा जिसने मेरे कलाम को ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत तर बना दिया। मेरी नज़र में शायरी एक फ़ितरी जज़बा है। 'खुदा जब तक न चाहे आदमी से कुछ नहीं होता'।

मेरे मज़मुए ब उनवान 'गुलदस्ता' के शाया होने के बाद भी मेरे पास ग़ज़लों का एक अम्बार मौजूद था जिसको मेरी शरीके हयात श्रीमती सरोज सिंह ने एकजा (संकलित) किया। मोहतरम महशर साहब से सलाह-मश्वरह के बाद 'कायनात', उर्दू हरफे तहज्जी के एतबार से तरतीब देकर दीवान की शक्ल में शाया करने का फ़ैसला किया।

मेरे मज़मुआ 'कायनात' हाज़िरे ख़िदमत है मेरी शायरी क्या है यह फ़ैसला कारयीन पर छोड़ता हूं।

—के॰ के॰ सिंह 'मयंक'
5/597, विकास खण्ड
गोमती नगर, लखनऊ

मयंक की शख़सियत और शायरी

जनाब के॰ के॰ सिंह बतख़ल्लुस 'मयंक' अकबराबादी की पैदाइश सन् 1944 ई॰ में उत्तर प्रदेश के ज़िला मथुरा में हुई लेकिन कुछ अर्से बाद आगरा (अकबराबाद) तशरीफ़ ले आए और वहीं उन्होंने आला तालीम हासिल की। आप एक आला ख़ानदान से तअल्लुक़ रखते हैं। जिसमें बेशतर अफ़राद आला अफ़सर हुए या हैं। बृज भूमि से तअल्लुक़ होने की वजह से बचपन ही से कविताएं, गीत ग़ज़ल, वग़ैरह लिखने का शौक़ रहा। आला अफ़सर होने की वजह से हिंदुस्तान के मुख़तलिफ़ सूबों और शहरों में सरकारी मुलाज़मत की वजह से क़्याम रहा। इस दौरान सन् 1980 ई॰ में रतलाम पहुंचने के बाद उर्दू शायरी से लगाव पैदा हुआ और तब से आज तक अदब की ख़िदमत कर रहे हैं। पिछले 22 वर्षों में भजन, हम्द, नआत, मनक़बत, सलाम और ग़ज़ल पर आपने तबाअ आज़माई की और अपनी मुसलसल मशक़्क़त की बदौलत मुमताज़ शायरों की सफ़ में नुमाया जगह बना ली। इस दरम्यान इनके एक दर्ज़न से ज़ियादा मज़मुए कलाम मंज़रे आम तक आए। मयंक साहब का कलाम फ़िल्म, दूरदर्शन, रेडियो, कैसेट और रेकॉर्डिंग के ज़रिये भी अवाम् तक पहुंच रहा है। आप मुशायरे के मुतरन्निम और ख़ुश गुलू शायर भी हैं। आपके कलाम को हिंदुस्तान के जाने-माने गुलूकारों जैसे—अहमद हुसेन, मोहम्मद हुसेन, राजेन्द्र, नीना मेहता, रामकुमार शंकर, सुधीर नरायन, राकेश श्रीवास्तव, आजहानी शंकर शंभू, शमीम-नईम अजमेरी सईद फ़रीद साबरी, आजहानी अज़ीज़ नाज़ाँ, जनाब पंकज उदास, रूप कुमार राठौर वग़ैरह से साज़ और आवाज़ के साथ दुनिया के गोशे-गोशे तक पहुंचाया है और श्रीमती संगीतिका त्रिपाठी, जसविंदर सिंह और सुधीर नरायन ने अपनी आवाज़, कैसेट, सी॰डी॰ आदि के जरिये हिंदुस्तान के बाहर भी दूसरे मुलकों में इनके कलाम को पहुंचाया जिसको सभी ख़वासोआम ने बहुत-बहुत पसंद किया।

'मयंक' साहब को ग़ज़ल के उसलूब और आहंग की बहुत अच्छी वाक़फ़ियत है। इन्हें उरूज़ की अच्छी ख़ासी जानकारी भी है। इनके शे'रों में

गहराई, गीराई सलासत, रवानी, बंदिश की चुस्ती, लफ़्ज़ों का सही महले इस्तेमाल बख़ूबी पाया जाता है। शे'र तो इतने सलीस ज़बान व बयान से आरास्ता होते हैं कि काग़ज़ पर आने के बाद भी अपनी ख़ूबियां बिखेरते रहते हैं।

'मयंक' साहब के मज़मुए कलाम 'गुलदस्ता' शाया होने के बाद भी ग़ज़लों का एक गैर मतूबा जख़ीरा 'मयंक' साहब की तहवील में था। सख़्त ग़ौरो ख़ास के बाद सोचा गया कि एक मुद्दत से किसी शायर का मज़मुआ 'दीवान' की शक्ल में शाया होकर मंज़रे आम पर नहीं आया है, तो क्यों न यह मज़मुआ 'कायनात' की शक्ल में शाया किया जाए। दीवान उस मज़मु ए कलाम को कहते हैं जिसमें हर्फे तहज्जी यानि फ़ारसी वर्णमाला के 'अलिफ़' से 'ये' तक रदीफ़वार शायर की ग़ज़लें तरतीब दी जाती हैं। आज तक जितने दीवान शाया हुए हैं, उनमें यह तरकीब देखी गई है। किसी भी शायर ने उर्दू हरूफ़ों जो 'अलीफ़' से 'ये' तक वर्णमाला में शामिल हैं जैसे डाल, ज़ाल, अड़े, हमज़ा वग़ैरह पर अपनी ग़ज़लें दीवान में शामिल नहीं की है। मयंक साहब ने उन उर्दू हरूफ़ों पे भी दीवान में सिलसिलेवार रदीफ़ के साथ ग़ज़लें कही हैं जो शामिलें दीवान हैं।

दीवान, वही शायर शाया करने की जुर्रत करता है जिसको फ़ने अरूज़ की अच्छी ख़ासी वाक़फ़ियत हो और उसको बहुत सी बहरों के इस्तेमाल पर अच्छी पकड़ हो यह ख़ूबी मयंक साहब में है और उन्होंने हर उस बहर में जो उर्दू शायरी के लिए वक़्फ़ है ग़ज़लें कही हैं। कहाँ तक वे कामयाब हैं यह फ़ैसला आप पर है।

इसको अम्ली जामा पहनाने के लिए मयंक साहब की शरीके ह्यात श्रीमती सरोज सिंह ने बड़ी मेहनत और मशक़्क़त से इस दीवान को तरतीब दी और बाक़ी काम जनाब सलाम फैज़ी साहब ने बखूबी अन्जाम दिया, जिससे 'कायनात' मंज़रे आम पर आ सका।

मैं उम्मीद करता हूं कि कायनात मक़बूले ख़ास व आम होगा।

इस दुआ के साथ मैं अपनी बात ख़त्म करता हूं कि "अल्लाह करे, ज़ोरे क़लम और ज़ियादा"।

—बी० ए० बहादुर महशर बरेलवी
नाजिमें आला दायर-ए-अदब
गोरखपुर (यू.पी.)

दीवान क्या है ?

उर्दू शायरी में दीवान की बहुत अहमियत होती है। जितने बड़े शायर हुए हैं उनमें भी बहुत कम शोअरा के दीवान शाया हुए हैं। अलबत्ता मज़मुए तो सैकड़ों और हज़ारों की तादाद में मिलेंगे।

अब सवाल पैदा होता है कि दीवान किसे कहते हैं ? उर्दू शायरी में हुरूफे तहज्जी के लिहाज से जो शायरी तरतीब दी जाए (संकलित की जाए), वही दीवान है। जैसे पहली ग़ज़ल अलिफ हर्फ पर रदीफ खत्म होगी। मसलन- 'गा'-'ता'-'सा'-'जा' जिसके आखिर में यह हर्फ आएं वह अलिफ की रदीफ कहलाएगी। उसके बाद 'बे' फिर 'ते' और ये सिलसिला उर्दू के आखिरी हर्फ 'ये' तक चलता है।

इसमें बड़ी मेहनत और लगन की नहीं; बल्कि जुनून की ज़रूरत होती है।

साहिबे दीवान शोअरा में, कुली कुतुब शाह, मीरतकी मीर ज़ौक, ग़ालिब, मोमिन, दाग़, वग़ैरह बहुत से बड़े नाम शामिल हैं। इसमें कई बहरों और कई नए तर्जुबे भी करने पड़ते हैं, कुछ रदीफें तो बड़ी मुश्किल पैदा करती हैं। लेकिन जुनूनी लोग इन सब मराहिल से गुज़र कर अपनी मंज़िल पा जाते हैं।

के॰ के॰ सिंह 'मयंक' इस दौर के उन्हीं शोअरा में शुमार होते हैं, जो फने शायरी से जुनून की हद तक जुड़े हुए हैं और इस नए दौर में भी अपना दीवान लिख कर अहले अदब की नज़रों में चांद की तरह रहते हैं। इनकी ये क़ोशिश क़ाबिले क़द्र व मुबारकबाद है।

—इनाम शरर

इसके वरक़ वरक़ पे निचोड़ा है ख़ूने दिल।
ये मेरी ज़िन्दगी है, मेरी 'कायनात' है।।

के० के० सिंह 'मयंक'
अकबराबादी

मयंक और उनकी शायरी के बारे में अदीबों की राय

☆ 'मयंक' ने फिरका वाराना हम आहंगी और कौमी यकजहती के शऊर को फरोग़ देने में नुमाया ख़िदमत अंजाम दी है।

—हज़रत अंसीर बुरहानपुरी

☆ 'मयंक' के यहां जो अमल है, वो बेख़रोश है और शहरे सदा की तरह ख़ामोश।

—डॉ. तन्वीर अहमद अल्वी

☆ के. के. सिंह 'मयंक' एक मुख़लिस इंसान और सच्चे शायर हैं।

—मख़्मूर सईदी

☆ 'मयंक' साहब की ग़ज़लें आईनासाज़ी करती हैं और लोगों की बसीरत को तावानी अता करती हैं।

—प्रो. महमूद इलाही

☆ मयंक की शायरी ताज़ा हवा के झोंके से कम नहीं।

—मुहाफिज हैदर

☆ हदीसे हुस्न और हिदायते रोजगार का शायर मयंक।

—प्रो. मलिक जादा मंजूर

☆ क्लासिकी शायरी से शग़फ रखने वालों के लिए दीवान-ए-'मयंक' एक खुशगवार तोहफा है।

—शीन-काफ-निजाम

☆ 'मयंक' ने हक़ीकत को अपनी शायरी का उनवान बनाया है।

—डॉ. महमूदुल हसन उस्मानी

☆ मयंक ने दीवान की रिवायत को फिर ज़िंदा करने की कोशिश की है।

—प्रो. अहमद लारी

☆ 'मयंक' साहब का इतना शौक, इतना ज़ौक, इतनी लगन और उर्दू

शायरी इस दरजा मोहब्बत काबिले सताइश भी है और क़ाबिले तारीफ भी।

—स्व॰ कैफी आज़मी

☆ कल का क़ेस अगर आज ज़िंदा है तो आज का मयंक कल ज़िंदा रहेगा।

—कालिदास गुप्ता 'रज़ा'

☆ के. के. सिंह 'मयंक' मुहब्बतों की ज़बान और खूबियों के बयान का खूबसूरत शायर है।

—बेकल उत्साही

☆ 'मयंक' की शायरी कबीर और नज़ीर की ज़मीनों का छूटा हुआ हिस्सा है।

—मिर्जा फाज़ली

☆ 'मयंक' साहब मन मोहकता के पैकर खुलूस के सागर और दिल के कलन्दर हैं।

—वसीम बरेलवी

☆ 'मयंक' अपनी मैयारी कला और अपने अन्दाजे फिक्र की बदौलत हिन्दोस्तान के गोशे-गोशे में जाना जाने वाला नाम है।

—बशीर बद्र

☆ 'मयंक' साहब का दीवान वाक़ई अदब में एक मख़सूस पहचान बनाएगा।

—गणेश बिहारी 'तर्ज़'

☆ मयंक साहब को ग़ज़ल के असलूब और आहंग की बहुत अच्छी वाक्फिफत है।

—बी. ए. बहादुर 'महशर' बरेलवी

☆ उर्दू की नातिया शायरी की तारीख़ में 'मयंक' का ऊंचा मक़ाम होगा।

—सुलेमान अतहर जावेद

☆ क्लासिकी शायरी की सभी खूबियां 'मयंक' साहब के क़लाम में पाई जाती हैं।

—एहतेशाम अख़्तर

☆ 'मयंक' मुख़्तलिफ रंग-ओ-आहंग का शायर।

—मलका नसीम

☆ कम लफ्जों में बहुत कहना मयंक के फन की पहचान है।

—मंजूर हाशमी

☆ मज़हबे इंसानियत का अलम बरदार सेहतमंत कदरों का मुहाफिज़ मुबालग़ा आराई से मुस्तसना शायर मयंक।

—डॉ. निगार अज़ीम

☆ उर्दू शायरी के सेकूलर किरदार की वकालत करने वाले शुअरा की फेहरिस्त का एक नाम के. के. सिंह 'मयंक'।

—डॉ. जावेद नसीमी

☆ 'मयंक' एक दर्दमंद और हस्सास शायराना ज़हनोदिल के मालिक हैं।

—डॉ. शाहिद हुसेन

☆ 'मयंक' साहब ने शायरी में तसब्बुफ के पहलू को बखूबी उजागर किया है।

—बिस्मिल नक़्शबन्दी

☆ 'मयंक' साहब की शायरी में हुब्बुलवतनी कूट-कूट कर भरी हुई है।

—दर्द होशियार पुरी

☆ 'मयंक' की शायरी राइजख़ाना बंदियों में तक़्सीम नहीं होती।

—प्रो. जगन्नाथ आज़ाद

☆ 'मयंक' साहब दरिया-ए-फिक्र में बहते हैं, बड़े पते की बात कहते हैं।

—प्रो. ज़फर अहमद निज़ामी

☆ दीवान-ए-मयंक में मयंक साहब की आलिमाना सलाहियतों का तफसीली तआरूफ होता है।

—डॉ. राहत इन्दौरी

☆ खुशदिल, खुशफिक्र, खुशआहंग, खुशआवाज़, के. के. सिंह 'मयंक'।

—मुमताज़ राशिद

☆ 'मयंक' साहब बड़ी शानो-शौकत के साथ मुशायरे में आते हैं और छा जाते हैं।

—प्रो. क़ासिम इमाम

ह़म्दे पाक

निराली शान है तेरी हर इक शै में बसा तू है।
सभी कुछ तुझसे वाबस्ता मगर सबसे जुदा तू है।।

तू ही अव्वल, तू ही आख़िर, तू ही ज़ाहिर, तू ही बातिन[1]।
हर इक ज़र्रे में ऐ मेरे ख़ुदा जलवा नुमा तू है।।

तू ही मक़सद, तू ही मंज़िल, तू ही किश्ती, तू ही साहिल।
हक़ीक़त में जहाने आरज़ू का मुद्दआ[2] तू है।।

बयां क्या हो तेरी हम्दो-सना[3] ऐ ख़ालिके[4] दुनिया।
सभी कमतर हैं तुझ से, दो जहां में, और बड़ा तू है।।

गुनहगारों को यारब नाज़ है तेरी करीमी पर।
करम की इब्तिदा[5] तू है, करम की इन्तिहा[6] तू है।।

जो तू चाहे तो मंज़िल ख़ुद मुसाफ़िर के क़दम चूमे।
जहां में रहनुमाओं का भी यारब रहनुमा तू है।।

'मयंक' अब इस जहां में और किससे आसरा मांगे।
ग़मों की भीड़ में बेआसरों का आसरा तू है।।

---

1. छुपा हुआ, 2. ख़्वाहिश, 3. ख़ुदा की तारीफ़ 4. बनाने वाला, 5. शुरुआत, 6. चमर सीमा।

अलिफ़

हर इक रस्मे कुहन[1] बदली, मिज़ाजे आसमां बदला।
न उनकी गुफ़्तगू बदली न अंदाज़े बयां बदला।।

बहर सूरत बहर आलम रहे हम दूर मंज़िल से।
हज़ारों बार गरचे[2] हमसे मीरे-करवां बदला।।

जहां पर ठान ली हमने वहीं चुनते रहे तिनके।
न शाख़े आशियां बदली, न हमने गुलसितां बदला।।

ग़लत राहों पे कैसे साथ चलते सोचिए ख़ुद ही।
न लीजे बेसबब हमसे ख़ुदारा मेहरबां बदला।।

नतीजा हक़ बयानी का हमें मालूम था लेकिन।
तहे[3] तेग़[4] सितम भी हमने कब अपना बयां बदल।।

इसे बर्बाद करने पर तुले हैं जो ज़बां वाले।
रहेगी लेके उनसे एक दिन उर्दू ज़बां बदला।।

कहें किस दिल से गुलशन में 'मयंक' अपने बहार आई।
न चहकीं बुलबुलें हर सू, न रंगे गुलसितां बदला।।

1. पुरानी, 2. हालाँकि, 3. नीचे, 4. तलवार।

पत्थर को गुहर[1], दश्त[2] को घर हमने बनाया।
हर ऐब को हमरंगे हुनर हमने बनाया।।

जब आतशे[3] गुल से न बनी बात चमन में।
हर क़तरा-ए-शबनम को शरर[4] हमने बनाया।।

ऐ हुस्ने सरापाये[5] अज़ल[6] हमको दुआ दे।
जलवा तेरा मंज़ूरे नज़र हमने बनाया।।

आराइशे[7] गुलशन में लहू अपना मिलाकर।
हर फूल को फ़िरदौसे[8] नज़र हमने बनाया।।

जिस दिल को सताती थीं ज़माने की बलाएं।
उस दिल को बला नोश[9] मगर हमने बनाया।

मालूम था जल जाएगा अपना ही नशेमन।
कांधों पे मगर बर्क़[10] के घर हमने बनाया।।

देखे कोई यह हुस्ने मसावात[11] हमारा।
ज़र्रे को 'मयंक' आज क़मर[12] बनाया।।

---

1. मोती, 2. जंगल, 3. आग, 4. चिन्गारी, 5. सर से पांव तक, 6. सम्पूर्ण सृष्टि को बनाने वाला हसीं (ईश्वर), 7. शृंगार, 8. जन्नत, 9. पीने वाला (मयकश), 10. बिजली, 11. एकता, 12. चाँद।

उल्फ़त में बहुत मजबूर थे हम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।
तुम जिसकी भी चाहे ले लो क़सम, जो दिल ने कहा वह हमने किया।।

हम आ ही गए बहकावे में कमबख़्त के राहे उल्फ़त में।
इलज़ाम न दो मालूम हैं हम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

दुनियाये मुहब्बत में माना, कुछ और न कर पाए लेकिन।
इतना तो किया है कम से कम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

क्या ज़ोह्द[1] है और क्या तक़वा[2] है, जब अपनी समझ के है बाहर।
फिर करते भी क्या हम शेख़े हरम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

हो वक़्ते सहर या शामे अलम क्यों हमको सताता है पैहम[3]।
जब तुझको ख़बर है दी-दए-नम[4], जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

उस बुत की भी पूजा की हमने, जिस बुत की अदायें काफ़िर थीं।
नाराज़ कि खुश हों अहले[5] हरम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

हम शहरे मुहब्बत में आकर ख़ातिर में न लाये दुनिया को।
गो लाख रही दुनिया बरहम[6], जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

कमबख़्त के कहने में आकर इज़हारे मुहब्बत कर बैठे।
अपनाओ कि ढाओ हम पे सितम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

चलने से ख़िरद[7] की राहों पर कुछ अपना भला होगा न 'मयंक'।
यह सोच के हमने ऐ हमदम, जो दिल ने कहा वो हमने किया।।

---

1. परहेजगारी, 2. पारसाई, 3. लगातार, 4. भीगी आँखें, 5. मस्जिद वाले, 6. ख़फ़ा, 7. होशियारी।

हम अगर मिट जाएंगे तो यह जहां मिट जाएगा।
यह ज़मीं मिट जाएगी यह आसमां मिट जाएगा।।

दो क़दम तुम भी बढ़ो और दो क़दम हम भी बढ़ें।
ख़ुद-ब-ख़ुद जो फ़ासला-है-दरमियां मिट जायेगा।।

जीते-जी मिटने न देगा कारवां वालो तुम्हें।
कारवां से पहले मीरे कारवां मिट जाएगा।।

गर यही आलम रहा तफ़रीक़े[1] ख़ासो आम का।
तो वजूदे मयकदा पीरे[2] मुग़ां मिट जाएगा।।

गर हुई ख़ातिर तवाज़ो आदमी पहचान कर।
मेज़बानी का चलन फिर मेज़बां मिट जाएगा।।

नफ़रतों का फिर उठेगा एक तूफ़ां चार सू।
दिल से गर नक़्शे मुहब्बत मेहरबां मिट जाएगा।।

ज़ुल्म सहने वाले तो जिन्दा रहेंगे ऐ 'मयंक'।
ज़ुल्म ढाने वालों का नामों निशां मिट जाएगा।।

---

1. फ़र्क़, 2. मयकदे का मुखिया।

नाशाद[1] था मैं और भी नाशाद हो गया।
जब से ग़मों की क़ैद से आज़ाद हो गया।।

कोई दुआ न हक़ में मेरे काम आ सकी।
बर्बाद मुझको होना था बर्बाद हो गया।।

आसान किस क़दर है मुहब्बत का यह सबक़।
बस एक बार मैंने पढ़ा याद हो गया।।

मैं मांगने गया था वहां ज़िंदगी मगर।
फ़रमान मेरी मौत का इरशाद[2] हो गया।।

दिल तोड़ने पे मेरा ज़माना लगा रहा।
दिल टूटता भी कैसे जो फ़ौलाद हो गया।।

हम तो तमाम उम्र रहे मुब्तदी[3] मगर।
वह चंद शे'र कहके ही उस्ताद हो गया।।

जब से वो मेरे दिल में मकीं हो गए 'मयंक'।
उजड़ा हुआ मकान था, आबाद हो गया।।

1. दुःखी, 2. घोषित, 3. शुरुआत करने वाला।

प्यार सबसे हुज़ूर हमने किया।
सिर्फ़ इतना क़सूर हमने किया।।

उनके दानिस्ता[1] पास जा बैठे।
ख़ुद को ख़ुद से ही दूर हमने किया।।

दिल को टकरा दिया था पत्थर से।
आईना चूर-चूर हमने किया।।

प्यार करना गुनाह है फिर भी।
यह गुनाह भी हुज़ूर हमने किया।।

चार दिन की थी ज़िन्दगी, मालूम।
फिर भी इस पर ग़रूर हमने किया।।

हम ही मक़तूल[2] भी हैं क़ातिल भी।
क़त्ल ख़ुद को हुज़ूर हमने किया।।

दें सज़ा शौक़ से वो हमको 'मयंक'।
आदमी हैं क़सूर हमने किया।।

---
1. जानबूझकर, 2. जिसका क़त्ल हुआ।

थीं हवाएं तुंद[1] कितनी मुझको अंदाज़ा न था।
क्योंकि जिस कमरे था मैं उसमें दरवाज़ा न था।।

वक़्त बदला तो सभी ने अपनी नज़रें फेर लीं।
तुम भी नज़रें फेर लोगे इसका अंदाज़ा न था।।

ख़ून दामन पर न था गो दर्द था बेइंतिहा।
क्योंकि दिल का जख़्म गहरा था मगर ताज़ा न था।।

दौरे हाज़िर की ये दुल्हन किस तरह लगती हसीं।
जबकि चेहरे पर हया और शर्म का ग़ाज़ा[2] न था।।

हर कोई बनता है 'ग़ालिब', 'मीर', 'मोमिन' और 'फ़िराक़'।
जब सुना हमने तो कोई शे'र भी ताज़ा न था।।

वह वफ़ाओं का जफ़ाओं से सिला देते रहे।
क्या 'मयंक' उनकी मुहब्बत का ये ख़ामियाज़ा[3] न था।।

1. तेज़, 2. पाउडर, 3. नतीजा।

मेरे बच्चों के लिए दो वक़्त का आटा न था।
हां मगर घर में मताए[1] ज़र्फ़ का घाटा न था।।

उसके मरने पर किसी की आंख में आंसू न थे।
ज़िंदगी का जिसने मिल-जुलकर सफ़र काटा न था।।

दोस्तों की दोस्ती ने दिल के टुकड़े कर दिये।
दुश्मनों ने तो कभी मेरा गला काटा न था।।

जीत में तो जीत थी ही, हार में भी जीत थी।
था मुनाफ़ा ही मुनाफ़ा प्यार में घाटा न था।।

नफ़रतों की चोटियों पर बैठकर रोता रहा।
जिसने दिल की खाइयों को प्यार से पाटा न था।।

अब वही समझा रहा है इश्क़ के मुझको चलन।
जिसने इक लम्हा किसी के हिज्र[2] का काटा न था।।

दिल धड़कने की सदा[3] आती रही थी ऐ 'मयंक'।
मेरी तन्हाई थी तन्हा, फिर भी सन्नाटा न था।।

---

1. दौलत, 2. जुदाई, 3. आवाज़।

ज़र्फ़[1] की मीज़ान[2] पर हर दोस्त पहचाना गया।
हम ज़रा सी बात पर रूठे तो याराना गया।।

हम जो उनकी बज़्म से दामन झटक कर चल दिए।
खुश हुए, कहने लगे अच्छा है दीवाना गया।।

मैं तो तौबा पर था क़ायम अपनी ऐ शेख़े हरम।
ले के मुझको मयकदे में शौक़े रिंदाना[3] गया।।

देखता किस दिल से उसको इश्क़ में जलते हुए।
शमूए[4] सोज़ां की तरफ़ खुद बढ़के परवाना गया।।

हर तरफ़ महफ़िल में उसकी क़हकहों की गूंज थी।
मैं सुनाने उसको नाहक़ ग़म का अफ़साना गया।।

यकबयक रुख़ पर सभी के इक उदासी छा गई।
उठके तेरी बज़्म से जब तेरा दीवाना गया।।

क्यों न करता वह सितमगर ऐ 'मयंक' उसको क़बूल।
जिसकी ख़िदमत में मैं लेकर दिल का नज़राना गया।।

1. क्षमता, 2. तराजू, 3. पीने का शौक़, 4. जलती हुई शमा।

गर दिल में मुहब्बत का अरमान नहीं होता।
मैं ज़ुहरा[1] जबीनों[2] पर कुर्बान नहीं होता।।

दिल दे के तुम्हें अपना हम भूल गए कब के।
अपनों पे जो करते हैं एहसान नहीं होता।।

जीना तो मुहब्बत में मुश्किल है बहुत मुश्किल।
मरना भी मुहब्बत में आसान नहीं होता।।

क्या ऐसी जगह भी है दुनिया में जहां यारो।
अल्लाह नहीं होता भगवान नहीं होता।।

देते हैं वही तल्क़ीं[3] ईमां की ज़माने को।
जिन कुफ़्र के मारों का ईमान नहीं होता।।

नादां है बहुत फिर भी यह शम्अ का परवाना।
अंजामे मुहब्बत से अन्जान नहीं होता।।

जब तक न करे दामन तर अपना गुनाहों से।
तब तक तो 'मयंक' इंसां इन्सान नहीं होता।।

---

1. एक सितारे का नाम, 2. पेशानी, 3. शिक्षा।

यूं भी रुतबा बढ़ाया गया।
आसमां पर बुलाया गया।।

बेख़ता जो भी पाया गया।
उसको सूली चढ़ाया गया।।

चंद लम्हों की देकर ख़ुशी।
ज़िंदगी भर रुलाया गया।।

ज़िक्र औरों का चलता रहा।
तज़किरा मेरा आया गया।।

पहले मेरे क़सीदे पढ़े।
फिर नज़र से गिराया गया।।

जुर्मे उलफ़त की इतनी सज़ा।
आसमां से गिराया गया।।

इम्तिहां, इम्तिहां, इम्तिहां।
उम्र भर आज़माया गया।।

तब कहीं जाके टूटा भरम।
आईना जब दिखाया गया।।

फिर भी कांटों से उलझा किया।
लाख दामन बचाया गया।।

अब किसी ख़ूबरू[1] से 'मयंक'।
अपना वादा निभाया गया।।

---

1. ख़ूबसूरत चेहरे वाला।

आप से नाता न तोड़ा जायेगा।
आह से रिश्ता न जोड़ा जायेगा।।

जल उठेंगे लोग तेरे नाम से।
जब हमारा नाम जोड़ा जायेगा।।

पहले बालो पर कतर डालेंगे वह।
फिर हमें आज़ाद छोड़ा जायेगा।।

जो करे तक़सीम उलफ़त की शराब।
हमसे वह साग़र न तोड़ा जायेगा।।

दिल वो जिसमें हो मुहब्बत का क़याम।
हम से वह हर्गिज़ न तोड़ा जायेगा।।

अहले[1] ज़र[2] के ऐशो इशरत के लिए।
मुफ़लिसों का ख़ूं निचोड़ा जायेगा।।

प्यार के पंछी जिधर होंगे 'मयंक'।
बस उधर ही तीर छोड़ा जायेगा।।

1. वाला, 2. दौलत।

जब हवा में नफरतों का ज़हर है फैला हुआ।
कौन निकले घर से बाहर और देखे क्या हुआ।।

ऐसे घरवालों की ख़ुशियां का बयां कैसे करूं।
जिसमें छः-छः बेटियों के बाद इक बेटा हुआ।।

मैंने मांगी ही नहीं दिल से कभी वक़्ते नमाज़।
इसलिए मेरी दुआओं का असर उल्टा हुआ।।

हर क़दम पै उसने खाए जब फरेबे ज़िंदगी।
शाम को घर लौट आया सुबह का भूला हुआ।।

लाख उल्फत के जहां में आए दिलवाले 'मयंक'।
काम उसका ही हुआ जो इश्क में रुसवा हुआ।।

हौसला यूं भी बढ़ाया जाएगा।
फितना कारो को मनाया जाएगा।।

जब कोई बरगद गिराया जाएगा।
कितनों ही के सिर से साया जाएगा।।

देखकर आया हूं उसको ग़मज़दा।
अब न मुझसे मुस्कराया जाएगा।।

हूं नज़र में उसकी मैं हरफ़े ग़लत।
इसलिए मुझको मिटाया जाएगा।।

हो गईं हमवार राहें इश्क की।
उसके घर अब आया जाया जाएगा।।

लब जो खोलेंगे सितमगर के ख़िलाफ
उनको सूली पै चढ़ाया जाएगा।।

अपनी बरबादी का रोना कब तलक।
कब तलक मातम मनाया जाएगा।।

पहले घर को घर बना तो लूं 'मयंक।
दोस्तों को फिर बुलाया जाएगा।।

मेरी मय्यत पर आ जाना पहन के जोड़ा शादी का।
दुनिया वाले भी तो देखें जश्न मेरी बर्बादी का।।

हुस्न और इश्क़ के बीच में हरदम चांदी की दीवारें हैं।
रास कहां मुफ़लिस को आता प्यार किसी शहज़ादी का।।

देख के मेरी हालत मौसम की भी आंखें नम हैं आज।
तुम भी तड़प उठोगे सुनकर ज़िक्र मेरी बरबादी का।।

दूर क़फ़स[1] से हूं मैं लेकिन यादे माज़ी[2] में हूं क़ैद।
मतलब ग़लत लगा बैठे हैं लोग मेरी आज़ादी का।।

किसकी अदालत में वह जाए किससे मांगे अब इंसाफ़।
कोई भी पुरसा[3] हाल नहीं है आज यहां फ़रियादी का।।

जो भी चाहो शौक़ से पहनो तन पर लेकिन दीवानो।
तार-तार तुम मत कर देना पैराहन आज़ादी का।।

मुद्दत से मैं भटक रहा हूं नफ़रत के सहरा में 'मयंक'।
काश कोई रास्ता दिखला दे चाहत की आबादी का।।

---

1. पिंजरा, जेल, 2. अतीत, 3. पूछने वाला।

रघुकुल की रवायत का गर पास[1] नहीं होता।
तो राम, लखन, सिय को बनवास नहीं होता।।

है मौत के आने का तय वक़्त मगर फिर भी।
किस वक़्त कहां आए आभास नहीं होता।।

ऐ उम्रे रवां जब वह आएंगे अयादत[2] को।
तू साथ मेरा देगी विश्वास नहीं होता।।

रो लेता हूं जी भरकर जब अपनी तबाही पर।
फिर मुझको तबाही का एहसास नहीं होता।।

यारो ये कहावत भी इक ज़िंदा हक़ीक़त है।
क़िस्मत में कनीज़ों की रनिवास नहीं होता।।

अख़बार बिछा कर वह फुटपाथ पे सोते हैं।
वह जिनके मुक़द्दर में आवास नहीं होता।।

कांधों पे लिये घर को जो घूमते रहते हैं।
उन ख़ानाबदोशों का इतिहास नहीं होता।।

दिन-रात मुहब्बत में हम उसकी तड़पते हैं।
बेहिस[3] को 'मयंक' इसका एहसास नहीं होता।।

1. ख़्याल, 2. हालचाल लेने को, 3. जिसमें कोई एहसास न हो।

पीने को मुझे साक़ी, खाने को ख़ुदा देगा।
यह मेरा भरम मुझको क्या-क्या न दग़ा देगा।।

ऐ दोस्त ज़मीर अपना इक ऐसा नजूमी[1] है।
आग़ाज़ से पहले ही अंजाम बता देगा।।

ख़ुद जिसने मुझे डाला रस्ते पे गुनाहों के।
वह मेरे गुनाहों की क्या मुझको सज़ा देगा।।

दामन पे जो टपकेंगे पलकों से मेरी क़तरे।
उनमें से कोई क़तरा तूफ़ान उठा देगा।।

आएगा ज़रूर इक दिन वह दौरे[2] तग़ैयुर भी।
रोतों को हंसा देगा, हंसतों को रुला देगा।।

काग़ज़ पे क़रीने से तरतीब कोई देकर।
इक हर्फ़े[3] मुहब्बत का अफ़साना बना देगा।।

तोड़ेगा 'मयंक' आकर जो कुहना[4] रवायत[5] को।
जीने का वही मुझको अंदाज़ नया देगा।।

---

1. ज्योतिषी, 2. बदलता रहने वाला काल, 3. अक्षर, 4. पुरनी, 5. रुढ़ियाँ।

आपको नज़रें मिलाये इक ज़माना हो गया।
ज़र्फ़ मेरा आज़माये इक ज़माना हो गया।

रोज़ खिलते हैं तेरे लब पर तबस्सुम[1] के गुलाब।
और मुझको मुस्कुराये इक ज़माना हो गया।।

जा रहा हूं इसलिए फिर जलवा गाहे नाज़ में।
हाले दिल उसको सुनाये इक ज़माना हो गया।।

छोड़िये अब यह तक़ल्लुफ़ और यह शर्मो हया।
आपको इस घर में आये इक ज़माना हो गया।।

आइये आ जाइये अब तो क़रीब आ जाइये।
प्यास नज़रों की बुझाये इक ज़माना हो गया।।

छोड़ दे पीछा मेरा लिल्लाह[2] अब तो ज़िन्दगी।
तुझको सीने से लगाये इक ज़माना हो गया।।

कर न पाया आज तक दीदार मैं उसका 'मयंक'।
ज़हनों दिल पर उसको छाये इक ज़माना हो गया।।

---

1. मुस्कराहट, 2. ख़ुदा के वास्ते।

रफ़्ता-रफ़्ता आशिक़ी में वह मुक़ाम आ ही गया।
उनके लब पर बे इरादा मेना नाम आ ही गया।।

आख़िरश[1] पहलू में अपने उसने दी मुझको जगह।
मेरा इख़लाक़े मुहब्बत मेरे काम आ ही गया।।

इस तरह तड़पाया मेरी याद ने उसको कि बस।
भूलने वाले का मुझको फिर पयाम आ ही गया।।

थी कशिश इस दर्जा उनके गेसुओं के जाल में।
ताइरे[2] दिल खुद ही खिंच के ज़ेरे दाम आ ही गया।।

गो नज़रअंदाज़ साक़ी ने किया मुझको मगर।
मेरे हिस्से का मेरे हाथों में जाम आ ही गया।।

मुस्कुराने पर मेरे, यारो ! ग़मों का इक हुजूम।
मेरे घर लेने को मुझसे इंतिक़ाम आ ही गया।।

मैं न कहता था कि इक दिन वह बुला लेंगे ज़रूर।
वक़्ते रुख़्सत ही सही, उनका पयाम आ ही गया।।

वह जिन्होंने खुल के लूटी दौलते हुस्ने चमन।
उनके हाथों में चमन का फिर निज़ाम आ ही गया।।

किसलिए अब तू रुका है बज़्मे दुनिया में 'मयंक'।
जिनका आना था सलाम उनका सलाम आ ही गया।।

1. आखिरकार, 2. परिंदा रूपी, 3. नीचे, 4. जाल।

हमीं से है अगर जलवा तुम्हारा।
हमारे बाद क्या होगा तुम्हारा।।

ख़ुदा मालूम क्यों रहता है हरदम।
नज़र के सामने चेहरा तुम्हारा।।

हमीं ने तुमको मसनद पर बिठाया।
हमारे दम से है रुतबा तुम्हारा।।

करम से गर रही महरूम दुनिया।
न लेगी नाम फिर दुनिया तुम्हारा।।

जो वाक़िफ़ है तुम्हारी रहमतों से।
सहारा क्यों न वो लेगा तुम्हारा।।

तुम्हारी बात में दम तो बहुत है।
मगर अच्छा नहीं लहजा तुम्हारा।।

सभी जब मुब्तला है अपने ग़म में।
सुनेगा कौन फिर दुखड़ा तुम्हारा।।

हज़ारों साल पर भारी नहीं क्या।
जो लमहा प्यार में गुज़रा तुम्हारा।।

बे

जो भी तेरे क़रीब है यारब।
वह बड़ा ख़ुशनसीब है यारब।।

कोई ग़मगीन है कोई ख़ुश है।
अपना-अपना नसीब है यारब।।

तू ही ज़ाहिर भी तू ही बातिन[1] भी।
तेरी हस्ती अजीब है यारब।।

जिस पे तेरी नज़र न हो ऐसा।
अहले[2] ज़र भी ग़रीब है यारब।।

तूने क़ातिल बना दिया जिसको।
वह ही मेरा तबीब[3] है यारब।।

आज हर शख़्स के गले में क्यों।
इक निशाने सलीब है यारब।।

सिर्फ़ तू ही नहीं हबीब 'मयंक'।
तेरा ग़म भी हबीब है यारब।।

---

1. छुपा हुआ, 2. धनवान, 3. हक़ीम।

आपकी जो भी चाल है साहब।
वाक़ई बेमिसाल है साहब।।

रोज़ आते हैं वह तसव्वुर में।
उनको मेरा ख़्याल है साहब।।

चांद सूरज से भी सिवा यारो।
उनका हुस्नो जमाल[1] है साहब।।

जिसने अंजाम पर नज़र की है।
वह परेशान हाल है साहब।।

रिफ़अतें[2] अब कहां हैं किस्मत में।
अब तो दिल पायमाल[3] है साहब।।

अपनी हद से गुज़र गया था मैं।
मुझको इसका मलाल है साहब।।

क्यों 'मयंक' आदमी है छोटा बड़ा।
ख़ून जब सबका लाल है साहब।।

---

1. सुंदरता, 2. ऊंचाइयां, 3. पांव से कुचला हुआ।

पे

बावफ़ा मुझसा ज़माने में कहां पाएंगे आप।
मेरी हस्ती को मिटाकर ख़ुद ही पछताएंगे आप।।

रंग पर मेरी मुहब्बत को ज़रा आने तो दें।
खिंच के पहलू में मेरे ख़ुद ही चले आएंगे आप।।

बाद मेरे हुस्ने रंगीं को जिला[1] बख़्शेगा कौन।
आईना देखेंगे जब भी तो तड़प जाएंगे आप।।

ज़िंदगी की राह में चलिए न आंखें मूंदकर।
वरना अंधों की तरह ही ठोकरें खाएंगे आप।।

इसलिए करता नहीं हूं पेश दिल का मुद्दआ।
मुझको यह मालूम है क्या मुझसे फ़रमाएंगे आप।।

किस तरह ज़िंदा रहें इस दौरे पुरआशोब[2] में।
शहर में मुर्दा दिलों के किसको समझाएंगे आप।।

ज़िंदगी की राह में सीना सिपर[3] रहिए 'मयंक'।
मौत से डरिएगा तो बेमौत मर जाएंगे आप।।

---

1. रोशनी, 2. दुखों से भरा, 3. सीना ताने हुए।

यूं न हमें पुकारें आप।
तंज़ के तीर न मारें आप।।

वक़्त पड़े तो देश के ख़ातिर।
तन मन धन सब वारें आप।।

छोड़ें मुझको हाल पै मेरे।
अपनी जुल्फ़ सवारें आप।।

राहे[1] तलब में महरो वफ़ा के।
मिटते नक़्श उभारें आप।।

राह कठिन है दूर है मंज़िल।
फिर भी न हिम्मत हारें आप।।

दुनिया से जाने से पहले।
इसका क़र्ज़ उतारें आप।।

मेरे मुक़द्दर में आंसू हैं।
हंस के 'मयंक' गुज़ारें आप।।

---

1. इच्छाओं का रास्ता।

ते

आपकी महफ़िल मे यूं तो हुस्न वाले हैं बहुत।
तन के तो उजले हैं लेकिन मन के काले हैं बहुत।।

वह ही कांटे बो रहे हैं अब हमारी राह में।
हमने जिनके पांव से कांटे निकाले हैं बहुत।।

उंगलियों पर हम गिना दें, हों अगर दो-चार-दस।
क़ामयाबी पर हमारी जलने वाले हैं बहुत।।

एक दिन तरसेगा वह भी दाने-दाने के लिए।
आज दस्तरख़्वान पर जिसके निवाले हैं बहुत।।

देख लो दामन हमारा आज भी बेदाग़ है।
मयकदे में यूं तो हमने जाम उछाले हैं बहुत।।

ज़िंदगी को ज़िंदगी भर मुंह लगाया ही नहीं।
ज़िंदगी ने यूं तो हम पर डोरे डाले हैं बहुत।।

दोस्तों की दोस्ती से ख़ूब वाक़िफ़ हैं 'मयंक'।
आस्तीं में बरसों हमने नाग पाले हैं बहुत।।

यूं तो मेरी आंसुओं से है शनासाई[1] बहुत।
हां मगर आते हैं तो होती है रुसवाई बहुत।।

किससे कीजे कैसे कीजे इल्मो फ़न पर गुफ़्तगू।
आजकल अहलेअदब[2] कम हैं तमाशाई बहुत।।

क्या करें उलझन हमारी ख़त्म होती ही नहीं।
उसने सुलझाने को अपनी ज़ुल्फ़ सुलझाई बहुत।।

उसका मेरा साथ वैसे तो रहा है कम से कम।
याद आता है मगर फिर भी वो हरजाई बहुत।।

सिक्क-ए-जाँ देके भी बू-ए-वफ़ा मिलती नहीं।
आज बाज़ारे मुहब्बत में है महंगाई बहुत।।

हर घड़ी बस एक रट इस घर का बंटवारा करो।
जाने क्यों नाराज़ है मुझसे मेरा भाई बहुत।।

हैं वही लम्हे जुदाई के मगर फिर भी 'मयंक'।
जाने क्यों खलने लगी है शामे तन्हाई बहुत।।

---

1. जान-पहचान, 2. अदब को जानने वाले।

टे

आपका ये फ़रमाना झूठ।
मुझसे है याराना, झूठ।।

दुनिया झूठ, जमाना झूठ।
जग का ताना बाना झूठ।।

सच का साथ न हम छोड़ेंगे।
बोले लाख ज़माना झूठ।।

सुन के हकीकत प्यार से बोले।
प्यार का है अफ़साना झूठ।।

मुल्क में हरसू खुशहाली है।
ख़ूब है ये शाहाना झूठ।।

ये तो काम है फरज़ानों का।
क्या जाने दीवाना झूठ।।

मैख़ारों से बोल रहा है।
क्यों मीरे मैख़ाना झूठ।।

ऐ 'मयंक' मरते मर जाना।
होठों पर मत लाना झूठ।।

इंसां की मैं मैं की रट।
जाने बैठे किस करवट।।

ख़ाली-ख़ाली हैं चौपालें।
सूने सूने हैं पनघट।।

घुंघरू की आवाज़ें जैसे।
उनके पैरों की आहट।।

हर चेहरे पर रंगे बग़ावत।
माथे-माथे पर सिलवट।।

सजदों से दोनों हैं इबारत।
मेरी जबीं उनकी चौखट।।

रस्ते अलग-अलग हैं लेकिन।
सबकी मंज़िल है मरघट।।

इश्क़ जिसे कहते हैं वह है।
बैठे बिठाये की झंझट।।

बदलेगा इक रोज़ 'मयंक'।
मेरा मुक़द्दर भी करवट।।

शबे फ़ुर्क़त[1] सूकूं पाया न इस करवट न उस करवट।
दिले मुज़्तर[2] को चैन आया न इस करवट न उस करवट।।

मुख़ातिब उनको करने को बदलते रह गए पहलू।
मुहब्बत का सिला पाया न इस करवट न उस करवट।।

हुए रुख़सत वो जिनको देखने की मुझको ख़्वाहिश थी।
वही मुझको नज़र आया न इस करवट न उस करवट।।

बदलने को तो हर लम्हा ही मैंने करवटें बदलीं।
क़रारे ज़िंदगी पाया न इस करवट न उस करवट।।

ज़माने में मयंक आने को तो सौ इन्क़लाब आए।
ज़मानां फिर भी रास आया न इस करवट न उस करवट।।

1. विच्छोह 2. बेचैन।

से

कौन झुकाता है चौखट पर उसकी सर बेलौस।
मैं करता हूं उसको सज्दा फिर भी मगर बेलौस।।

लाख ज़माना पत्थर मारे तोड़े इनके फूल।
पेड़ मगर देते हैं फिर भी मीठे समर बेलौस।।

तेरे मन की सभी मुरादें पूरी करेगा वो।
उसकी जानिब अगर उठेंगी तेरी नज़र बेलौस।।

बांट के अमृत सारे जग को, सुन लो ऐ लोगों!
ज़हर का प्याला हंसकर पी गए, शिवशंकर बेलौस।।

कैसे कह दें, उनसे सोचो, ख़िज़्रे राह 'मयंक'।
राह दिखाते नहीं किसी को जो रहबर बेलौस।।

कहीं गीता के वारिस हैं कहीं क़ुरआन के वारिस।
हक़ीक़त में मगर यह सब हैं हिंदुस्तान के वारिस।।

हमारी पारसाई[1] पर खुदाई नाज़ करती है।
हमीं हैं हां हमीं हैं दौलते ईमान के वारिस।।

अदब और शायरी का दोस्तो हाफ़िज़ खुदा होगा।
अगर जाहिल रहेंगे मीर के दीवान के वारिस।।

मुझे हर एक मज़हब से ज़ियादा देश प्यारा है।
मेरी यह बात सुन लें धर्म के ईमान के वारिस।।

वो जिसके नाम से लाखों हज़ारों फ़ैज़ पाते थे।
बिलखते भूख से देखे हैं उस सुलतान के वारिस।।

'मयंक' अठखेलियां करते हैं जो मौजे हवादिस से।
हक़ीकत में वही तो होते हैं तूफ़ान के वारिस।।

---

1. पवित्रता।

जीम

कभी बहार की रंगत, कभी ख़िज़ां का मिज़ाज।
कब एक जैसा रहा गर्दिशे जहां का मिज़ाज।।

गुरूरे वक़्त से कह दो कि होश में आये।
ज़मीन पूछने वाली है आसमां का मिज़ाज।।

हमारे क़द की बुलंदी को नापने वालो।
हमारा हौसला रखता है आसमां का मिज़ाज।।

नई बहार की ये दोरुखी अरे तौबा।
गुलों से मिलता नहीं सहने गुलसितां का मिज़ाज।।

समझने वाले मेरे दिल का मुद्दआ समझें।
है लफ़्ज़-लफ़्ज़ से ज़ाहिर मेरी ज़बां का मिज़ाज।।

'मयंक' मंजिले मक़सूद का खुदा हाफ़िज।
है कारवां से अलग मीरे कारवां का मिज़ाज।।

जिनका दावा, लायेंगे हम रामराज।
कर दिया दूषित उन्हीं ने कुल समाज।।

आपकी रंगी सियासत अल्लमां।
हर तरफ़ से हो रहा है एहतजाज[1]।।

है वही माहौल वो ही ज़िंदगी।
कल जो होता था वही होता है आज।।

वो जो रक्खेंगे वतन की आबरू।
अबके सौंपेंगे उन्हीं को तख़्तोताज।।

भूल बैठे चाह में उसकी 'मयंक'।
क्या रवायत और क्या रस्मों रिवाज।।

---

1. विरोध।

चे

आज जो ये दीवार खड़ी है तुम दोनों के बीच।
कुछ तो बात ज़रूर हुई है तुम दोनों के बीच।।

बन के शोला भड़क उठेगी इसके हैं इमकान।
जो चिंगारी सुलग रही है तुम दोनों के बीच।।

कहने को तो एक हुए हैं दोनों के दिल आज।
दूरी फिर क्यों बनी हुई है तुम दोनों के बीच।।

कल तक हमने जो देखा था ज़हरीला माहौल।
आज भी क्या माहौल वही है तुम दोनों के बीच।।

मुद्दत से ये सोच रहा है कैसे भरे 'मयंक'।
नफ़रत की जो खाई खुदी है तुम दोनों के बीच।।

इश्क़ में क्या खोया क्या पाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।
क्यों ये तसव्वुर ज़हन में आया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

हर चेहरे पर चेहरा हो तो कैसे हम यह पहचानें।
कौन है अपना कौन पराया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

क़ब्र में जाकर मिट्टी में मिल जाने वाली मिट्टी को।
यारों ने फिर क्यों नहलाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

तू भी क़ातिल मैं भी क़ातिल मक़तल[1] हम दोनों के दिल।
किसने किसका ख़ून बहाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

फूल खिलाता था जो कल तक आज वो कांटे बोता है।
फ़र्क़ आख़िर यह कैसे आया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

दुनिया भी इक सरमाया[2] है उक़बा[3] भी इक सरमाया।
कौन सा अच्छा है सरमाया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

जब तक सूरज सिर पे नहीं था साथ 'मयंक' ये चलता था।
पांव तले अब क्यों है साया मैं भी सोचूं तू भी सोच।।

1. कत्लगाह, 2. ख़ज़ाना, 3. परलोक।

कह रहे हैं आप कुछ अखबार कुछ।
हैं मगर पेशे नज़र आसार कुछ।।

राज घर का घर में रखना है अगर।
और ऊंची कीजिए दीवार कुछ।।

इसलिए दामन भिगो कर आए हैं।
मिल गए थे राह में गमख़ार कुछ।।

सुन सको तो ऊंचे अवानों सुनो।
कह रही है वक़्त की रफ्तार कुछ।।

सारे टुकड़े ख़ुद ही मत खा जाइए।
इस तरफ भी फेंकिए सरकार कुछ।।

जब वफ़ाओं का सिला बंटने लगा।
ले के कासा आ गए गद्दार कुछ।।

मेरे बारे में 'मयंक' अब जाने क्यूं।
कह रहे हैं यार कुछ अग्यार कुछ।।

हे

खुश अदा की तरह खुश बयां की तरह।
बात कीजे तो उर्दू ज़ुबां की तरह।।

फ़र्श से उठके जो अर्श पर आ गए।
जुल्म ढाने लगे आसमां की तरह।।

आप बीती सुनाता रहा मैं उन्हें।
वह भी सुनते रहे दास्तां की तरह।।

कर रहा था सफ़र मैं तो तन्हा मगर।
फिर भी लूटा गया कारवां की तरह।।

बस उसी शाख़ पर बर्क़े सोज़ा[1] गिरी।
जिस पे डाली गई आशियां की तरह[2]।।

देखकर मुझको नज़रें झुकाना नहीं।
राज़ रखना तो इक राज़दां की तरह।।

बस उसी ने सरे बज़्म रुसवा किया।
जो कि मुझसे मिला राज़दां की तरह।।

मुझको राहें दिखाते रहेंगे 'मयंक'।
उनके नक़्शे क़दम कहकशां की तरह।।

---

1. जलाने वाले, 2. बुनियाद।

इस क़दर उसने किया मुझको तबाह।
उम्र भर करता रहा मैं आह-आह।।

सांस लेना भी यहां जब है गुनाह।
ज़िंदगी कैसे करूं तुझसे निबाह।।

कैसे साबित उसको कातिल मैं करूं।
तोड़ लेता है जो मेरा हर गवाह।।

ढेर पर बारूद के हर मुल्क है।
एक दिन हो जाएगी दुनिया तबाह।।

मौत से बद्तर हुई है ज़िंदगी।
ज़िंदा रहने की मगर फिर भी है चाह।।

दूर हो जाएंगी सारी कुल्फ़तें।
आपकी हो जाए गर मुझ पर निगाह।।

आके बहकावे में उसके ऐ 'मयंक'।
तर्क कर बैठा मैं खुद से रस्मों राह।।

ख़े

दीन की बातें अपनी ज़ुबां से फ़रमाने को शैख़।
रोज़ हमारे घर आते हैं समझाने को शैख़।।

मैख़ाना आबाद रहे तुम मांगो दुआएं ख़ैर।
पानी पी-पी कर मत कोसो मैख़ाने को शैख़।।

मंदिर-मस्जिद दोनों ही हैं उस मालिक का घर।
नज़रे हिक़ारत से मत देखो बुतख़ाने को शैख़।।

जी भर कर भी करना मज़म्मत[1] बादाख़ारी[2] की।
मुंह से लगा कर पहले देखो पैमाने को शैख़।।

ख़ूब है इनकी बादानोशी का अंदाज़ 'मयंक'।
बिंते-अनव[3] से आ जाते हैं टकराने को शैख़।।

---

1. बुराई, 2. शराब पीना, 3. अंगूर की बेटी (शराब)।

फिर गया जब शम्अ की जानिब से परवाने का रुख़।
आइए हम भी बदल लें अपने अफ़साने का रुख़।।

देखना यह है कि क्या-क्या गुल खिलाता है जुनूं।
आज गुलशन की तरफ़ है एक दीवाने का रुख़।।

फिर इधर से होके गुज़रा क्या कोई महमिल[1] नशीं।
इतना दीदाज़ेब क्यों है आज वीराने का रुख़।।

यह मेरी नज़रों का धोखा अलहफ़ीजों[2] अलअमां[3]।
अजनबी सा लग रहा है जाने-पहचाने का रुख़।।

जब से मयख़ाने से वापस आए हैं शेख़े हरम।
बदला-बदला सा नज़र आता है समझाने का रुख़।।

देखकर उस शोख़ की आराइशें[4] हुस्नों जमाल।
फीका-फीका सा लगे है आईना ख़ाने का रुख़।।

इस तरह तामीर कीजे दौरे-हाज़िर[5] में 'मयंक'।
दैरो काबा की तरफ़ हो अपने मयख़ाने का रुख़।।

---

1. परदा, 2. अल्लाह हिफाजत करे, 3. अल्लाह की पनाह, 4. सजावट, 5. आजकल का जमाना।

दाल

हम किसे अपना बनाएं शाम ढल जाने के बाद।
हाले दिल किसको बताएं शाम ढल जाने के बाद।।

क्या करें जब दिल के अरमानों को सुलगाती हैं ये।
उनके कूचे की हवाएं शाम ढल जाने के बाद।।

जब भी मुड़कर देखता हूं कुछ नज़र आता नहीं।
कौन देता है सदाएं शाम ढल जाने के बाद।।

उगते सूरज की इबादत की जिन्होंने उम्रभर।
जश्न वह कैसे मनाएं शाम ढल जाने के बाद।।

बज़्म में वह माहरू[1] जब बेनक़ाब आने को है।
किसलिए दीपक जलाएं शाम ढल जाने के बाद।।

चूमता हूं मैं नए अशआर अपने यूं 'मयंक'।
चूमे ज्यों बच्चों को मांएं शाम ढल जाने के बाद।।

---

1. चांद से चेहरे वाला।

अब न कोई ग़म न ग़फ़लत आप से मिलने के बाद।
है मुसर्रत ही मुसर्रत आप से मिलने के बाद।।

लोग कहते हैं कि आप आए क़यामत आ गई।
अब न आएगी क़यामत आप से मिलने के बाद।।

इस तरफ़ काबा है मेरे उस तरफ़ है बुतकदा।
मैं करूं किसकी इबादत आपसे मिलने के बाद।।

आपसे जो भी मिला वह अहले इज़्ज़त हो गया।
बढ़ गई मेरी भी शोहरत आप से मिलने के बाद।।

पहले मेरी ज़िंदगी पर छाए थे रस्मों रिवाज।
भूल बैठा हर रवायत आप से मिलने के बाद।।

प्यार में रुसवाइयों के मासिवा[1] कुछ भी नहीं।
हर कोई देता हिदायत आपसे मिलने के बाद।।

बदनसीबी का अंधेरा था 'मयंक' अपना वजूद[2]।
बन गई है मेरी क़िस्मत आप से मिलने के बाद।।

---

1. मेरे सिवा, 2. अस्तित्व।

तड़प-तड़प के ही गुज़रेगी ज़िंदगी शायद।
मेरे नसीब में लिक्खी नहीं ख़ुशी शायद।।

सलूक देख के लोगों का ऐसा लगता है।
वफ़ा की रस्म ज़माने से उठ गई शायद।।

ज़माना क्या है ये मैंने समझ लिया लेकिन।
समझ न पाया ज़माना मुझे अभी शायद।।

किये हैं मैंने जो एहसान भूल जाएंगे।
मेरी वफ़ा का सिला देंगे वह यही शायद।।

गुलों के रंगे तबस्सुम से ऐसा लगता है।
उड़ा रहे हैं मेरे ग़म की यह हंसी शायद।।

उदास-उदास जो चेहरे हैं अहले महफ़िल के।
उन्हें भी खलने लगी है मेरी कमी शायद।।

गुनह का लेके सहारा 'मयंक' दुनिया में।
ज़मीर बेच के आया है आदमी शायद।।

ख़ुशियां हुई हैं आम तुझे देखने के बाद।
ग़म मिट गए तमाम तुझे देखने के बाद।।

मैं अपने सुब्हो-शाम तुझे देखने के बाद।
करता हूं तेरे नाम तुझे देखने के बाद।।

कहते हैं जिसको इश्क़ में मेराजे आशिक़ी[1]
पाया है वह मुक़ाम तुझे देखने के बाद।।

है इस तरफ़ जो दैर तो उस सिम्त है हरम।
किसको करूं सलाम तुझे देखने के बाद।।

बाज़ारे इश्क़ में भी मेरे देख आजकल।
लगने लगे हैं दाम तुझे देखने के बाद।।

देखा है और न देखेंगे तुझसा हसीं कहीं।
यह फ़ैसला है आम तुझे देखने के बाद।।

क्या जाने क्यों 'मयंक' का सबकी ज़बान पर।
आने लगा है नाम तुझे देखने के बाद।।

---

1. मुहब्बत की बुलंदी।

आलम वही है एक ज़माने के बावजूद।
आते हैं अब भी याद भुलाने के बावजूद।।

कहता है वह कि मेरे लिए तुमने क्या किया।
उस पर मता-ए-ज़ीस्त[1] लुटाने के बावजूद।।

उलझे हज़ार बार ग़मे ज़िंदगी से हम।
दामन को अपने लाख बचाने के बावजूद।।

घर में हमारे जश्न चराग़ां न हो सका।
हर ताक़ पर चराग़ जलाने के बावजूद।।

यह मश्विरा है मेरा, उसे मत कुरेदिए।
भड़केगी और आग बुझाने के बावजूद।।

बच्चों की तरह ज़िद पे हैं वह भी अड़े हुए।
और मानते नहीं हैं मनाने के बावजूद।।

कहता है 'और और' सरे मयकदा 'मयंक'।
जी भर के अपनी प्यास बुझाने के बावजूद।।

---
1. ज़िंदगी की दौलत।

याद रहते हैं भले इंसान मर जाने के बाद।
फूल देते रहते हैं ख़ुशबू बिखर जाने के बाद।।

इश्क़ की गहराइयों को जानना चाहा बहुत।
डूबने पहुंचा मगर दरिया उतर जाने के बाद।।

आरज़ू जन्नत की लेकर दर बदर भटका किए।
स्वर्ग लेकिन मिल सका बस अपने मर जाने के बाद।।

जाने वालों को भला मैं किसलिए इल्ज़ाम दूं।
कौन वापस लौट पाया है उधर जाने के बाद।।

जो गया शहरे निगारां[1] बस वहीं का हो गया।
लौटकर आया न कोई फिर उधर जाने के बाद।।

नाज़ फ़रमाएंगे वह कुछ और अपने हुस्न पर।
आईना देखेंगे जब गेसू संवर जाने के बाद।।

उम्रभर हंसते रहे जो मेरी वहशत पर 'मयंक'।
रो रहे हैं वह मेरी मय्यत गुज़र जाने के बाद।।

1. हसीनों के शहर में।

ज़ाल

वह मुहब्बत के हों या हों जंग के यारो महाज़।
हमने देखे हैं अनेक रंग के यारो महाज़।।

फ़ितनाकारों के इरादे मिल गए सब ख़ाक में।
संग से तोड़े गए जब संग के यारों महाज़।।

भाई की गर्दन पे भाई ही की शमशीरें[1] तनीं।
क्या करोगे जीतकर इस ढंग के यारो महाज़।।

क्यों तसन्नों[2] के जहां में शोहरतों की चाह में।
खोल के बैठे हो नामो-नंग[3] के यारो महाज़।।

देखिए क्या हश्र हो दोनों हरीफ़ों[4] का 'मयंक'।
अम्न का सरहद पे जब हों जंग के यारों महाज़।।

---

1. तलवारें, 2. बनावट, 3. शोहरत, 4. प्रतिद्वंद्वी।

डाल

उनकी महफ़िल में क़दमबोसा[1] है मक्कारों का झुंड।
मैं इधर तनहां उधर उनके तरफ़दारों का झुंड।।

कूचा-कूचा, गलियों-गलियों इस क़दर बहुतात[2] है।
बिन बुलाए जम्मा हो जाता है फ़नकारों का झुंड।।

गाहे-गाहे[3] लोग जाते हैं हरम में मोहतरम।
मैकदे में तो लगा रहता है मैख़ारों का झुंड।।

हो रही है इनके दम से सुन्नत-ए-आदम अदा।
दीनदारों से तो अच्छा है गुनहगारों का झुंड।।

इसलिए बदनाम होते जा रहे हैं वो 'मयंक'।
चल रहा है साथ उनके इक सियहकारों का झुंड।।

---

1. कदम चूमना, 2. अधिक संख्या में, 3. कभी-कभी।

आ के तोड़ेगी ख़िज़ां रंगीं नज़ारों का घमंड।
चार दिन का है चमन में यह बहारों का घमंड।।

शोरिशें[1] तूफ़ान थोड़ा और बढ़ने दीजिए।
डूब जायेगा किनारों पर किनारों का घमंड।।

यह हक़ीक़त गर्दिशे दौरां को भी मालूम है।
हश्र[2] तक क़ायम रहेगा चांद तारों का घमंड।।

पा के शह शैतानियत की सरहदे कश्मीर पर।
और बढ़ता जा रहा है फ़ितनाकारों का घमंड।।

हो के गुज़रा है इधर से फिर कोई महमिल[3] नशीं।
आसमां छूने लगा फिर रेगज़ारों[4] का घमंड।।

मीरों ग़ालिब तो नहीं हैं फिर भी ऐ हज़रत 'मयंक'।
रख दिया है तोड़कर हमने हज़ारों का घमंड।।

1. शोर, 2. कयामत का दिन, 3. परदा, 4. रेगिस्तान।

रे

जब ख़ूं में रह सके न रवानी तमाम उम्र।
फिर कैसे रह सकेगी जवानी तमाम उम्र।।

दिल का हर एक राज़ निगाहों ने कह दिया।
कैसे छुपेगी दिल की कहानी तमाम उम्र।।

सुनकर मेरी ग़ज़ल को जला है मेरा रक़ीब।
मैंने तो की है शोला बयानी तमाम उम्र।।

मुफ़लिस दहेज का जो न कर पाया इंतिज़ाम।
डोली चढ़ी न बेटी सयानी तमाम उम्र।।

बन के तुम्हारी याद महकती रही सदा।
जूही, चमेली, रात की रानी तमाम उम्र।।

जिसके लिए ये जान और ईमान दे दिए।
उसने ही मेरी क़द्र न जानी तमाम उम्र।।

मैंने 'मयंक' जिसकी हर इक बात मान ली।
उसने ही मेरी बात न मानी तमाम उम्र।।

अश्क आंखों से ढलते रहे रात भर।
ग़म के पर्वत पिघलते रहे रात भर।।

करके वादा कोई सो गया चैन से।
करवटें हम बदलते रहे रात भर।।

रोशनी दे न पाए हमें यह चिराग़।
यूं तो कहने को जलते रहे रात भर।।

हमको पीने को इक भी न क़तरा मिला।
दौर पर दौर चलते रहे रात भर।।

आबरू क्या बचाएंगे गुलशन की वह।
ख़ुद जो कलियां मसलते रहे रात भर।।

चांदनी से वो लिपटे रहे रात भर।
और हम हाथ मलते रहे रात भर।।

हसरतें दिल में घुट-घुट के मरती रहीं।
और जनाज़े निकलते रहे रात भर।।

हिज्र[1] में नींद उनको भी आई नहीं।
छत पै हम भी टहलते रहे रात भर।।

जाने क्यों तीरगी के 'मयंक' अज़दहे[2]।
रोशनी को निगलते रहे रात भर।।

---

1. विछोह, 2. अजगर।

ड़े

पहले अपने आप से लड़।
फिर दुश्मन पर भारी पड़।।

उतना तनावर होगा पेड़।
जितनी गहरी होगी जड़।।

वही कहेगा अच्छा शे'र।
फ़न पर होगी जिसकी पकड़।।

गुलशन गुलशन फूल खिले हैं।
मेरे चमन में क्यों पतझड़।।

दौलत, औरत और ज़मीन।
यह सब हैं झगड़े की जड़।।

छोड़ दे मेरा साथ 'मयंक'।
अब मत मेरे पीछे पड़।।

खुद से पहले नाता तोड़।
फिर तू रब से रिश्ता जोड़।

इक दिन सबको मरना है।
इस सच से मत मुंह को मोड़।।

अबके बहारों ने खूं का।
क़तरा-क़तरा लिया निचोड़।।

हम ही नहीं तनहा मुफ़लिस।
हम जैसे हैं कई करोड़।।

मुस्तक़बिल की फिक्र है लेकिन।
माज़ी से मत हाल[1] को जोड़।।

मुझपे 'मयंक' इलज़ाम न रख।
वरना दूंगा भांडा फोड़।।

1. आज, वर्तमान।

जे

पुरशिसे ग़म को हमारी आएंगे बंदा नवाज़।
और जीने की दुआ दे जाएंगे बंदा नवाज़।।

इस यक़ीं के साथ मैं जाता हूं उनकी बज़्म में।
अपने बन्दे पर करम फ़रमाएंगे बंदा नवाज़।।

ये कहां मुमकिन है हमसे फेर लें अपनी निगाह।
अपने बन्दे को जरूर अपनाएंगे बंदा नवाज़।।

जो भटकते फिर रहे हैं ज़िंदगी की राह में।
राह पर इक दिन उन्हें भी लाएंगे बंदा नवाज़।।

हर्फ़[1] फिर आ जाएगा बंदा नवाज़ी पर 'मयंक'।
हम ग़रीबों को अगर ठुकराएंगे बंदा नवाज़।।

---

1. आंच।

गीत बिना सूना है साज़।
बोलो क्या है इसका राज।।

दुनिया तक क्यों पहुंची बात।
जब तू था मेरा हमराज़।।

जिसका हो अंजाम बुरा।
कौन करे उसका आग़ाज।।

हर मोमिन का फर्ज़ यही है।
पांच वक़्त की पढ़े नमाज़।।

इश्क ने चलकर राहे वफ़ा में।
हुस्न को बख़्शा है एजाज़।।

उनकी बज़्म में लेकर पहुंची।
मुझको तख़ैयुल[1] की परवाज़।।

अपनी ग़ज़ल में लाओ 'मयंक'।
मीरो ग़ालिब के अंदाज़।।

---

1. सोच।

सीन

हो न जिसे चाहत का पास।
कौन करे उस पर विश्वास।।

दूर बहुत है मुझसे लेकिन।
फिर भी रहता है वह पास।।

बेहतर उसका मुस्तक़बिल।
बेहतर जिसका है इतिहास।।

शहर में तरे सब प्यासे हैं।
कौन बुझाए मेरी प्यास।।

सबकी आंखों में आंसू हैं।
चेहरा-चेहरा आज उदास।।

छोड़ दूं कैसे इस दुनिया को।
कैसे ले लूं मैं संन्यास।।

सुनी-सुनाई बातों पर।
करो मयंक न तुम विश्वास।।

ऐसे पल का करो क़यास।
जिसमें न हो कोई भी दास।।

इश्क़ो मुहब्बत प्यार वफ़ा।
कब मुफ़लिस को आते रास।।

आओ मुझसे ले लो सीख।
कहता है सबसे इतिहास।।

जिससे देश की हो पहचान।
पहनेंगे हम वही लिबास।।

भीड़ को देख के लगता है।
महलों से बेहतर बनवास।।

खारे जल का दरिया हूं।
कौन बुझाए मेरी प्यास।।

छत पर देखके उनको 'मयंक'।
चांद का होता है आभास।।

शीन

ज़ख़्मे दिल को क्यों न हो आख़िर नमकदां[1] की तलाश।
दर्द के पहलू किया करते हैं दरमां[2] की तलाश।।

नाखुदा तुझको मुबारक हो ये माहौले सुकूत[3]।
मेरी किश्ती को रहा करती है तूफ़ां की तलाश।।

फिर बहारों ने परिस्तारे[4] जुनूं[5] से छेड़ की।
दश्ते[6] वहशत[7] को है फिर मेरे गरेबां की तलाश।

या खुदा फिर कोई पैदा हो सदाक़त[8] का अमीं[9]।
एक मुद्दत से निगाहों को है इंसां की तलाश।।

मेरी नज़रें ढूंढ़ती हैं इक रुख़े ताबां[10] मगर।
दिल के हर गोशे को है शम ए फ़रोज़ां[11] की तलाश।।

रख सके महफ़ूज़ जो सहने चमन की आबरू।
गुंचा-ओ-गुल को है ऐसे इक निगहबां की तलाश।।

ज़ख़्मे दिल, ज़ख़्मे जिगर से क्या ग़रज़ उनको 'मयंक'।
उनके हर तीरे नज़र को है रगे-जां[12] की तलाश।।

---

1. नमक रखने वाला, 2. दवा, 3. खामोशी, 4. पूजने वाले, 5. पागलपन, 6. जंगल, 7. पागलपन, 8. सच्चाई, 9. संरक्षक, 10. चमकने वाला, 11. भड़कने वाला, 12. ज़िंदगी देने वाली रग।

न होती अगर आपकी यह नवाज़िश।
तो ख़ुशियों की होती कहां हम पे बारिश।।

जो हंस-हंस के सहते हैं जोरो सितम को।
वो अश्कों की करते नहीं हैं नुमाइश।।

ये मिट्टी के घर टूट जाएंगे इक दिन।
चलो हम बनाएं दिलों में रिहाइश।।

अगर पार करनी हैं दुश्वार राहें।
तो पांवों में आने न दो अपने लग़ज़िश।।

बिक़ाऊ हो मुंसिफ़ तो इंसाफ़ मुश्किल।
करें आप कितने भी दावा-ओ-नालिश।।

ज़रा मुस्कुरा कर इधर देख लीजे।
यही इल्तिजा है यही है गुज़ारिश।।

'मयंक' इतना तो मेरे दिल को यक़ीं है।
कि पूरी करेगा कोई मेरी ख़्वाहिश।।

उम्र भर मुझको रही है उस ठिकाने की तलाश।
ख़त्म होती है जहां जाकर दिवाने की तलाश।।

जिसको सुनकर मैं यकीं कर लूं तुम्हारी बात पर।
तुम न कर पाए कभी ऐसे बहाने की तलाश।।

शोला बनकर फूल खिलते हों जहां हर शाख पर।
मैं करूंगा क्यूं वहां पर आशियाने की तलाश।।

जिसका हर लम्हा खुलूसों प्यार से सरशार है।
भूलकर भी मत करो ऐसे ज़माने की तलाश।।

जो जिगर के पार होकर दूर कर दे हर ख़लिश।
क्यूं न हो ज़ख़्मे जिगर को उस निशाने की तलाश।।

जिसको सुन झूम उठें दैर काबा मयकदा।
आइए मिलकर करें ऐसे तराने की तलाश।।

बैठ के जिस पे मिटा दे कोई हर दर्दे सरी।
है मरीज़े इश्क़ को ऐसे सिरहाने की तलाश।।

ऐ 'मयंक' उनके यहां तो ऐश के सामां हैं सब।
और कोई कर रहा है दाने-दाने की तलाश।।

स्वाद

भर के सब उसने दिया जामे ख़ुलूस।
और रंगीं हो गई शामे ख़ुलूस।।

हो जहां मतलब परस्तों का हुजूम।
कौन लेता है वहां नामे ख़ुलूस।।

मुझको देखो मैं हूं इक ज़िंदा मिसाल।
मुझसे वाबस्ता है अंजामे ख़ुलूस।।

ज़िद में आकर कर दिया मुझको तबाह।
और क्या देता वो इनआमे ख़ुलूस।।

आप समझें या न समझें ऐ 'मयंक'।
ज़िंदगी देती है पैग़ामें ख़ुलूस।।

दिल पे गुज़रा है कोई क्या हादसा कल रात ख़ास।
सुब्हे दम ही आ गए जो मुझसे करने बात ख़ास।।

इसलिए बैठा हूं आकर गोश-ए-तन्हाई में।
भेजने वाला है कोई मुझको पैग़ामात ख़ास।।

छेड़ता हूं इसलिए मैं जलवागाहे नाज़ में।
वक़्फ़ है तेरे लिए ही मेरे ये नग़मात ख़ास।।

मुझ से कोसों दूर रहती है बलाएं-नागहां[1]।
रख दिया जब से किसी ने मेरे सिर पर हाथ ख़ास।।

जिसको देखो मुब्तलाए[2] दर्दे दिल है ऐ 'मयंक'।
आम होते जा रहे हैं मेरे ये हालात ख़ास।।

1. अचानक मुसीबत, 2. शामिल।

ज़्वाद

जिससे भी मिलिए वही है ख़ुदग़रज़।
आजकल हर आदमी है ख़ुदग़रज़।।

दूसरों की फ़िक्र किसको है यहां।
मतलबी कोई, कोई है ख़ुदग़रज़।।

ज़िंदगी का उसने कब बदला चलन।
ख़ुदग़रज़ तो आज भी है ख़ुदग़रज़।।

अपने मतलब के लिए जीते हैं सब।
हर किसी की ज़िंदगी है ख़ुदग़रज़।।

हम कहें कैसे किसी से ऐ 'मयंक'।
जो अदा है आपकी, है ख़ुदग़रज़।।

आशिक़ी बेलौस[1], उलफ़त, बेग़रज़।
कौन करता है मुहब्बत बेग़रज़।।

हम हैं क़ायल उनके ही किरदार के।
वह जो करते हैं इनायत बेग़रज़।।

लब पे आता ही नहीं हर्फ़े[2] सवाल।
आदमी वह है निहायत बेग़रज़।।

क्या कहें जब मुद्दआ कोई नहीं।
कर रहे हैं तेरी ख़िदमत बेग़रज़।।

रहमतें उन पर बरसती हैं 'मयंक'।
जो कि करते हैं इबादत बेग़रज़।।

---

1. बगैर मतलब के, 2. शब्द।

तो

कैसे कह दूं मैं बुज़ुर्गों का है फ़रमाना ग़लत।
जो समझकर भी न समझें उनको समझाना ग़लत।।

उस सितमगर की समझ में यह न आएगा कभी।
जो हैं ठुकराए हुए उनको है ठुकराना ग़लत।।

भरके अपने आंसुओं को इशरतों के थाल में।
लेके उनके पास हम पहुंचे हैं नज़राना ग़लत।।

देखना जो चाहते हैं हमको रोते ज़ार-ज़ार।
ऐसे लोगों से बहर सूरत है याराना ग़लत।।

इस क़दर बेगानगी छाई हुई है ऐ 'मयंक'।
लग रहा है मुझको हर इक जाना-पहचाना ग़लत।।

देख ले ऐ आसमां मेरी बिसात[1]।
ले गई मुझको कहां मेरी बिसात।।

क्या है मक़सद पहले ये ज़ाहिर करो।
पूछना फिर तुम मियां मेरी बिसात।।

हो जहां दुश्मन मोहब्बत के वहां।
मैं ज़बां खोलूं, कहां मेरी बिसात।।

ले के मेरा इम्तहाने आशिक़ी।
देखिए ऐ मेहरबां मेरी बिसात।।

जा के मंज़िल पे ही दम लूंगा 'मयंक'।
मैं जवां हूं और जवां मेरी बिसात।।

1. औकात।

ज़ोय

जब तक बालों[1] पर महफ़ूज़।
हम हैं सलामत घर महफ़ूज़।।

सिर को उठाकर चलने वाले।
कितने दिन तक सिर महफ़ूज़।।

बर्फ़ गिरी है ऐवानों[2] पर।
लेकिन है छप्पर महफ़ूज़।।

सूफ़ी हो या शैख़ो बिरहमन।
किसकी है चादर महफ़ूज़।।

घर में 'मयंक' अब जान का ख़तरा।
घर से मगर बाहर महफ़ूज़।।

1. पंख, 2. महल।

शक्ल में गुल की शरारे अलहफ़ीज़।
यह बहारों के नज़ारे अलहफ़ीज।।

बहरे ग़म की उफ़ रे यह गहराइयां।
और उस पर तेज़ धारे अलहफ़ीज़।।

हम बहुत महफ़ूज़ थे मंझधार में।
आ गए बहकर किनारे अलहफ़ीज़।।

जिनका पेशा रहज़नी था कल तलक।
हैं वो अब रहबर हमारे अलहफ़ीज़।।

वह जो बदख़्वाही[1] में माहिर हैं 'मयंक'।
ख़ैरख़्वाह हैं अब हमारे अलहफ़ीज।।

---

1. बुरी इच्छा रखने वाला।

ऐन

आ गई लेने को मर्गे नागहानी[1] अलविदा।
अलविदा ऐ चार दिन की ज़िंदगानी अलविदा।।

उनकी उलफ़त ने मुझे फिर मुस्कुराहट बख़्श दी।
अच्छा अब होठों की मेरे नौहा-ख़्वानी[2] अलविदा।।

हसरतों ने ख़ाना-ए-दिल में मेरे ले ली जगह।
अलविदा उम्मीदे शौक़े शादमानी अलविदा।।

खिल गए होठों पे मेरे फिर तबस्सुम के गुलाब।
अलविदा ऐ मेरे अश्कों की रवानी अलविदा।।

अब कहां हैं पहले जैसे इश्क़ के जलवे 'मयंक'।
अलविदा ऐ शोरिशे[3] दौरे जवानी अलविदा।।

---

1. अचानक मौत, 2. मरसिया पढ़ने वाला, 3. शोरगुल।

ग़म का यूं करती रही इज़हार परवाने से शम्म।
रात भर रोई लिपटकर अपने दीवाने से शम्म।।

गर मिटानी है तुम्हें सहने हरम की तीरगी।
जाके ऐ शेख़े हरम ले आओ बुतख़ाने से शम्म।।

डर है मुझको जल न जाए ख़ारो ख़स का आशियां।
दूर रखता हूं इसी बाइस मै काशाने से शम्म।।

अपना चेहरा भी मुझे अब तो नज़र आता नहीं।
ले गया कोई उठाकर आईनाख़ाने से शम्म।।

पूछिए मत आरिज़े तांबां की ताबांनी मयंक।
हो गई बेनूर उसके बज़्म में आने से शम्म।।

ग़ैन

जिस घड़ी जल जाएंगे दिल के चिराग़।
ख़ुद-ब-ख़ुद हो जाएंगे रोशन दिमाग़।।

आएगा गुलशन में जब जाने बहार।
दिल चमन का हो उठेगा बाग़-बाग़।।

मसलहत[1] उसकी है क्या जाने वही।
दे दिया इंसां को जो रब ने दिमाग़।।

क्या पता उसका बताएं हम तुम्हें।
अपना जब मिलता नहीं हमको सुराग़।।

शामे ग़म मेरी चराग़ां हो गई।
जल रहे हैं मेरी पलकों पर चराग़।।

हंस रहे हैं क्यों गुनाहों पर मेरे।
वह कि जिनका भी है दामन दाग़-दाग़।।

मोतक़िद हम तो सभी के हैं 'मयंक'।
'मीर' हों, 'मोमिन' हों 'ग़ालिब' हों कि 'दाग़'।।

---

1. नीयत-चाहत।

तुम बुझा दो नफ़रतों का हर चराग़।
फूंक देंगे वरना सारा घर चराग़।।

पहले घर के ताक़ पर रक्खो दिया।
फ़िर जलाओ तुम मज़ारों पर चराग़।।

गर न उठें नफ़रतों की आंधियां।
होंगे रौशन प्यार के घर-घर चराग़।।

देखने में नूर का पैकर तो है।
ज़हनियत के हैं मगर कमतर चराग़।।

कैसे समझाएं नई तहज़ीब को।
क़ुमक़ुमों से लाख हैं बेहतर चराग़।।

मानते हैं वक़्त है शब का 'मयंक'।
हम जलाते हैं मगर दिनभर चराग़।।

फ़े

है रक़ीबों का जहां मेरे खिलाफ़।
तुम न होना मेहरबां मेरे खिलाफ़।।

रच रहे हैं साज़िशों पर साज़िशें।
ये ज़मीनो-आसमां मेरे खिलाफ़।।

जिनके मुंह में डाल दी मैंने ज़बां।
वो ही खोलेंगे ज़बां मेरे खिलाफ़।।

अलमदद ऐ मालिके कौनों मकां।
हो गया है इक जहां मेरे ख़िलाफ़।।

रोज़े महशर सच बताओ ऐ 'मयंक'।
तुम भी दोगे क्या बयां मेरे ख़िलाफ़।।

देख लेंगे आप अगर मेरी तरफ़।
होगी फिर सबकी नज़र मेरी तरफ़।।

अंजुमन में आपने क्या कह दिया।
देखता है हर बशर मेरी तरफ़।।

अज़मतें क्यों कर न चूमेंगी क़दम।
हैं सभी अहले हुनर मेरी तरफ़।।

उसकी जानिब देखती हैं मंज़िलें।
और यह गर्दे सफ़र मेरी तरफ़।।

हैं मुख़ातिब दूसरों से बज़्म में।
देखते हैं वह मगर मेरी तरफ़।।

मैंने भी सींचा है ख़ूं से गुलसितां।
फेंकिए कुछ तो समर मेरी तरफ़।।

क्यों करूं मैं फ़िक्रे मुस्तक़बिल 'मयंक'।
आप आ जाएं अगर मेरी तरफ़।।

क़ाफ़

शौक़ में यह शौक़ की हद से गुज़र जाने का शौक़।
दरहक़ीक़त शौक़ है यह एक दीवाने का शौक़।।

हो गई बाज़ार में रुसवाइयों की इंतिहा।
आप अब तो छोड़ दीजे उनके घर जाने का शौक़।।

नाम पर मेहरो वफ़ा के रात भर जलते रहे।
कितना इबरत ख़ेज़ है यह शम्अ परवाने का शौक़।।

वह कशिश दे दी है तूने ज़िंदगी को ऐ ख़ुदा।
छोड़कर दुनिया को तेरी किसको है जाने का शौक़।।

जो बशर चेहरे के दाग़ों से रहा नाआशना।
क्या करेगा पालकर वह आईनाख़ाने का शौक़।।

कमसिनी में प्यार के चक्कर में मत पड़िए 'मयंक'।
आप तो फ़रमाइए बस खेलने खाने का शौक़।।

जिनसे मिलने का है मुझको इश्तियाक़[1]।
क्यों उड़ाते हैं वही मेरा मज़ाक़।।

आइए और मेरे दिल से पूछिए।
कट रही है किस तरह शामें फ़िराक़।।

जल उठीं यादों की शम्में जल उठीं।
हो गए फिर घर के रौशन ताक़-ताक़।।

वो मिले क़सदन सरे रह या कि फिर।
ये मोहब्बत है कि हुस्ने इत्तफ़ाक़।।

ख़ानों-ख़ानों में बंटी अंगनाइयां।
मेरे घरवालों का उफ़ रे ये निफ़ाक़[2]।।

मेरे दामन पर गिराकर अश्क़े ग़म।
मत उड़ा ए चश्में नम मेरा मज़ाक़।।

मुझको दीवाना समझकर ए 'मयंक'।
आप भी मेरा उड़ाते हैं मज़ाक़।।

---

1. शौक, 2. अनबन।

क़ाफ़

छाई हुई है गर्दे सफ़र दूर-दूर तक।
आता नहीं है कुछ भी नज़र दूर-दूर तक।।

उनके यहां तो जश्ने चराग़ां है चार सू।
जलते नहीं चिराग़ इधर दूर-दूर तक।।

राही को तपती धूप में राहत जो दे सके।
ऐसा नहीं है कोई शजर दूर-दूर तक।।

टपकाता कौन गुज़रा है आंखों से ख़ूने दिल।
बिखरे हुए हैं लाल-ओ-गुहर दूर-दूर तक।।

आने को इक मुक़ाम पे आते हैं ज़लज़ले।
होता मगर है इनका असर दूर-दूर तक।।

आंगन जो बांटना हो तो चुपचाप बांट लो।
पहुंचेगी वरना इसकी ख़बर दूर-दूर तक।।

तामीर का ये दौर है, हम कैसे मान लें।
पेशे नज़र हैं जबकि खंडर दूर-दूर तक।।

इस ज़ाविए से उगता है सूरज भी आजकल।
दिखता नहीं है नूरे सहर दूर-दूर तक।।

जीने की जिसको कोई भी ख़्वाहिश न हो 'मयंक'।
ऐसा नहीं है कोई बशर दूर-दूर तक।।

उठाएं जुल्म कब तक और झेलें सख़्तियां कब तक।
लबों पर दोस्तो ! मजबूर के ख़ामोशियां कब तक।।

ज़माना पेट भरने के लिए क्या-क्या नहीं करता।
इसे नाकों चने चबवाएंगी ये रोटियां कब तक।।

तेरे बंदे टके के भाव में नीलाम होते हैं।
बता इंसां के जिस्मों की लगेंगी बोलियां कब तक।।

चलेंगे कब तलक मुफ़लिस के अरमानों पे बुलडोज़र।
कि महलों के लिए कुर्बान होंगी खोलियां कब तक।।

सरे बाज़ार यूं कब तक बिकेंगे ये जवां लड़के।
सुहागन डोलियां बनती रहेंगी अर्थियां कब तक।।

बढ़ो और सीना-ए-दुश्मन में बढ़कर घोंप दो ख़ंजर।
यूं ही पहने हुए बैठे रहोगे चूड़ियां कब तक।।

यहां दैरो हरम के नाम पर नफ़रत के शोलों को।
हवा देती रहेंगी दोस्तो ये कुर्सियां कब तक।।

नहीं जिनको मयस्सर सिर छुपाने के लिए छप्पर।
खड़ी करते रहेंगे दूसरों की कोठियां कब तक।।

उठो और उठके बतला दो ज़रा औक़ात तुम अपनी।
'मयंक' इस दौर की सुनते रहोगे घुड़कियां कब तक।।

लगेगी न फिर मुझको ग़म की हवा तक।
सदा मेरी पहुंचेगी जिस दिन ख़ुदा तक।।

सफ़र ही सफ़र रोज़े अव्वल से फिर भी
न पहुंचा कोई मंज़िले-इंतहा तक।।

ज़माने की राहो रवी धीरे-धीरे।
वफ़ा से चली और पहुंची जफ़ा तक।।

चलो आपकी अपनी मजबूरियां थीं।
अयादत को मेरी न आई कज़ा तक।।

ज़माने की कंजूसियां तौबा-तौबा।
हुआ क्या, न देता, कोई बद्दुआ तक।।

मुहब्बत का जब गर्म बाज़ार देखा।
चली आई बिकने को शर्मोहया तक।।

हमें अपने दम पर ही जीना पड़ेगा।
न जीने का देगा कोई हौसला तक।।

मज़ा ज़िंदगी का जो लेना है जाहिदा।
चलो साथ मेरे मगर मैकदा तक।।

बुलाना तो घर है बड़ी बात साहिब।
न देगा 'मंयक' अपने घर का पता तक।।

गाफ़

आईना दिखलाएं तो हमसे बिगड़ जाते हैं लोग।
हाथ धोकर फिर हमारे पीछे पड़ जाते हैं लोग।।

ज़िंदगानी का सफ़र भी किस क़दर दिलदोज़[1] है।
राह में मिलते हैं और मिलकर बिछड़ जाते हैं लोग।।

अलअमां[2] शेख़ों बरहमन की नवाज़िश अलअमां।
इक ज़रा सी बात पर आपस में लड़ जाते हैं लोग।।

जो न समझाने से समझें कौन समझाए उन्हें।
आदतन भी अपनी-अपनी ज़िद पर अड़ जाते हैं लोग।।

यह ज़रूरी तो नहीं हों ज़ुल्फ़े जानां के असीर।
खुद लगाई बंदिशों में, भी जकड़ जाते हैं लोग।।

नफ़रतों की आंधियां को हम कहें तो क्या कहें।
ऐ मुहब्बत तेरे चलते भी उजड़ जाते हैं लोग।।

क्या करूं मजबूर हूं मैं अपनी आदत से 'मयंक'।
नुक़्ताचीनी पर मेरी अक़्सर उखड़ जाते हैं लोग।।

---

1. दिल दुखाने वाली, 2. अल्लाह की पनाह।

हो गया है मुझसे हर इक जाना-पहचाना अलग।
देखकर हालत मेरी तुम भी न हो जाना अलग।।

शम्अ से जब रह नहीं सकता है परवाना अलग।
कैसे रह सकता है तुझसे तेरा दीवाना अलग।

इस क़दर वीरानगी है मयकदे में इन दिनों।
जाम से मीना अलग है खुम[1] से पैमाना अलग।।

आप इन महलों को लेकर जाएंगे आख़िर कहां।
हम बना लेंगे चमन में अपना काशाना[2] अलग।।

यूं तो वाबस्ता हैं दोनों ज़िंदगानी से मगर।
उनका अफ़साना अलग है मेरा अफ़साना अलग।।

मैं पिया करता हूं अक़सर चश्मे साक़ी से शराब।
और रिंदों से है मेरा ज़ौक़े रिंदाना अलग।।

एक रब्ते ख़ास है पीरे-मुग़ां[3] से ऐ 'मयंक'।
हम बना सकते हैं वरना अपना मयख़ाना अलग।।

---

1. मटका, 2. घर, 3. शराब बांटने वाला बुजुर्ग।

तारीकियों से ख़ौफ़ सा खाने लगे हैं लोग।
दिन में भी अब चिराग़ जलाने लगे हैं लोग।।

यह दौरे इरतिक़ा[1] भी तंज़्ज़ुल[2] से कम नहीं।
तहज़ीब का मज़ाक़ उड़ाने लगे हैं लोग।।

इंसानियत का जिन में कोई शाएबा[3] न था।
तुरबत पे उनकी फूल चढ़ाने लगे हैं लोग।।

हर सम्त ख़लफ़शार[4] है, हर सम्त है फ़साद।
अपने लहू में खुद ही नहाने लगे हैं लोग।

गुज़री हुई रुतों की सुनाकर कहानियां।
कुछ और दिल का दर्द बढ़ाने लगे हैं लोग।।

औरों के घर जला के सियासत के नाम पर।
तारीकियों[5] को, घर की, मिटाने लगे हैं लोग।।

इज़हारे शौक़ उनसे करूं किस तरह 'मयंक'।
अंजामे आशिक़ी से डराने लगे हैं लोग।।

---

1. तरक्की, 2. बरबादी, 3. अक्स, 4. बेइंतजामी, 5. अंधेरों।

शहरों-शहरों ख़ौफ़ का आलम घबराए-घबराए लोग।
अम्न के लम्हे ढूंढ रहे हैं सदियों के ठुकराए लोग।।

लौटे हैं एहसास की किरचें लेकर अपने दामन में।
जब-जब शीशे का दिल लेकर पत्थर से टकराये लोग।

सबको पता है बाढ़ आएगी घर भी यक़ीनन डूबेंगे।
फिर भी साहिल पर बैठे हैं बस्ती नई बसाए लोग।।

जाने क्यों है ऐसा आलम, ज़िंदा दिलों की बस्ती में।
अपने कांधों पर फिरते हैं अपनी लाश उठाए लोग।।

रोज़े-अज़ल[1] से रोज़े-अबद[2] तक जिसका सानी कोई नहीं।
ढूंढ रहे हैं उस हस्ती का साया कुछ पगलाए लोग।।

आग की लपेटों में तो पहले जश्न मनाया होली का।
घर-आंगन जब ख़ाक हुआ तो पानी लेकर, आए लोग।।

ज़िंदा लोगों को नहीं हासिल, चाहत की इक किरन 'मयंक'।
लेकिन क़ब्रों पर बैठे हैं प्यार के दीप जलाए लोग।।

---

1. दुनिया की शुरुआत का दिन, 2. दुनिया की समाप्ति का दिन।

लाम

तर्जुमाने ज़िंदगानी है ग़ज़ल।
आपकी मेरी कहानी है ग़ज़ल।।

जिसकी ख़ुश्बू से मुअत्तर है अदब।
वह महकती रात रानी है ग़ज़ल।।

ग़म की चादर ओढ़कर बैठे हैं जो।
उनको ख़ुशियों की सुनानी है ग़ज़ल।।

जो न रख पाएं ग़ज़ल की आबरू।
ऐसे लोगों से बचानी है ग़ज़ल।।

यूं तो दिलकश है हर इक सिनफ़े सुख़न।
फ़िक्रोफ़न की राजरानी है ग़ज़ल।।

'मीर', 'मोमिन', 'ग़ालिब'-ओ-'फ़ैज'-ओ 'फ़िराक़'।
इनके फ़न से जावदानी है ग़ज़ल।।

जो 'मयंक' अब साहबे दीवान है।
उसकी शोहरत की निशानी है ग़ज़ल।।

मेरे हमनशीं मेरे हमनवा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।
तुझे दोस्ती का है वास्ता मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

कहीं फ़ितनाकारों की धूम है कहीं रहज़नों का हुजूम है।
ये नया-नया सा है रास्ता मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

रहे आशिक़ी से हूं बेख़बर कहां ज़ेर है कहां है ज़बर।
है मेरे सफ़र की ये इब्तिदा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

न तो राह रौ कोई राह में न तो मंज़िलें हैं निगाह में।
न तो राह में कोई नक़्शे पा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

मैं क़दम न पीछे हटाऊंगा, मुझे ज़िद है बढ़ता ही जाऊंगा।
मुझे छोड़ दे सरे राह या मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

न किसी को चलने का शौक़ है न वो जोश है न वो ज़ौक़ है।
मैं करूं तो किससे ये इल्तिजा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

कोई ख़िज़्र[1] रह नहीं राह में मैं चलूं तो किसकी पनाह में।
तू ही बन के अब मेरा रहनुमा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

तुझे लेके पहुंचूंगा मैं वहां, जहां अम्न है जहां है अमां।
कोई कह रहा है ये बारहा मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

हो ख़ुशी का जादा[2] कि राहे ग़म मेरा साथ दे तू बहर क़दम।
मुझे छोड़कर न 'मयंक' जा, मेरे साथ चल मेरे साथ चल।।

1. रास्ता दिखाने वाला, 2. रास्ता।

मीम

राह के पत्थर को ठोकर से हटा देते हैं हम।
जब कोई हद से गुज़रता है सज़ा देते हैं हम।।

तंग आकर मौत को भी ख़ुदकुशी करनी पड़े।
लीजिए हालात ही ऐसे बना देते हैं हम।।

ऐ बुते काफ़िर इसी में है अगर तेरी ख़ुशी।
ले तेरे क़दमों पे सिर अपना झुका देते हैं हम।।

आंख में आंसू हैं फिर भी ऐ अनीसे[1] ज़िंदगी।
दिल तेरा रखने की ख़ातिर मुस्कुरा देते हैं हम।।

शम्अ रोती है जलाकर जिनको अपनी बज़्म में।
उन पतंगों को मगर दादे-वफ़ा[2] देते हैं हम।।

शायरी क्या चीज़ है जो यह समझते ही नहीं।
ऐसे ना-अहलों[3] को महफ़िल से उठा देते हैं हम।।

देखते हैं रश्क से हमको फ़रिश्ते भी 'मयंक'।
जब ख़ुलूसे दिल से दुश्मन को दुआ देते हैं हम।।

---

1. दोस्त, 2. तारीफ, 3. नाक़ाबिल।

शम्अ ने जांबाज़ रक्खा अपने परवाने का नाम।
आप भी रख दीजिए कुछ अपने दीवाने का नाम।।

बस अभी आए सभी लेने लगे जाने का नाम।
तुमको जाना था तो क्यों तुमने लिया आने का नाम।।

हम गदाओं[1] को भी अपनी ग़ैरतों[2] का पास[3] है।
क्यों किसी के सामने लें हाथ फैलाने का नाम।।

बाद मरने के रसाई[4] है जमाले-यार[5] तक।
ज़िंदगी है इश्क़ में हद से गुज़र जाने का नाम।।

रहती दुनिया तक ज़माना जिसको दुहराता रहे।
इस क़दर दिलचस्प रख दो मेरे अफ़साने का नाम।।

मस्त आंखों से वो अपनी जाम छलकाते रहे।
किस तरह लेता कोई फिर होश में आने का नाम।।

पी के नज़रों से अगर सरशार[6] हो जाते 'मयंक'।
फिर न लेते हम कभी भूले से पयमाने का नाम।।

---

1. भीख मांगने वाला, 2. आत्मसम्मान, 3. ख़्याल, 4. पहुंच, 5. यार की खूबसूरती, 6. भरा हुआ।

पत्थर को अगर कहिए भगवान बना दें हम।
हैवां को मगर कैसे इंसान बना दें हम।।

जम्हूर की ताक़त का अंदाज़ा नहीं तुमको।
जब चाहें गदाओं[1] को सुलतान बना दें हम।।

ख़ूं दे के शहीदों ने सींचा है चमन अपना।
किस दिल से इसे यारो वीरान बना दें हम।।

तरकीब कोई ऐसी ऐ काश निकल आए।
जिससे कि मुहब्बत को ईमान बना दें हम।।

हल करके हर इक मुश्किल, मुश्किल के असीरों की।
आसानी से जीने का सामान बना दें हम।।

इस दौरे कशाकश का इतना ही तक़ाज़ा है।
मिल-जुल के हर इक मुश्किल आसान बना दें हम।।

तौफ़ीक़ खुदा दे तो दीवां[2] को 'मयंक' अपने।
अशआर के फूलों का गुलदान बना दें हम।।

---

1. मांगने वाली, 2. दीवान।

छोड़कर ऐसा अपना असर जाएं हम।
रोए दुनिया हमें जब गुज़र जाएं हम।।

काम ऐसा कोई भी न कर जाएं हम।
लोग उंगली उठाएं जिधर जाएं हम।।

हम ही हम आयें तुमको नज़र हर तरफ़।
टूटकर इस तरह कुछ बिखर जाएं हम।।

कोशिशें कर रहे हैं यही रात-दिन।
खाइयां बुग्ज़ों[1] नफ़रत की भर जाएं हम।।

तज़किरा हर ज़बां पर हमारा रहे।
अपनी कोशिश है वह काम कर जाएं हम।।

यह मुहब्बत में बिलकुल मुनासिब नहीं।
उठके महफ़िल से तश्ना-नज़र[2] जाएं हम।।

कोई मुश्किल नहीं है संवरना 'मयंक'।
वह संवारे अगर तो संवर जाएं हम।।

---

1. जलन, 2. प्यासी नज़र।

तुमको भी जब मिलेगा ख़ुशी की बजाय ग़म।
तुम भी करोगे मेरी तरह हाय-हाय ग़म।।

चेहरे पे जब लगाता हूं सेहरा ख़ुशी का मैं।
ताने कसे कभी तो कभी मुंह चिढ़ाएं ग़म।।

बेचैन मुझको देख के पाएं सुकूने दिल।
मैं मुस्कराऊं जब भी तो आंसू बहाए ग़म।

फिर भी न तूने साथ दिया मेरा ज़िंदगी।
क्या-क्या न तेरे नाम पे हमने उठाए ग़म।।

पहलू में लेके बैठे ख़ुशी को ख़ुशी से आप।
बैठे हैं हम भी सीने से अपने लगाए ग़म।।

लाएंगे लब पे हर्फ़े शिकायत कभी नहीं।
देखेंगे हम ख़ुशी से हमें जो दिखाए ग़म।।

रहती है इस फिराक़ में ये ज़िंदगी 'मयंक'।
मैं ग़म को भूल जाऊं मुझे भूल जाए ग़म।।

नून

ढूंढ के लाओ वह इंसान।
मुर्दे में जो डाले जान।।

आओ चलें उस रस्ते से।
जिससे गुज़रे लोग महान।।

हिंदू मुस्लिम हों या सिक्ख।
सबका लहू है एक समान।।

अपनों पर जो करते हैं।
मत कहिए उसको एहसान।।

अगले पल की नहीं ख़बर।
लेकिन बरसों का सामान।।

देता है पैग़ामे मुहब्बत।
मेरा धर्म तिरा ईमान।।

ढूंढो चाहे जितना 'मयंक'।
मिलना मुश्किल है इंसान।।

दोस्त कहके हमने जिसको भी पुकारा है मियां।
बस उसी ने पीठ में ख़ंजर उतारा है मियां।।

वह वतन पर मिट गए और यह मिटा देंगे वतन।
जानते हो किस तरफ़ मेरा इशारा है मियां।।

दूर तक पानी ही पानी है मगर प्यासे हैं लोग।
ज़िंदगी खारे समुंदर का नज़ारा है मियां।।

वह फ़क़त दो गज़ ज़मीं में क़ैद होकर रह गया।
जो ये कहता था कि ये सब कुछ हमारा है मियां।।

लालची मां-बाप से वह कब बग़ावत कर सका।
बस इसी ख़ातिर तो वह अब तक कुंआरा है मियां।।

जो मनाए खुल के खुशियां दुश्मनों की जीत पर।
वह हमारा हो के भी दुश्मन हमारा है मियां।।

दूर कितनी भी हो मंज़िल तुमको जाना है 'मयंक'।
फिर किसी ने प्यार से तुमको पुकारा है मियां।।

सितम तोड़े हैं क्या-क्या यह सितमगर भूल जाते हैं।
रगे जां के क़रीं[1] रख कर वो नश्तर भूल जाते हैं।।

किए थे अहदो-पैमां[2] जो शुरू एक इश्क़ में हम से।
दिलाएं याद क्या उनको जो अक़सर भूल जाते हैं।।

शिकायत मैं करूं तो क्या करूं इस ख़ुश्क मौसम से।
बरसने वाले बादल भी मेरा घर भूल जाते हैं।

ये उनका ज़हन है कैसा ये उनकी याद है कैसी।
बनाया उनको रहबर किसने रहबर भूल जाते हैं।।

निगाहों में मेरी ताज़ीम[3] के क़ाबिल वही हैं जो।
चलाए उन पे किसने कितने पत्थर भूल जाते हैं।।

मुख़ातिब मुस्कुराकर जब कोई होता है महफ़िल में।
कसे हैं कितने ताने उसने हम पर भूल जाते हैं।।

दिले-मुज़्तर[4] को तेरी याद आने ही नहीं देते।
हमेशा पी के हम दो-चार साग़र भूल जाते हैं।।

शिकायत मत करो उनसे कोई वादा ख़िलाफ़ी की।
अरे यह भूलने वाले हैं अक़सर भूल जाते हैं।।

खनक सिक्के की पड़ती है 'मयंक' उनके जो कानों में।
सुख़न का क्या तक़ाज़ा है सुख़नवर भूल जाते हैं।।

---

1. पास, 2. वादा, 3. इज्ज़त, 4. बेचैन दिल।

मैंने कहा कि आइए, कहने लगे अभी नहीं।
आकर गले लगाइए, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि कीजिए, जो भी हुआ वो दरगुज़र।
शिकवे-गिले मिटाइए, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा उदासियां चारों तरफ़ हैं ख़ेमा ज़न।
थोड़ा सा मुस्कुराइए, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि चार सू छाई हुई है तीरगी।
रुख़ से नकाब उठाइए, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि तोड़िए शर्मो-हया की बंदिशें।
मुझसे नज़र मिलाइए, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा कि हूं अगर हर्फ़े ग़लत की तरह मैं।
मेरा निशां मिटाइये, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा पड़ा हूं मैं मुद्दत से दर पे आपके।
बिगड़ी मेरी बनाइए, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा बुझा सके जिसको न तेज़ तर हवा।
ऐसा दिया जलाइए, कहने लगे अभी नहीं।।

मैंने कहा 'मयंक' को देंगे सिला वफ़ाओं का।
इसका यक़ीं दिलाइए, कहने लगे अभी नहीं।।

छोड़ के मंदिर मस्जिद आओ वापस दुनियादारी में।
घर बैठे ही चैन मिलेगा बच्चों की क़िलकारी में।।

कैसे करें इज़हारे मुहब्बत दोनों हैं दुश्वारी में।
हम अपनी हुशियारी में हैं वह अपनी हुशियारी में।।

अच्छे दिनों में सब थे साथी, सबसे था याराना भी।
लेकिन मेरे काम न आया कोई भी दुश्वारी में।।

शहर में अपने प्रदूषण का यह आलम तौबा-तौबा।
बिक गया घर का सारा असासा[1] बच्चों की बीमारी में।।

पीने वालों की बातों को पीने वाला समझेगा।
तुमको क्या बतलाएं ज़ाहिद[2] लुत्फ़ है क्या मयख़्वारी[3] में।।

आपकी चाहत के मैं सदक़े ऐसी बहारें आई हैं।
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं जीवन की फुलवारी में।।

हिर्सो हवस[4] की इस दुनिया में यह भी कम तो नहीं 'मयंक'।
उम्र हमारी जो गुज़री है गुज़री है ख़ुद्दारी में।।

---

1. दौलत, 2. परहेजगार, 3. शराब पीना, 4. लालच।

बावफ़ा सिर्फ़ दो-चार हैं।
वरना मतलब के सब यार हैं।।

वह फ़रिश्ते हों या आदमी।
आपके सब तलबगार हैं।।

इब्ने आदम हैं इस वास्ते।
फ़ितरतन हम गुनहगार हैं।।

शहरे ख़ूबां[1] के बाज़ार में।
हम तो बिकने को तैयार हैं।।

उन पे पत्थर चलाते हैं लोग।
क़ैस के जो परस्तार हैं।।

बख़्श दें या सज़ा दें हमें।
आप मुंसिफ़ हैं मुख़्तार हैं।।

भूख से लड़खड़ाते हैं हम।
लोग कहते हैं मयख़्वार हैं।।

यह जहां एक स्टेज है।
और हम सब अदाकार है।।

ज़िंदगी के चमन में 'मयंक'।
हर तरफ़ ख़ार ही ख़ार है।।

---

1. खूबसूरत।

चलन से इनकिसारी के न कोसों दूर हो जाऊं।
करो तारीफ़ मत इतनी कि मैं, मग़रूर हो जाऊं।।

मेरी राहों में दुनिया इसलिए पत्थर बिछाती है।
कि खाऊं ठोकरें इतनी कि मैं, माजूर हो जाऊं।।

कशिश वह चाहिए मुझको किसी के हुस्ने रंगीं की।
कि बज़्में नाज़ में जाने को मैं मजबूर हो जाऊं।।

खुदारा बख़्श दी जे वह तिलिस्में[1] आशिकी मुझको।
कभी गुमनाम हो जाऊं कभी मशहूर हो जाऊं।।

शुआएं[2] घेर लें मुझको जो तेरे रू ए ताबां[3] की।
तेरे जलवों में ज़म[4] होकर सरापा नूर हो जाऊं।।

कहे इससे ज़ियादा और क्या आईना हस्ती का।
न ठुकरा इस क़दर मुझको कि चकनाचूर हो जाऊं।।

यही तो चाहते हैं ऐ 'मयंक' इस दौर के रहबर।
कि अपनी मंज़िलें मक़सूद से मैं दूर हो जाऊं।।

---

1. जादूई, 2. किरणें, 3. चमक, 4. घुल-मिलकर।

ये लाज़िम तो नहीं है साहिबें ईमान हो जाएं।
मगर इतना ज़रूरी है कि हम इंसान हो जाएं।।

गुनाहों के उभर आए हैं इतने दाग़ चेहरे पर।
अगर अब आईना देखें तो हम हैरान हो जाएं।।

खड़े हैं इसलिए दर पर तेरे सफ़[1] में गदाओं[2] की।
हमारे हाल पर भी कुछ तेरे एहसान हो जाएं।।

यक़ीनन बेमज़ा हो जाएगी फिर ज़िंदगी उसकी।
अगर इंसान के पूरे सभी अरमान हो जाएं।।

सुलझ जाएं किसी सूरत जो उसके गेसुए पेचां।
तो सारे ज़िंदगी के मरहले[3] आसान हो जाएं।।

दिलों में जो उतर जाए वही इक शे'र काफ़ी है।
ज़रूरी तो नहीं हम साहिबे-दीवान हो जाएं।।

बताए क्या कोई जाकर उन्हें फिर मुद्दआ दिल का।
जो सब कुछ जान कर भी ऐ 'मयंक' अन्जान हो जाएं।।

---

1. क़तार, 2. मांगने वाले, 3. मुश्किलें।

पहले जो बात थी वो आज नहीं।
क़ाबिले ज़िक्र यह समाज नहीं।।

सोच अपनी है फ़िक्र अपनी है।
ज़हनोंदिल पर किसी का राज नहीं।।

हाथ किससे मिलाए अब कोई।
दोस्ती का यहां रिवाज नहीं।।

तख़्त अपना है ताज अपना है।
हमको हासिल मगर स्वराज नहीं।।

यह मरज़ जान लेके जाएगा।
मौत का कोई भी इलाज नहीं।।

वो उगाते हैं फ़सल पर फ़सलें।
उनके घर में मगर अनाज नहीं।।

पहले जैसे नहीं है अब तेवर।
हुस्न वालों का वह मिज़ाज नहीं।।

ज़िंदगी है तो जी रहे हैं 'मयंक'।
जीने लायक मगर समाज नहीं।।

कहती हैं कारगिल की शिलाएं।
धन्य हैं ये शहीदों की मांएं।।

चल के फिर बर्फ़ की वादियों में।
ख़ूं से दुश्मन के शोले बुझाएं।।

जंग में कौन जीतेगा हम से।
ले के आए हैं मां की दुआएं।।

फिर हमें मात देने की सोचें।
वह वज़ीर अपना पहले बचाएं।।

जो कि क़ुर्बां हुए सरहदों पर।
क़र्ज़ कैसे हम उनका चुकाएं।।

दे रही हैं पयामे शहादत।
यह हिमाला से आती हवाएं।।

पाक के रहनुमाओं से कह दो।
फ़ितनाकारी से अब बाज़ आएं।।

जिसकी कश्मीर पर हों निगाहें।
दोस्ती उससे कैसे निभाएं।।

है 'मयंक' अपनी बस यह तमन्ना।
वक़्त पर देश के काम आएं।।

बारे ग़म हंसकर उठाना चाहता हूं।
ज़िंदगी को मुंह दिखाना चाहता हूं।।

जिस्म पत्थर का मगर दिल मोम का हो।
एक बुत ऐसा बनाना चाहता हूं।।

इसलिए आया हूं बज़्में नाज़ में मैं।
आपको सुनना-सुनाना चाहता हूं।।

दिन गुज़रता है कहीं मेरा, कहीं शब।
मुस्तक़िल कोई ठिकाना चाहता हूं।।

ज़ायक़ा ग़म का बदलने के लिए मैं।
दो घड़ी अब मुस्कुराना चाहता हूं।।

अपनी नज़रों से गिराया जिसने मुझको।
उसको पलकों पर बिठाना चाहता हूं।।

जो मुक़द्दर में नहीं लिक्खा है उसने।
मैं 'मयंक' उसको ही पाना चाहता हूं।।

मुफ़लिसों से सवाल करते हैं।
पैसे वाले कमाल करते हैं।।

ज़िंदगी दी हुई ख़ुदा की है।
इसलिए देखभाल करते हैं।।

मरने वाले तो मर गए लेकिन।
जीने वाले कमाल करते हैं।।

गौहरे अश्क भर के दामन में।
ख़ुद को हम मालामाल करते हैं।।

दिल था जिसका वो ले गया उसको।
बेसबब हम मलाल करते हैं।।

उनके तेवर अरे मआज़-अल्लाह[1]।
जब भी हम अर्ज़े हाल करते हैं।।

मस्त रहते हैं अपनी धुन में 'मयंक'।
फ़िक्रे माज़ी न हाल[2] करते हैं।।

---

1. अल्लाह की पनाह, 2. वर्तमान।

दिल में मिरे अरमान बहुत हैं।
घर छोटा मेहमान बहुत हैं।।

सोच-समझकर खेलिए दिल से।
आप अभी नादान बहुत हैं।।

हाल पे मेरे ऐ ग़मे-दौरां[1]।
तेरे भी एहसान बहुत हैं।।

कैसे हजूमें[2] ग़म से बचे दिल।
किश्ती इक तूफ़ान बहुत हैं।।

सूदो-ज़ियां[3] की इस दुनिया में।
सूद है कम नुक़सान बहुत हैं।।

हिज्र में मेरे तड़पे वह भी।
इसकें भी इमकान[4] बहुत हैं।।

इनसे 'मयंक' अब बचकर रहिए।
हज़रते दिल शैतान बहुत हैं।।

---

1. सांसारिक दुःख, 2. ग़मों की भीड़, 3. नफा-नुकसान, 4. आसार।

जो थोड़ी सी भी उर्दू जानते हैं।
बहरसूरत मुझे पहचानते हैं।।

वो अपने मासिवा बज़्में अदब में।
कहां औरों को शायर मानते हैं।।

वो ख़ुद को भी तो फटके और छानें।
हर इक को जो फटकते छानते हैं।।

वो कब बैठेंगे मिलकर दोस्तों में।
अलग जो अपनी चादर तानते हैं।।

कराओ मत वहां मेरा तआरुफ़।
जहां सब लोग मुझको जानते हैं।।

वो गिर जाते हैं हर इक की नज़र से।
जो सबको अपने से कम मानते हैं।।

'मयंक' उनसे बड़ा कोई नहीं है।
जो ख़ुद को सबसे छोटा मानते हैं।।

आओ मिल-जुलकर तअस्सुब के अंधेरां के मिटाएं।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलाएं।।
यह तक़ाज़ा प्यार का है ज़िंदगी रोशन बनाएं।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलाएं।।

दीप वह रोशन करें जो कालिमाएं दूर कर दें।
नफ़रतों के ग़म मिटाकर चाहतों को नूर भर दें।।
हों मुनव्वर जिनकी लौ से धुंधली-धुंधली सी फ़िजाएं।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलाएं।।

जिनको आता ही नहीं हो आंधियों से ख़ौफ़ खाना।
कोई भी कोशिश करे आसां न तो जिनको बुझाना।।
खुद करें जिनकी हिफ़ाज़त बढ़के तूफ़ानी हवाएं।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलाएं।।

जो भटक कर रास्ते गुमराहियों में खो गये हैं।
चलते-चलते पांव जिनके और बोझिल हो गए हैं।।
आओ उन भटके हुओं को राह मंज़िल की दिखाएं।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलाएं।।

जब हृदय और आत्मा में रोशनी का हो बसेरा।
कब तलक हमको डराएगा अभावों का अंधेरा।।
ऐ 'मयंक' आओ कि हम यूं जश्ने दीवाली मनाएं।
एक दीपक तुम जलाओ, एक दीपक हम जलाएं।।

इस दौरे सियासत ने वो दिन भी दिखाए हैं।
घर अपने ही हाथों से लोगों ने जलाए हैं।।

उम्मीदे करम जिससे की हमने मुहब्बत में।
उसने ही सितम हम पर दिल खोल के ढाए हैं।।

इस शहर के बाशिंदे ज़िंदा हैं मगर फिर भी।
खुद अपने ज़नाज़े को कांधों पे उठाए हैं।।

मासूमों को बख़्शी है कुछ यूं भी सुबुक-दोशी[1]।
लम्हों के सभी क़र्ज़े सदियों ने चुकाए हैं।।

यह काम रहा अब तक दुनिया के मुसव्विर[2] का।
कुछ नक़्श मिटाए हैं, कुछ नक़्श बनाए हैं।।

उम्मीद कभी अपनी बर-आई[3] न आएगी।
हम हैं कि मगर फिर भी उम्मीद लगाए हैं।।

भड़काए तअस्सुब[4] ने जो शोले अदावत के।
वह हमने 'मयंक' अपने अश्कों से बुझाए हैं।।

---

1. हल्के कांधे, 2. तस्वीर खींचने वाला, 3. पूरी होना, 4. नफ़रत।

हो रही हैं फ़िक्रो फ़न की इसलिए रुसवाइयां।
जाहिलों के हाथ में है अंजुमन अमराइयां।।

ढूंढने से भी नहीं मिलता हमें अपना वजूद।
हो गई हैं आज तन्हा और भी ऊंचाइयां।।

पस्तियों को बस ज़रा अंगड़ाइयां लेने तो दो।
आके क़दमों पर गिरेंगी इनके फिर ऊंचाइयां।।

तू मिटाने को मिटा दे शौक़ से मेरा वजूद।
छोड़कर जाऊंगा फिर भी अपनी मैं परछाइयां।।

काविशें अपनी हैं जैसे एक बरसाती नदी।
अब ख़्यालों में समुंदर की कहां गहराइयां।।

वह हमारे घर की हों या आपके ऐवान[1] की।
बंट रही हैं ख़ाने-ख़ाने में सभी अंगनाइयां।।

जिन पे लिक्खे थे क़सीदे 'मीर'-ओ'-'ग़ालिब' ने 'मयंक।
अब कहां वह हुस्न और वह हुस्न की रानाइयां[2]।।

1. महल, 2. जल्वे।

जिस दिये में तेल है बाती नहीं।
रोशनी उससे कभी आती नहीं।।

ज़ख़्म भर जाते हैं दिल के एक दिन।
उम्र भर लेकिन कसक जाती नहीं।।

मौत जब देती है दस्तक द्वार पर।
फिर कोई सूरत नज़र आती नहीं।।

तुम जो मिल जाते तो मेरी ज़िंदगी।
दर-ब-दर[1] की ठोकरें खाती नहीं।।

मैं तो अपनाता हूं दुनिया को मगर।
फिर भी दुनिया मुझको अपनाती नहीं।।

दीजिए जितना भी चाहे ग़म मुझे।
अब तबीयत ग़म से घबराती नहीं।।

उसको जीने की दुआ मत दीजिए।
रास जिसको ज़िंदगी आती नहीं।।

उसको होती ही नहीं मंज़िल नसीब।
ज़िंदगी जो ठोकरें खाती नहीं।।

क़हक़हों की बज़्म में हूं मैं मगर।
फिर भी होठों पर हंसी आती नहीं।।

आरज़ू जिसकी मुझे है ऐ 'मयंक'।
ज़िंदगी वह मर्तबा[1] पाती नहीं।।

1. स्थान।

अक़्ल कहती है कि हम अल्लाह वालों में रहें।
दिल ये कहता है, नहीं, ज़ुहरा-जमालों[1] में रहें।।

यूं तो मरने के लिए मरना है सबको एक दिन।
ऐसा कुछ कर जाएं जो ज़िंदा मिसालों में रहें।।

इसलिए करते हैं रोशन अपनी पलकों पर चिराग़।
तीरगी के दौर में भी हम उजालों में रहें।।

वह हमारा, हम हैं उसके, दोनों ही हैं उसके घर।
चाहे मस्जिद में रहें हम या शिवालों में रहें।।

दुनियादारी के हमें कुछ और भी तो काम हैं।
कब तलक उलझे हुए हम तेरे बालों में रहें।।

बख़्श दे ऐसा हुनर दोनों को ऐ मेरे ख़ुदा।
तज़किरों[2] में वह रहें और हम हवालों में रहें।।

उनकी बज़्मे नाज़ में कुछ मांगने जाते नहीं।
अपना मक़सद है कि बसे उनके ख़यालों में रहें।।

मसअले हल होंगे कैसे ज़िंदगी के ऐ 'मयंक'।
हम अगर उलझे हुए अपने सवालों में रहें।।

---

1. हसीनों, 2. चर्चे।

मिटाकर मैंने देखा है नहीं मिटती है तहरीरे।
पुरानी यादों की चस्पाँ है अबतक दिल पै तस्वीरो।।

बिगड़कर फिर नहीं बनता मुकद्दर कौन कहता है।
फ़कीरों की दुआओं से बदल जाती हैं तक़दीरें।।

मिलाओ हाँ में हां जबतक तभी तक दोस्ती कायम।
जरा सी बात पर यारों से खिंच जाती है शमशीरे।।

मुझे आज़ाद रहना है मुझे आज़ाद रहने दो।
न डालो प्यार की अपने मरे पावों में जंजीरें।।

गुज़ारो ऐशो इशरत में तुम अपनी ज़िंदगी लेकिन।
मिरी भी चैन से गुज़रे कुछ ऐसी तदवीरे।।

मोहब्बत में किसी को कुछ नहीं, ये माजरा क्या है।
किसी को बख़्श दीं चाहत में, अपनी तुमने जागीरें।।

मयंक इस वास्ते रहता नहीं हूं खुशगुमानी में।
हुआ करती हैं उलटी ही मेरे ख्वाबों की ताबीरें।।

हमने आंसू बहुत बहाए हैं।
जब कहीं जाके मुस्कुराए हैं।।

साफ़ कुछ भी नज़र नहीं आता।
यक-ब-यक रोशनी में आए हैं।।

छोड़ दे ज़िंदगी मेरा पीछा।
नाज़ तेरे बहुत उठाए हैं।।

इस दिखावे के दौर में हमने।
हर क़दम पर फ़रेब खाए हैं।।

भूल जाऊं मैं किस तरह उनको।
ज़हनो दल पर जो मेरे छाए हैं।।

तेरी चाहत ने हौसला बख़्शा।
जब क़दम मेरे डगमगाए हैं।।

भूल जाऊं मैं कैसे उनको 'मयंक'।
जो मुसीबत में काम आए हैं।।

इस ज़िंदगी को ले के बताएं कि क्या करें।
इसका हुज़ूर आप ही ख़ुद फ़ैसला करें।।

इस वास्ते ख़ता पे ख़ता कर रहे हैं हम।
कोशिश में हैं कि सुन्नते आदम अदा करें।।

इस कशमकश में आज भी हैं ऐ ख़याले यार।
तकमीले रस्मो राह कि तर्के वफ़ा करें।।

यह कह के हमने छोड़ दिया ज़िंदगी का साथ।
कब तक हम अपने दर्द की यारों दवा करें।।

ढाने लगेगा जोरो सितम सुन के और भी।
जोरो सितम का उसके अगर हम गिला करें।।

ताबे हुज़ूर आपके ग़म भी ख़ुशी भी है।
मर्ज़ी में जो भी आए मुझे वह अता करें।।

अब दोस्ती का पहले सा आलम नहीं 'मयंक'।
अब दोस्तों से सोच-समझकर मिला करें।।

खुद से रक्खें न दूर-दूर हमें।
यूं न रुसवा करें हुज़ूर हमें।।

हम वफ़ाओं में सबसे अव्वल हैं।
खा ही जाएगा यह गुरूर हमें।।

जुर्म क्या है ये पहले बतलाएं।
क़त्ल कीजे न बेक़सूर हमें।।

बेअदब हम कभी नहीं होते।
बात करने का है शऊर हमें।।

हम कहेंगे जो खुद को आईना।
कर ही देगा वो चूर-चूर हमें।।

जुस्तूजू में तुम्हारी निकले हैं।
मिल ही जाओगे तुम ज़रूर हमें।।

बेवफ़ाओं की बेवफ़ाई ने।
कर दिया ग़म से चूर-चूर हमें।।

रोज़े अव्वल जो हमने पी थी 'मयंक'।
आज तक उसका है सुरूर हमें।।

हैं नज़र वाले सभी अहले नज़र कोई नहीं।
कह रहे हैं यह नज़ारे दीदावर कोई नहीं।।

कौन रखता है क़दम अब चाहतों की राह पर।
हूं तने तन्हा सफ़र में हमसफ़र कोई नहीं।।

अब किसी की बात पर आता नहीं हमको यकीं।
बात वाले सब हैं लेकिन, मोतबर[1] कोई नहीं।।

कैसे पाएगा कोई फिर आगहीं[2] की मंज़िलें।
है सफ़र में सारा आलम राह पर कोई नहीं।।

जी रहे हैं ज़िंदगी ख़ानाबदोशों की तरह।
इन घरों की भीड़ में भी अपना घर कोई नहीं।।

ख़ैर हो यारब हमारे कारवाने ज़ीस्त की।
सबके सब रहज़न यहां हैं राहबर कोई नहीं।।

यूं तो हैं बर्बाद लाखों दौरे हाज़िर में 'मयंक'।
जिस क़दर बर्बाद मैं हूं उस क़दर कोई नहीं।।

---

1. एतबार के काबिल, 2. दूरअंदेशी।

करम से उनके हम महरूम क्यों हैं।
ख़फ़ा हम से नहीं मालूम क्यों हैं।।

वफ़ादारी के सब क़ायल हैं फिर भी।
वफ़ाओं के निशां मादूम[1] क्यों हैं।।

ज़बां पर कोई पाबंदी नहीं है।
यहां फिर बेज़बां मज़लूम[2] क्यों हैं।।

सिला ख़िदमत का जब मिला नहीं है।
हज़ारों आपके मख़दूम[3] क्यों हैं।।

न देखा आज तक जिसको किसी ने।
उसी के सबके सब महकूम[4] क्यों हैं।।

हमें मालूम है अहले सियासत।
बज़ाहिर इस क़दर मासूम क्यों हैं।।

मुहब्बत है 'मयंक' इक हर्फ़ लेकिन।
फिर इसके सैकड़ों मफ़हूम[5] क्यों हैं।।

---

1. छुए हुए, 2. कमजोर जुल्म सहने वाले, 3. खादिम, सेवक, 4. आज्ञाकारी, 5. मानी

दर्द कुछ ऐसा बढ़ा ख़ुशहालियां कम हो गईं।
जब से मेरी आप से नज़दीकियां कम हो गईं।।

मां वही, ममता वही, बच्चा वही, झूला वही।
वक़्त के होठों पे लेकिन लोरियां कम हो गईं।।

आपने बौने दरख़्तों से समर[1] तो ले लिए।
राहगीरों के लिए परछाइयां कम हो गईं।।

मैं समर वाले दरख़्तों की तरह जब झुक गया।
लोग यह कहने लगे ख़ुद्दारियां कम हो गईं।।

मासिवा[2] मेरे सभी के आशियां महफ़ूज़ हैं।
अब्र[3] के दामन के शायद बिजलियां कम हो गईं।।

चल 'मयंक' उठ चल बुलाती है तेरी मंज़िल तुझे।
आसमां भी साफ़ है और आंधियां कम हो गईं।।

1. फल, 2. मेरे सिवा, 3. बादल।

अंधेरों में कमी देते नहीं हैं।
चिराग़ अब रोशनी देते नहीं हैं।।

नसीमे सुब्ह के भी नर्म झोंके।
चमन को ताज़गी देते नहीं हैं।।

फ़क़त आता है इनको क़त्ल करना।
ये क़ातिल ज़िंदगी देते नहीं हैं।।

हमें मालूम है उलफ़त के लम्हे।
सुकूने ज़िंदगी देते नहीं हैं।।

अमीरों के दरे दौलत पे जाकर।
कभी हम हाज़िरी देते नहीं हैं।।

हमारे हौसलों की दाद वह भी।
कभी देते, कभी देते नहीं हैं।।

बदलते मौसमों के बदले तेवर।
ख़बर तूफ़ान की देते नहीं हैं।।

वो क्या बांटेंगे अपनी मुस्कुराहट।
जो औरों को ख़ुशी देते नहीं हैं।।

न जाने क्यों 'मयंक' अब दैरो काबा।
पयामे आशती[1] देते नहीं हैं।।

---

1. अमन का पैगाम।

हम अगर होते नहीं तो यह जहां होता नहीं।
यह ज़मीं होती नहीं यह आसमां होता नहीं।।

आतिशे ग़म दिल में कब भड़के गुमां होता नहीं।
यह इक ऐसी आग है जिसमें धुआं होता नहीं।।

कुछ यहां होता नहीं कुछ भी वहां होता नहीं।
गर वजूदे ख़ालिक़े कौनो मकां होता नहीं।।

बात कुछ तो है जो उनकी मुझ पे है नज़रे करम।
बेसबब कोई किसी पर मेहरबां होता नहीं।।

खिलने से पहले ही उसको तोड़ ले जाता कोई।
दरमियाँ कांटों के गर गुंचा जवां होता नहीं।।

एक वह दिन, नाम लेना भी था मेरा नागवार।
एक यह दिन है कि ज़िक्रे दीगरां होता नहीं।।

फिर खुदा जाने तड़पकर किस पे गिरतीं बिजलियां।
गर मेरा शाख़े शजर पर आशियां होता नहीं।।

कौन जाने वह मिटा दे या बना दे ऐ 'मयंक'।
क्या है उस ज़ालिम के दिल में कुछ अयां होता नहीं।।

आ गए जब से वह निगाहों में।
फूल बिखरे हुए हैं राहों में।।

दूर रहता था मुझसे जो कल तक।
भर लिया आज उसने बांहों में।।

शहरे ख़ूबा[1] में बस गए वह भी।
जो कि रहते थे ख़ानक़ाहों[2] में।।

यूं तो जीना मुहाल था लेकिन।
ज़िंदगी कट गई गुनाहों में।।

था वो जाहो-जलाल[3] क़ातिल का।
खलबली मच गई गवाहों में।।

तू सज़ा दे कि बख़्श दे हमको।
आ गए ले तेरी पनाहों में।।

एक मसनद के वास्ते ऐ 'मयंक'।
कितनी चश्मक[4] है सरबराहों[5] में।।

1. हसीनाएं, 2. साधु-संतों के रहने की जगह (मठ), 3. शानो-शौकत, 4. खिंचाव, 5. रहबर।

कुछ ऐसी आई है अबके बहार बस्ती में।
क़बाएं सबकी हुईं तार-तार बस्ती में।।

दिखा रही है हमें इबरतों का आईना।
वो इक फ़कीर की टूटी मज़ार बस्ती में।।

दग़ाओं मक्र को अपने दयार तक रखिए।
पनप न पाएगा ये कारोबार बस्ती में।।

हुए हैं क़त्ल सरे राह आदमी कितने।
ग़रज है किसको करे ये शुमार बस्ती में।।

कोई क़रार की सूरत नज़र नहीं आती।
रहेंगे लोग यूं ही बेक़रार बस्ती में।।

हज़ार कसमें मुहब्बत की खाए तू लेकिन।
करेगा कौन तेरा ऐतबार बस्ती में।।

'मयंक' हमने तो ढूंढा गली-गली लेकिन।
मिला न हमको कोई दीनदार बस्ती में।।

ग़रीबख़ाने को कब से सजाए बैठा हूं।
चले भी आओ कि पलकें बिछाए बैठा हूं।।

जो मेरी जान का दुश्मन है शहरे उलफ़त में।
उसी को ज़ीस्त का हासिल बनाए बैठा हूं।।

जहाने इश्क़ में जिसने भुला दिया मुझको।
उसी की याद में ख़ुद को भुलाए बैठा हूं।।

मुझे ये शर्म, कहीं ज़ब्त पर न आंच आये।
ख़ुशी के पर्दे में ग़म को छुपाए बैठा हूं।।

अंधेरी रात में इक तुरफ़ा[1] रोशनी के लिये।
चिराग़ पलकों पे अपनी सजाए बैठा हूं।।

सभी को देख लिया मैंने वक़्त पड़ने पर।
हर एक शख़्स को मैं आज़माए बैठा हूं।।

अज़ीज़ तर है मुझे इस क़दर मुहब्बत में।
ग़मे हबीब[2] को दिल से लगाए बैठा हूं।।

कहो ये बर्क़[3] से आए इसे जलाने को।
चमन में फिर से नशेमन[4] बनाए बैठा हूं।।

नहीं है जिसके करम का कोई जवाब 'मयंक'।
उसी के दर पे जबीं मैं झुकाए बैठा हूं।।

---

1. अजीब, 2. महबूब, 3. बिजली, 4. घर, आशिया

शहर में इतनी जगह भी अब कहीं मिलती नहीं।
दफ़्न होने के लिए दो गज़ ज़मीं मिलती नहीं।।

कैसे कह दें मुश्तइल[1] हर एक के जज़बात हैं।
जब शिकन आलूद कोई भी जबीं मिलती नहीं।।

दश्ते-वहशत[2] की नवाज़िश अलहफ़ीजों[3] अल[4] अमां।
जेब साबित है तो साबित आस्तीं मिलती नहीं।।

गर यक़ीं मुझ पर नहीं तो आईनों से पूछ लो।
दिल हसीं मिलता है तो सूरत हसीं मिलती नहीं।।

हम किसी के दूर रहने का गिला कैसे करें।
ज़िंदगी अपनी भी जब अपने क़रीं[5] मिलती नहीं।।

वह जो शायर के ख़यालों को नया अंदाज़ दे।
शे'र कहने के लिए ऐसी ज़मीं मिलती नहीं।।

बात क्या है जो मेरी अर्ज़े तमन्ना पर 'मयंक'।
जाने क्यों उनके लबों पर अब 'नहीं' मिलती नहीं।।

---

1. भड़कना, 2. जुनून का हाथ, 3. ईश्वर हिफाजत करे, 4. ईश्वर अपनी पनाह में रखे, 5. पास।

रोज़ पीता हूं छोड़ देता हूं।
तौबा करता हूं तोड़ देता हूं।।

जब भी आती है हाथ में बोतल।
उसकी गर्दन मरोड़ देता हूं।।

जामे उलफ़त में दुख़्तरे-रज़[1] का।
क़तरा-क़तरा निचोड़ देता हूं।।

जो मुहब्बत से हो नहीं लबरेज़।
जामो मीना वो फोड़ देता हूं।।

पी के चलता हूं जब भी राहों में।
रुख़ हवाओं का मोड़ देता हूं।।

जब भी होता हूं मैं नशे में चूर।
ग़म के पंजे मरोड़ देता हूं।।

जाम टकरा के जाम से ऐ 'मयंक'।
टूटे रिश्तों को जोड़ देता हूं।।

---

1. अंगूर की बेटी।

देख लीजे जो देखा नहीं।
ज़िंदगी का भरोसा नहीं।।

ग़म की शिद्दत उसे क्या पता।
दिल कभी जिसका टूटा नहीं।।

आओगे ख़्वाब में किस तरह।
मुद्दतों से मैं सोया नहीं।।

जिसको फूलों से है उनसियत[1]।
वो कभी ख़ार बोता नहीं।।

देखिए मेरी मजबूरियां।
मैं जो चाहूं वो होता नहीं।।

आ के साहिल पे क्यों डूबते नहीं।
नाख़ुदा जो डुबोता नहीं।।

छोड़िए फ़िक्रे सूदो[2] ज़ियां[3]।
इश्क़ है इश्क़, सौदा नहीं।।

प्यार होता है ख़ुद ही 'मयंक'।
प्यार करने से होता नहीं।।

1. मुहब्बत, 2. लाभ, 3. हानि

जो तिरंगे को करना नमन छोड़ दें।
उनसे कह दो वो मेरा वतन छोड़ दें।।

पंचशील और अंहिसा के हामी हैं हम।
क्यों ख़ुलूसो वफ़ा के चलन छोड़ दें।।

'सूर', 'ग़ालिब', 'कबीरा' के वारिस हैं हम।
क्यों मुहब्बत के लिखना सुख़न छोड़ दें।।

शहरे क़ातिले में रहकर मुनासिब नहीं।
बांधना हम सरों से कफ़न छोड़ दें।।

हिंद ग़ौरी के शोलों से डर जाएगा।
देखना आप ऐसे सपन छोड़ दें।।

ऐ 'मयंक' अब यही वक़्त की मांग है।
एक दूजे से रखना जलन छोड़ दें।।

मैंने कहा हो जलवागर, उसने कहा नहीं-नहीं।
मैंने कहा मिला नज़र, उसने कहा नहीं-नहीं।।

मैंने कहा ये शाम है, उसने कहा ये जाम है।
मैंने कहा तो जाम भर, उसने कहा नहीं-नहीं।।

मैंने कहा कहां मिलें, उसने कहा कहां कहें।
मैंने कहा बाम पर, उसने कहा नहीं-नहीं।।

मैंने कहा दिखा झलक, उसने कहा कब तलक।
मैंने कहा उम्रभर, उसने कहा नहीं-नहीं।।

मैंने कहा कि रुख़ इधर, उसने कहा हैं चरमतर।
मैंने कहा सब्रकर, उसने कहा नहीं-नहीं।।

मैंने कहा कि हो नज़र, उसने कहा कहां किधर।
मैंने कहा 'मयंक' पर, उसने कहा नहीं-नहीं।।

वाव

शाख़ से करके अब जुदा मुझको।
ले चली है किधर हवा मुझको।।

जब खिज़ां ही मेरा मुक़द्दर है।
क्या बहारों से वास्ता मुझको।।

रहनुमा की मुझे ज़रूरत क्या।
रास्ता देगा रास्ता मुझको।।

देर तक लाश घर नहीं रखते।
यूं न गुलदान में सजा मुझको।।

मैंने अपनों पे एतबार किया।
इस ख़ता की मिली सज़ा मुझको।।

धूप, बरसात, सर्द मौसम की।
अब सताती नहीं अदा मुझको।।

रो रहा हूं सुकूने दिल को 'मयंक'।
यह वफ़ा का सिला मिला मुझको।।

खिला हुआ ये शगुफ़्ता[1] गुलाब रहने दो।
गिराओ रुख़ पे न अपने नक़ाब रहने दो।।

तुम अपने रुख़ पे परेशां करो न ज़ुल्फ़ों को।
ये जगमगाता हुआ आफ़ताब[2] क्यों हो।।

नज़र झुका के यूं तुम मुझसे मुलतफ़ित[3] क्यों हो।
नज़र उठाओ ये शर्मो हिजाब रहने दो।।

झुकी-झुकी सी निगाहों से मिल गया मुझको।
न दो सवाल का मेरे जवाब, रहने दो।।

कहीं न तोड़ दूं तौबा को अपनी मैं ज़ाहिद।
खुदारा छेड़ो न ज़िक्रे शराब रहने दो।।

करें वो तुमको मुख़ातिब 'मयंक' महफ़िल में।
ये ख़्वाब ख़्वाब है, देखो न ख़्वाब रहने दो।।

---

1. खिला हुआ, 2. खूबसूरत, 3. प्यार जाहिर

रोता हूं तो रोने दो।
दामन और भिगोने दो।।

मत जाओ ख़्वाबों में मेरे।
मुझको चैन से सोने दो।।

तुमसे रोके नहीं रुकेगा।
जो होता है होने दो।।

तुम राहों में फूल बिछाओ।
उसको कांटे बोने दो।।

कब बहलेगा भूखा बच्चा।
चाहे जितने खिलौने दो।।

अपना बोझ अपने कांधों पर।
मुझको तन्हा ढोने दो।।

खुद भी तो डूबेगा मांझी।
उसको नाव डुबोने दो।।

नींद की मारी इन आंखों को।
कुछ तो स्वप्न सलोने दो।।

पांव के छाले टपक रहे हैं।
सुइयां 'मयंक' चुभोने दो।।

हे

अपने गरेबां में झांके फिर मेरी ओर निहारे वह।
जिसने आप कभी न किया हो पहला पत्थर मारे वह।।

गांधी के बेटे हैं फिर भी मौत हैं दुश्मन की ख़ातिर।।
लेकिन शर्त है पहले आकर मैदां में ललकारे वह।।

मुझको डर है खुद अपनी ही नज़र न उसको लग जाए।
आईने में देख के जब भी अपना रूप संवारे वह।।

पैग़म्बर अवतार जहां में यूं ही जन्म नहीं लेते।
राह दिखाते सारे जग को बनकर चांद-सितारे वह।।

हिम्मत की पतवार न छोड़े जो ग़म के तूफ़ानों में।
मंझधारों को चीर के लाता अपनी नाव किनारे वह।।

अपनी सहमत का यह साया सिर पर उनके रहने दो।
वरना बंजारों की सूरत भटकेंगे बेचारे वह।।

जिसको पता है सारे जग का एक ही दाता है वो 'मयंक'।
छोड़ के रब, बंदों के आगे क्यों कर हाथ पसारे वह।।

अरमानों का खंडर है मेरा ग़रीबख़ाना।
मायूसियों का घर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

कर तो लिया है वादा आने का तुमने लेकिन।
मालूम है किधर है, मेरा ग़रीबख़ाना।।

दो-चार हो रहा हूं हर लम्हा हादसों से।
इक तुरफ़ा[1] दर्दे सिर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

कहने को मिलकियत है मेरी ज़रूर लेकिन।
सौ आफ़तों का घर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

दो गाम पै है काबा दो गाम बुतक़दा है।
इक ऐसे मोड़ पर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

हालाते हाज़िरा का कुछ भी असर नहीं है।
दुनिया से बेख़बर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

अच्छे-बुरे की इसको पहचान कुछ नहीं है।
मासूम इस क़दर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

बरबाद हो गया है फिर भी 'मयंक' सबसे।
मुझको अज़ीज़तर है मेरा ग़रीबख़ाना।।

---
1. अजीब।

हम्ज़ा

ले गया आंखों से मेरी ग़म ज़िया।
हो गई यूं रफ़्ता-रफ़्ता कम ज़िया।।

ग़म की जिस दम बदलियां छा जाएंगी।
मयकदे को देगा जामे ज़म ज़िया।।

आपके बख़्शे हुए यह दाग़े दिल।
देते रहते हैं हमें पैहम ज़िया।।

इन सियह रातों का सीना चीरकर।
ऐ ज़माने देंगे तुझको हम ज़िया।।

क्यों मुहब्बत के चिराग़ों की 'मयंक'।
हो रही है आजकल मद्धम ज़िया।।

ईऐ

जला कर तूने जो शाख़े शजर बर्क़े तपां रख दी।
न जाने क्यों उसी पर हमने बुनियादे मकां रख दी।।

तेरे इनकार ने तो छीन ली थी ताबें[1] गोयाई।
मगर इक़रार ने तेरे, मेरे मुंह में ज़बां रख दी।।

फ़साना तूने औरों का तो रक्खा रू-ब-रू अपने।
उठाकर ताक़ पर लेकिन हमारी दास्तां रख दी।।

न तुमको दुश्मनी हमसे, न हमको दुश्मनी तुमसे।
ये किसने तेग़ नफ़रत की हमारे दरमियां रख दी।।

इबादत के लिए दैरो हरम का मैं नहीं क़ायल।
जो दर था लायक़े सजदा जबीं मैंने वहां रख दी।।

किए बेलौस सजदे जिसने तेरे आस्ताने पर।
उसी के तूने दामन में मता-ए-दो जहां रख दी।।

वो जिसकी गुफ़्तगू रस घोलती थी सबके कानों में।
उसी शीरीं बयां की काट कर तुमने ज़बां रख दी।।

न लड़ने पाएं शेख़ो बर्हमन, इस वास्ते हमने।
बिना-ए-मयकदा[2] दैरो हरम के दरमियां रख दी।।

ये किसकी याद से रोशन 'मयंक' अपना है काशाना।
जलाकर मेरे दिल में किसने शम्ए ज़ौफ़शां रख दी।।

---

1. बात करने की ताक़त, 2. मैकदे की बुनियाद।

रंजो ग़म दर्दो अलम आहो फ़ुगां है ज़िंदगी।
सैकड़ों उन्वान की इक दास्तां है ज़िंदगी।।

जल रहे हैं ख़ारो ख़स उनका धुआं है ज़िंदगी।
शाख़े गुल पर इक सुलगता आशियां है ज़िंदगी।।

देखिए तो इक हुबाबे मौजे दरिया भी नहीं।
सोचिए तो एक बहरे बेकरां है ज़िंदगी।।

फ़र्शे गेती पर फ़रिश्तों ने भी हिम्मत हार दी।
वह ग़मे दिल सोज़ वह बारे गिरां है ज़िंदगी।।

हैं लबों पर सर्द आहें आंखों में आंसू भी है।
फिर भी जाने क्यों मेरी शोला फ़शां है ज़िंदगी।।

मुफ़लिसी ने छीन ली हम से हमारी हर ख़ुशी।
पहले जो थी वो हमारी अब कहां है ज़िंदगी।।

दर्दे कुलफ़त[1] से न घबराओ 'मयंक' इस दौर में।
सब्रो[2] इस्तक़लाल[3] का इक इम्तिहां है ज़िंदगी।।

---

1. दुःख-दर्द, 2. सब्र, 3. सब्र।

दोश[1] पर ज़ुल्फ़े सियह देखी जो लहराई हुई।
रह गई अपना सा मुंह लेकर घटा छाई हुई।।

कर दिया मशहूर उसको दोनों आलम में मगर।
उसकी शोहरत से ज़ियादा मेरी रुसवाई हुई।।

मुस्कुरा कर जब भी उलटी उसने चेहरे से नक़ाब।
दिल पे इक बिजली गिरी नागिन सी लहराई हुई।।

जल उठे पलकों पे जब भी तेरी यादों के चिराग़।
सुब्ह के मानिंद रौशन शामे तन्हाई हुई।।

क्या सबा आई है होकर जलवा-गाहे-नाज़[2] से।
चल रही है किसलिए गुलशन में इतराई हुई।।

तोड़ दूं मैं अहदे तौबा पारसाई की क़सम।
तेरी आंखों की मिले जो मुझको छलकाई हुई।।

ख़ैरमक़दम[3] के लिए ख़ुद उठके वह आए 'मयंक'।
अंजुमन में इस क़दर मेरी पज़ीराई हुई।।

---

1. कांधे, 2. हुस्न की महफिल, 3. स्वागत।

यूं किसी ने ज़िंदगी भर की कमाई छीन ली।
जैसे शायर के क़लम से रोशनाई छीन ली।।

ख़्वाब खुशियों के दिखाकर तोड़ डाले इस तरह।
जैसे बच्ची की नई गुड़िया दिलाई, छीन ली।।

आपने ख़्वाबों में आकर हर खुशी बख़्शी मगर।
छीनकर नींदें मेरी सारी खुदाई छीन ली।।

आप ही बतलाइए यह भी कोई इंसाफ़ है।
चीज़ मांगे से अगर मिलने न पाई, छीन ली।।

शैख़ जी ने मयकदे में रिंद की हर इक खुशी।
देखिए ईमान की देकर दुहाई छीन ली।।

हम निभाते ही रहे सारे तकल्लुफ़ बज़्म में।
उस सितमगर ने मगर जो चीज़ भाई, छीन ली।।

क्या कहा यारी निभाना काम मुश्किल है 'मयंक'।
आपने तो बात मेरे लब पे आई छीन ली।।

जानिबे सहरा कि सूये[1] गुलसितां ले जाएगी।
देखना है यह हवा हमको कहां ले जाएगी।।

अपना कोई बस नहीं आवारगी-ए-शौक़[2] पर।
हम वहीं जाएंगे हमको यह जहां ले जायेगी।।

वह सितम ढाएगी इक दिन यह सियासत आपकी।
छीनकर लोगों के मुंह से रोटियां ले जाएंगी।।

छोड़ दे ऐ नाखुदा हमको हमारे हाल पर।
जानिबे साहिल हमें मौजे रवां ले जाएगी।।

दोस्ती रखने की चाहत वह भी इस माहौल में।
देख लेना दुश्मनों के दरमियां ले जाएगी।।

जानता हूं क्या है मेरे चार तिनकों की बिसात।
फिर कोई आंधी उड़ाकर आशियां ले जाएगी।।

ऐ 'मयंक' अब तो हमारी हमसफ़र है आगही[3]।
जिस जगह मंज़िल है अपनी यह वहां ले जाएगी।।

1. तरफ, 2. अवारापन, 3. दूरअंदेशी।

तुमने जिसकी ज़िंदगी पामाल[1] की।
दो इजाज़त उसको अर्ज़े हाल की।।

भर लिए दामन में अपने इश्के ग़म।
ज़िंदगी यूं हमने मालामाल की।।

इश्क़ फिर फ़रमाइए क़िबला हुज़ूर।
फ़िक्र कीजे पहले आटे दाल की।।

मैं गुज़ारिश रहम की करता नहीं।
दो सज़ा मुझको मेरे आमाल[2] की।।

तोड़कर उड़ जाएगा इक दिन परिंद।
बंदिशें जितनी हैं मायाजाल की।।

जंग में मां की दुआएं साथ हैं।
क्या ज़रूरत है मुझे अब ढाल की।।

कम से कम ही बैठ पाती हैं 'मयंक'।
पालकी में बेटियां कंगाल की।।

1. पैरों से कुचलना, 2. कर्मों।

बरसों ही तेरे ग़म की, की हमने पज़ीराई[1]।
तब जाके मुहब्बत में मेराजे-वफ़ा[2] पाई।।

जो प्यार के आंगन में दीवार खड़ी कर दे।
अल्लाह मुझे देना ऐसा न कोई भाई।।

दुनिया-ऐ-मुहब्बत का इंसाफ़ ज़रा देखो।
आंखों ने ख़ता की और इस दिल ने सज़ा पाई।।

ऐ दस्ते जुनूं अपना उलफ़त में ये आलम है।
हम एक तमाशा हैं दुनिया है तमाशाई।।

अब याद तुम्हारी भी पुर्सिश को नहीं आती।
कुछ और हुई तन्हा शामे ग़मे तन्हाई।।

आपस में झगड़ते हैं यह होशो ख़िरद[3] वाले।
तकरार नहीं करता सौदाई[4] से सौदाई।।

जब उसने सरे महफ़िल दीवाना कहा मुझे।
उलफ़त में हुई मेरी कुछ और भी रुसवाई।।

पोशीदा जिसे रक्खा मयख़्वारो से साक़ी ने।
चुपके से मेरी तौबा वह जाम उठा लाई।।

औरों की तरह हम भी परदेस में क्यों जाएं।
हमको तो 'मयंक' अपनी रास आती है अंगनाई।।

---

1. आवभगत, 2. वफा की बुलंदी, 3. अक्ल, 4. पागल व दीवाना।

सिर्फ़ इतनी गुनहगार है ज़िंदगी।
ज़िन्दगी की परस्तार है ज़िंदगी।।

मौत की हर नफ़स मांगती है दुआ।
इस क़दर खुद से बेज़ार है ज़िंदगी।।

रो रही है खुदा जाने किसके लिए।
जाने किसकी तलबगार है ज़िंदगी।।

दौरे हाज़िर में जीना भी आसां नहीं।
और मरना भी दुश्वार है ज़िंदगी।।

मत किसी से हिमायत की उम्मीद रख।
कौन किसका तरफ़दार है ज़िंदगी।।

मैंने देखा है हर ज़ाविए[1] से इसे।
वाक़ई एक आज़ार[2] है ज़िंदगी।।

हाथ पर हाथ रखकर जो बैठा रहे।
ऐ 'मयंक' उसकी बेकार है ज़िंदगी।।

---

1. दृष्टिकोण से, 2. दुःख।

जहां जाओगे अय्यारी[1] मिलेगी।
मुहब्बत में अदाकारी मिलेगी।।

भले इंसां के भी खूं में यारो।
लहू की शोबदाकारी मिलेगी।।

नई तहज़ीब के शहरों में अक्सर।
मुहब्बत की ही बीमारी मिलेगी।।

अना और ज़र्फ़ की बस्ती में जाओ।
वहीं लोगों में ख़ुद्दारी मिलेगी।।

हमेशा की तरह ऐ दोस्त तुझको।
यूं ही मुझसे वफ़ादारी मिलेगी।।

जो चढ़ता है वह गिरता है अक्सर।
बड़ों से यह समझदारी मिलेगी।।

'मयंक' इस शहर में रहना संभलकर।
यहां हर चीज़ बाज़ारी मिलेगी।।

1. मक्कारी।

छोड़ के आई दुनिया सारी।
तुमसे अच्छी याद तुम्हारी।।

दिल में यूं है दर्द किसी का।
राख में जैसे इक चिंगारी।।

तुमको भी तो आती होगी।
गाहे माहे याद हमारी।।

बरसों से बैठा है यह दिल।
लेकर हसरत एक कुंआरी।।

तोड़ दूं तुझसे करके वादा।
खुद से करुं कैसे गद्दारी।।

इश्क़ की लज़्ज़त उससे पूछो।
इश्क़ में जिसने उम्र गुज़ारी।।

इक दिन सबको मौत आएगी।
आज इसकी कल उसकी बारी।।

कोई 'मयंक' है आने वाला।
आज की रात है हम पर भारी।।

आपकी जब से मुझ पर नज़र हो गई।
ज़िंदगी मुस्तक़िल दर्दे सिर हो गई।।

आते-आते कोई रुक गया शामे ग़म।
रोते-रोते किसी की सहर हो गई।।

कहते-कहते शबे ग़म हमीं सो गए।
दास्ताने अलम मुख़्तसर हो गई।।

फेरते ही किसी के निगाहें करम।
दिल की दुनिया ही ज़ेरो-ज़बर[1] हो गई।।

ज़ख़्म खाते रहे अश्क पीते रहे।
ज़िंदगी अपनी यूं ही बसर हो गई।।

देखकर मुझको साबित क़दम राह में।
सारी दुनिया मेरी हमसफ़र हो गई।।

जब भी देखी तबस्सुम[2] की लब पर लकीर।
इंतिक़ामन मेरी आंख तर हो गई।।

अब के पूछेंगे वह क्यों ख़फ़ा हैं 'मयंक'।
फिर मुलाक़ात उनसे अगर हो गई।।

---

1. ऊंच-नीच, 2. मुस्कान।

क्या पीरी क्या दौरे जवानी।
चार दिनों की राम कहानी।।

घाट पे जब भी पापी पहुंचा।
गंगा हो गई पानी-पानी।।

लाख इसे समझाया लेकिन।
दिल ने की अपनी मनमानी।।

घूम रहे हैं कासा[1] लेकर।
क्या जनता क्या राजा-रानी।।

तेरी यादें ऐसी महकें।
रात में जैसे रात की रानी।।

तर्के मुहब्बत तौबा-तौबा।
मत करना ऐसी नादानी।।

डूब गई जब दिल की किश्ती।
थम गई मौजों की तुग़यानी।।

मुझको 'मयंक' ऐसा लगता है।
मर गया सबकी आंख का पानी।।

---

1. भीख का कटोरा।

खुश अदा है खुश बयां है ज़िंदगी।
वाक़ई उर्दू ज़बां है ज़िंदगी।।

चाहिए इक उम्र कहने के लिए।
दास्तां-दर दास्तां है ज़िंदगी।।

हाथ पर जो हाथ रखकर बैठ जाए।
बस उसी की रायगां[1] है ज़िंदगी।।

है सुबुक[2] से भी सुबुकतर यह कभी।
और कभी बारे गिरां है ज़िंदगी।।

पत्थरों से दूर ही रखिए इसे।
एक शीशे का मकां है ज़िंदगी।।

मेहरबानी इसकी फ़ितरत में नहीं।
फिर भी मुझ पर मेहरबां है ज़िंदगी।।

रूह का अपना कोई भी घर नहीं।
लामकानी[3] का मकां है ज़िंदगी।।

मौत क्या समझेगी इसको ऐ 'मयंक'।
ज़िंदगी की क़द्रदां है ज़िंदगी।।

---

1. बेकार, 2. कमज़ोर, 3. जिसका कोई मकान न हो।

कर्ज़ अपना तमाम ले लेगी।
ज़िंदगी इंतकाम ले लेगी।।

किसको मालूम था कि गद्दारी।
इतना ऊंचा मुकाम ले लेगी।।

तश्नगी ख़ुद ही बढ़के साकी से।
अपने हिस्से का जाम ले लेगी।।

पेट की आग चंद टुकड़ों पर।
जो भी चाहेगी काम ले लेगी।।

दिल के सौदे में आशिक़ी मेरी।
जो भी दोगे वो दाम ले लेगी।।

अपने हाथों में प्यास रिंदो की।
मैकदे का निजाम ले लेगी।।

तर्के-उल्फ़त पै भी किसी की नज़र।
झुक के मेरा सलाम ले लेगी।।

की अदा किसने सुन्नते आदम।
ज़िंदगी मेरा नाम ले लेगी।।

गोद में अपनी एक दिन ऐ 'मयंक'।
रहमते नातमाम ले लेगी।।

यह दिखावे की सभी हमदर्दियां जल जाएंगी।
पोंछिए मत मेरे आंसू उंगलियां जल जाएंगी।।

वह तपिश है आशियां वालों के सीने में निहा[1]।
आह खींचेंगे अगर ये, बिजलियां जल जाएंगी।।

मत जलाओ नफ़रतों के सर्द मौसम में अलाव।
इक भी चिंगारी उड़ी तो बस्तियां जल जाएंगी।।

इक हक़ीक़त से हैं शायद बेख़बर ऊंचाइयां।
कौन पूछेगा इन्हें गर पस्तियां जल जाएंगी।।

यह सुलगता हुस्न लेकर मत उतरना झील में।
आग पानी में लगेगी मछलियां जल जाएंगी।।

शोला बनकर खिल रहे हैं सहने गुलशन में गुलाब।
लब अगर रक्खेंगी इन पर तितलियां जल जाएंगी।।

उसकी यादों से निकल कर होश में आ बावरी।
वरना चूल्हे में तवे पर रोटियां जल जाएंगी।।

गर यूं ही चढ़ती रही परवान यह रस्मे जहेज़।
सेज पर चढ़ने से पहले डोलियां जल जाएंगी।।

अपने तेवर हम बदल दें यह नहीं मुमकिन 'मयंक'।
बल न जाएंगे अगरचे[2] रस्सियां जल जाएगी।।

---

1. छुपे हुए, 2. यद्यपि।

है ग़मे दुनिया की मुझ पै मेहरबानी और भी।
इस कहानी से जुदा है इक कहानी और भी।।

जब करेगी तेरी ज़ुल्फ़ों से सवा अठखेलियां।
रंग लाएगा तेरा रंगे जवानी और भी।।

सोचकर ये मांगिए लड़के की शादी में दहेज़।
उसके घर बैठी है इक बेटी सयानी और भी।।

फ़र्क ख़ासो आम का जब बज़्म से उठ जाएगा।
ज़िंदगी हो जाएगी अपनी सुहानी और भी।।

इस ग़मे दुनिया से मिलने दीजिए हमको निजात।
फिर करेंगे उसके ग़म की मेज़बानी और भी।।

पहले भी बरबादियों का रोना रोते थे मगर।
बढ़ गई है इन दिनों कुछ नोहाख़ानी और भी।।

बरमला इज़हार उल्फ़त गर करूंगा मैं मयंक।
शर्म से हो जाएंगे वो पानी-पानी और भी।।

पेट में चारा पड़े तो सूझता है दूर का।
रहम के क़ाबिल है वरना ज़िंदगी मजबूर की।।

अपने मतलब के लिए जिसने कभी बरता नहीं।
बात करता है वही अब बज़्म में दस्तूर की।।

हक़परस्ती का ख़ुदारा ज़िक्र रहने दीजिए।
कौन करता है यहां अब पैरवी मंसूर की।।

आजकल के दौर की अल्लाह रे बेचैनियां।
कैफ़ियत जैसे बदन पर हो किसी नासूर की।।

ज़ार-ज़ार आंसू बहाती है यहां मेहनतकशी।
देखकर हालत हमारे देश के मज़दूर की।।

फिर उसी से जा रहा हूं करने अर्ज़े हाले ग़म।
आज तक जिसने न कोई इल्तिजा मंजूर की।।

बेसब्ब टकरा के तुमने संग-दिल से ऐ 'मयंक'।
आईने सी ज़िंदगानी अपनी चकनाचूर की।।

करनी हो जिनको ग़र्क जवानी शराब में।
पीते नहीं हैं डाल के पानी शराब में।।

रोशन तसव्वुरात[1] की जब रात हो गई।
तारीकियों[2] में नूर की बरसात हो गई।।

हम हादसा कहें कि कहें हुस्ने इत्तिफ़ाक़।
उनसे जो रास्ते में मुलाक़ात हो गई।।

हुस्ने तसव्वुरात की यह वुस्अतें[3] तो देख।
जलवों की कायनात मेरे साथ हो गई।।

वादाख़िलाफ़ियों का यही इक जवाब था।
यह बात हो गई, कभी वह बात हो गई।।

दिल नज़्र कर दिया तो कभी जान नज़्र की।
मेरी हयात हुस्न की सौग़ात हो गई।।

तेरी तलाश और मुसाफ़िर की जुस्तजू।
दिन हो गया कहीं तो कहीं रात हो गई।।

दिल में रहा न कोई तअस्सुब[4] का शायबा[5]।
जब से 'मयंक' इश्क़ मेरी ज़ात हो गई।।

---

1. ख़्यालात, 2. अँधेरे, 3. फैलाव, 4. सांप्रदायिक, 5. झलक।

बड़ी ईऐ

मेरी कहानी तेरी दास्तां से मिलती है।
कहीं तो जाके ज़मीं आसमां से मिलती है।।

तड़पना बर्क़े तपां का अरे मआज़-अल्लाह[1]।
सूकूं की खोज में जब आशियां से मिलती है।।

है ज़िक्र जिसका किताबों में दीं[2] की वह मेराज[3]।
मेरी जबीं[4] को तेरे आस्तां से मिलती है।।

ये मेरा अज़्मे-जवां[5] ही तो है कि हर मंज़िल।
जो आ के ख़ुद ही मेरे कारवां से मिलती है।।

ये जानते हैं कि है हातिमों का हातिम कौन।
हमें पता है कि दौलत कहां से मिलती है।।

किसी भी और ज़बां में है वह मिठास कहां।
जो चाशनी हमें उर्दू ज़बां से मिलती है।।

---

1. अल्लाह खैर करे, 2. ईमान, 3. ऊंचाई, 4. पेशानी, 5. जवां हौसला।

सरहदों पर क़त्ल कितने जंगजू[1] हो जाएंगे।
हां मगर ज़िल्ले इलाही सुर्ख़रू[2] हो जाएंगे।।

फिर शिकारों से उठेगा कुलकुले मीना[3] का शोर।
फिर वही रंगी नज़ारें चारसू हो जाएंगे।।

बस उसी दम रुक सकेगी अपनी ये तेग़े रवां।
बेसरोपा[4] सरहदों पे जब उदू हो जाएंगे।।

फिर बना देंगे उसे हम वादिए जन्नत निशां।
दामने[5] कोहो[6] दमन[7] फिर मुश्क बू हो जाएंगे।।

फ़ितनागरों का अगर वो साथ देना छोड़ दें।
दोस्ती के चाक दामन खुद रफू हो जाएंगे।।

क़त्ल जब हो जाएंगे सब दुश्मनाने मयक़दा।
क़ैद से आज़ाद फिर जामों सुबू हो जाएंगे।।

फ़ितनाकारों की मदद जो भी करेंगे ऐ 'मयंक'।
अंजुमन में अम्न की बेआबरू हो जाएंगे।।

---

1. सिपाही, 2. कामयाब, 3. सुराही, 4. बगैर सर और पांव के, 5. दामन, 6. पहाड़, 7. वादी (कश्मीर की वादी)।

ऐ इश्क़ मेरी ख़ुद्दारी को मेयार[1] गिरे तो गिर जाए।
उस दर पे झुकाऊंगा सिर को दस्तार[2] गिरे तो गिर जाए।।

हर हाल में उस हरजाई से रक्खूंगा मरासिम[3] रक्खूंगा।
दुनिया की निगाहों में मेरा किरदार गिरे तो गिर जाए।।

जिस शहर में यूसुफ़ के सानी पैसों से खरीदे जाते हैं।
उस शहर से जिन्से-उलफ़त[4] का बाज़ार गिरे तो गिर जाए।।

हम इसको बचाने की ख़ातिर सदमात कहां तक झेलेंगे।
तहज़ीबो तमद्दुन[5] की अपनी दीवार गिरे तो गिर जाए।।

दौलत के लिए हर इक शायर जब फ़न की तिजारत करता है।
फिर उसकी बला से ग़ज़लों का मेयार गिरे तो गिर जाए।।

अल्लाह की मर्ज़ी होगी तो पहुंचेगा सफ़ीना साहिल तक।
तूफ़ां में हमारे हाथों से पतवार गिरे तो गिर जाए।।

दामाने-सदाक़त[6] जीते-जी छोड़ा न कभी छोड़ेंगे 'मयंक'।
क़ातिल की हमारी गर्दन पर तलवार गिरे तो गिर जाए।।

1. स्तर, 2. पगड़ी, 3. संबंध, रस्सो राह, 4. प्यार की सामग्री, 5. तहजीब, 6. सच्चाई का दामन।

ख़ामोश समुंदर ठहरी हवा, तूफ़ां की निशानी होती है।
डर और ज़ियादा लगता है जब नाव पुरानी होती है।।

इक ऐसा वक़्त भी आता है, आंखों में उजाले चुभते हैं।
हो रात मिलन की अंधियारी तो और सुहानी होती है।।

अनमोल बुज़ुर्गों की बातें, अनमोल बुज़ुर्गों का साया।
उस चीज़ की क़ीमत मत पूछो जो चीज़ पुरानी होती है।।

वैसे तो मुझे ऐ शेख़े हरम, पीने का नहीं है शौक़ मगर।
इक साग़रे मय पी लेता हूं, जब दिल पे गिरानी होती है।।

इस क़हरे इलाही का यारो, लफ़्ज़ों में बयां है नामुमकिन।
जब बाप के कांधों को मय्यत बेटे की उठानी होती है।।

जो औरों के काम आते हैं मर कर भी अमर हो जाते हैं।
दुनिया वालों के होठों पर उनकी ही कहानी होती है।।

हो जाएगी ठंडी रोने से यह आग तुम्हारे दिल की 'मयंक'।
होती है नवाज़िश अश्कों की तो आग भी पानी होती है।।

समुंदर को लहर, नदिया को धारा कौन देता है।
भंवर में नाखुदाओं को किनारा कौन देता है।।

ये तेरी शाने रहमत है वगरना तेरी दुनिया में।
सहारा देने वालों को सहारा कौन देता है।।

बहुत मासूम हैं अहले चमन भी और निगहबां भी।
पता फिर बर्क़े[1] सोज़ां को हमारा कौन देता है।।

वजूद उसका नहीं है चार सू तो ऐ नज़र वालो।
मेरी आंखों को फिर रंगीं नज़ारा कौन देता है।।

सज़ा मैं काटकर आया हूं अपने जुर्मे अव्वल की।
सज़ा फिर जुर्मे अव्वल ही दुबारा कौन देता है।।

कहीं से मिल जाती है हमें दो वक़्त की रोटी।
फ़लक से तोड़कर हमको सितारा कौन देता है।।

'मयंक' इस कारोबारे इश्क़ में, मालूम है हमको।
मुनाफ़ा कौन देता है ख़सारा[2] कौन देता है।।

---

1. जलाने वाली बिजली, 2. नुक़सान

रहने में अब डर लगता है।
जाने कैसा घर लगता है।।

हाथ करो बेटी के पीले।
चौखट से अब सिर लगता है।।

जाने क्यों अपना ही चेहरा।
औरों से बेहतर लगता है।।

भीगा-भीगा चेहरा-चेहरा।
दामन-दामन तर लगता है।।

फूल जिसे कहती है दुनिया।
मुझको वह पत्थर लगता है।।

गांव की हालत ज्यों की त्यों है।
रोज़ मगर दफ़्तर लगता है।।

अंदर से वह मोम की सूरत।
बाहर से पत्थर लगता है।।

वह ग़म जिसको कोई न पूछे।
मेरे गले आकर लगता है।।

हमको 'मयंक' आंसू का क़तरा।
पलकों पर गोहर[1] लगता है।।

---

1. मोती।

रूख़े रोशन की ताबांनी[1] यहां भी है वहां भी है।
किसी की जलवा-अफ़शानी[2] यहां भी है वहां भी है।।

वो तर्के इश्क़ पर नादिम[3], मैं तर्के इश्क़ पर गिरयां[4]।
बहर सूरत पशेमानी यहां भी है वहां भी है।।

किसी की राह वह देखें, और उनकी राह मैं देखूं।
बराबर की परेशानी यहां भी है वहां भी है।।

मैं जाऊं उनके घर कैसे, वो आएं मेरे घर कैसे।
ज़माने की निगहबानी यहां भी है वहां भी है।।

लगी है दोनों ही जानिब दिलों में आग, नफ़रत की।
सियासत की ये शैतानी यहां भी है वहां भी है।।

फ़िजाएं ज़िंदगी बदली न बदलेगी कभी अपनी।
मुहब्बत की ग़ज़ल-ख़्वानी[5] यहां भी है वहां भी है।।

किनारे कैसे ले जाएं सफ़ीना हम 'मयंक' अपना।
हवाएं-तुंदो[6] तूफ़ानी यहां भी है वहां भी है।।

---

1. रोशनी, 2. प्रदर्शन, 3. शर्मिंदा, 4. रोना, 5. ग़ज़ल पढ़ना, 6. तेज़ हवा।

आपके हमराह हर इक ऐश का सामां चले।
मैं चलूं तो साथ मेरे ग़म का इक तूफ़ां चले।।

बस यूं ही रहना मेरे ग़म में बराबर के शरीक।
कारोबारे इश्क़ जब तक दीदा-ए-गिरयां[1] चले।।

हर किसी के ज़हन पर छाई हो जब शैतानियत।
कैसे फिर इंसानियत की राह पर इंसां चले।।

ज़िंदगी भर वह मुझे नश्तर चुभोते ही रहे।
बाद मरने के वो देने दर्द का दरमां[2] चले।।

जो भी पाया हमने दुनिया से उसी को दे दिया।
छोड़कर दुनिया को तेरी बे सरो-सामां[3] चले।।

मैं अगर रुक जाऊं तो रुक जाए दुनिया का निज़ाम।
मैं चलूं तो साथ मेरे गर्दिशे-दौरां[4] चले।।

वक़्ते रुखसत भी सुबुक-सर[5] हो न पाए ऐ 'मयंक'।
ले के दुनिया भर का अपने सिर पे हम एहसां चले।।

1. रोने वाली आँखें, 2. दवा, 3. असबाब, 4. दिनों का चक्कर, 5. कमज़ोर।

यूं तो हर इक शख़्स का ईमान होना चाहिए।
शर्त यह है वह मगर इंसान होना चाहिए।।

हो जहां शिव की अज़ानें और ख़ुदा की आरती।
वह इबादतगाह हिंदुस्तान होना चाहिए।।

हो न अब कोई क़लम पाबंदे मज़हब दोस्तो।
हर कवी शायर, मियांक रसखान होना चाहिए।।

इस तरफ़ मुस्लिम पढ़ें गीता-ओ-रामायण, पुराण।
हिंदुओं का रहबर क़ुरआन होना चाहिए।।

गीत कितने भी लिखे शायर मगर यह ध्यान दें।
एकता हर गीत का उन्वान[1] होना चाहिए।।

मोमिनों[2] के ज़हन में सूरत कन्हैया की रहे।
हिंदुओं के क़ल्ब[3] में रहमान होना चाहिए।।

ऐ 'मयंक' इस हिंद से बढ़कर कोई मज़हब नहीं।
हिंद पर हर शख़्स को कुर्बान होना चाहिए।।

---

1. शीर्षक, 2. मुस्लिम, 3. दिल।

न जाने कैसे परिंदे उड़ान भूल गए।
ज़मीन याद रही आसमान भूल गए।।

हज़ार बार वो आए ग़रीबख़ाने पर।
मिला जो रुतबा तो मेरा मकान भूल गए।।

है कैसा शहर का माहौल हमको क्या मालूम।
तुम्हारी याद में सारा जहान भूल गए।।

जो अपने घर में लड़कपन से सुनते आए थे।
बड़े हुए तो वो उर्दू ज़बान भूल गए।।

हमारी बात उन्हें याद कैसे रह पाती।
वक़ार पाके जो अपना बयान भूल गए।।

खड़े हैं खेतों में ऊपर नज़र उठाए हुए।
करम की कब हुई बारिश किसान भूल गए।।

तुम इनकी बातों पे हर्गिज़ यक़ीन मत करना।
ये लोग वह हैं जो देकर ज़बान भूल गए।।

हमारे गांवों में ऐसे भी लोग रहते थे।
मिली हवेली तो कच्चे मकान भूल गए।।

वो ठाट-बाट कहां जिंदगी में है ऐ 'मयंक'।
तलाशे-रिज़्क[1] में सब आन-बान भूल गए।।

1. रोजी-रोटी की तलाश।

मोम के पैकरे नाज़ुक में भी ढल सकता है।
आह में दम हो तो पत्थर भी पिघल सकता है।।

मौत का वक़्त मुक़र्रर है ये माना लेकिन।
तुम जो आ जाओ तो यह वक़्त भी टल सकता है।।

सच को क्या झूठ के अज़दाह[1] मिटा पाएंगे।
क्या अंधेरा कभी सूरज को निगल सकता है।।

खुद न बदला जो बदलते हुए हालात के साथ।
उसकी फ़ितरत को भला कौन बदल सकता है।।

हों जहां जिन्से-सियासत[2] की दुकानें हर सू।
खोटा सिक्का उसी बाज़ार में चल सकता है।।

शहरे-ख़ूबां[3] में इसे साथ न लेकर चालिए।
दिल तो नादां है जहां चाहे मचल सकता है।।

जो चुभोया है रक़ीबों ने मेरे दिल में 'मयंक'।
वह जो चाहें जो ये कांटा भी निकल सकता है।।

---

1. अजगर, 2. सामग्री, 3. हसीनों का शहर।

कर दिया है मुश्किलों ने आज इस काबिल मुझे।
कोई मुश्किल ही नज़र आती नहीं मुश्किल मुझे।।

यूं तो उसकी अंजुमन में नूर भी था नार भी।
भा गई लेकिन अदाए हुस्ने आवोगिल मुझे।।

की मशीयत ने अज़ल में इस तरह तख़लीके इश्क।
हुस्न बख़्शा आपको और दे दिया इक दिल मुझे।।

बैठ के राहे वफ़ा में दोनों ही रोते रहे।
सई-ए-ला हासिल को मैं और सई-ए-ला हासिल मुझे।।

हूं नहीं तैराक़ लेकिन तेरी रहमत के तुफ़ैल।
मिल ही जाएगा यकीनन एक दिन साहिल मुझे।।

उठ के थोड़ी दूर चलती है हर इक रह रौ के साथ।
ढूंढती है आज भी गर्दे रहे मंज़िल मुझे।।

लूट लेने दे मुझे आगाज़े उल्फ़त के मज़े।
रहने भी दे ऐ 'मयंक' अंज़ाम से ग़ाफ़िल मुझे।।

जहां मेराजे ग़म हासिल नहीं है।
वो मेरे प्यार की मंज़िल नहीं है।।

तबाही पर मेरी ऐ हंसने वाले।
तेरे पहलू में शायद दिल नहीं है।।

निगाहें मेरी अपने हाल पर हैं।
नज़र में मेरी मुस्तक़बिल नहीं है।।

हमें ख़ुद है जुनूने सरफ़रोशी।
कमाले बाज़ुए क़ातिल नहीं है।।

वफ़ाओं का सिला क्यों मांगते हो।
वफ़ाओं का कोई हासिल नहीं है।।

ज़माने की रविश पर चल के देखो।
यहां जीना कोई मुश्किल नहीं है।।

हैं नाज़ां[1] हम उसी की दोस्ती पर।
हमारे ग़म में जो शामिल नहीं है।।

'मयंक' अब दिल लगाए भी तो किससे।
कोई भी प्यार के क़ाबिल नहीं है।।

1. घमंड।

करम से जो तुम्हारे दूर होंगे।
बहर सूरत बहुत रंजूर होंगे।।

इलाजे ज़ख्मे दिल करना है लाज़िम।
वगरना एक दिन नासूर होंगे।।

न लिखना हुस्न पर उनके क़सीदे।
वो पढ़कर और भी मग़रूर होंगे।।

बदल जाएगी यह कुहना रिवायत।
मुहब्बत के नए दस्तूर होंगे।।

मिलेगा जब ग़मे महबूब हमको।
निशानाते अलम काफ़ूर होंगे।।

करेंगे लोग फिर मेहनत-मशक़्क़त।
हर इक मसनद पे जब मज़दूर होंगे।।

भरम रक्खेंगे सच्चाई का जो भी।
'मयंक' इस दौर के मंसूर होंगे।।

जो पहले था हमें उससे भी कुछ बेहतर बनाना है।
चले आओ कि दिल के इस खंडर को घर बनाना है।।

सभी तामीर करते हैं मकां अपने लिए लेकिन।
हमें तो खाना-ए-दिल को खुदा का घर बनाना है।।

बना लो तुम जिसे चाहो अमीरे कारवां लेकिन।
ख़याले यार को अपना हमें रहबर बनाना है।।

मुक़द्दर में कहां मेहनतकशों के मख़मली गद्दे।
उन्हें ईंटों का तकिया फ़र्श को बिस्तर बनाना है।।

अगर बचना है हमको रहज़नों से राहे हस्ती में।
तो अपनी राह उनकी राह से हटकर बनाना है।।

न जाएंगे किसी दर पर बनाने आक़बत[1] अपनी।
'मयंक' अब जो बनाना है यहीं रहकर बनाना है।।

---

1. औकात।

क़ुर्बत नसीब होगी न जिसकी कभी मुझे।
महसूस हो रही है उसी की कमी मुझे।।

इस वास्ते कुछ और है जीने की आरज़ू।
आने लगा है रास ग़मे ज़िंदगी मुझे।।

अपनी ख़ुशी के पीछे मैं दौड़ूं तो किसलिए।
मिलती है जब सभी की ख़ुशी में ख़ुशी मुझे।।

पैकर में आदमी के मिले आदमी बहुत।
फिर भी नज़र न आया कोई आदमी मुझे।

लिल्लाह मेरी राह न रोको ऐ वाइज़ों[1]।
आवाज़ दे रही है किसी की गली मुझे।।

रख दूं मैं इसके वास्ते ग़ैरत को दांव पर।
इतनी नहीं अज़ीज़ मेरी ज़िंदगी मुझे।।

जारी रही जो यूं ही मेरी मश्क़ ऐ 'मयंक'।
बख़्शेगी इक मुक़ाम मेरी शायरी मुझे।।

---

1. धर्म उपदेशक।

शामिल जो उसकी ज़ात मेरी ज़ात में रहे।
आलम तमाम फिर तो मेरे हाथ में रहे।।

यह हौसला तो देखिए मिट्टी का इक दिया।
तूफ़ां से कह रहा है कि औक़ात में रहे।।

तर्के तअल्लुक़ात की हद तक न पहुंचे बात।
इसका ख़याल शिकवा-शिकायत में रहे।।

साक़ी का और शराब का भी एहतमाम हो।
बरसात का जो लुत्फ़ है, बरसात में रहे।।

तलक़ीन का ये तौर मुनासिब नहीं जनाब।
हर इक क़दम पे शेख़े हरम साथ में रहे।।

टूटे कभी न दामने आदाबे गुफ़्तगू।
इसका ख़याल अगली मुलाक़ात में रहे।।

अम्नों अमां की देते हैं तबलीग़ वो 'मयंक'।
जो लोग पेश-पेश फ़सादात में रहे।।

ज़ेरे लब जब भी जाम होता है।
ज़िक्रे तौबा ह़राम होता है।।

रश्क करती है उस पे यह दुनिया।
जिसका दुनिया में नाम होता है।।

मौत की सिर्फ़ एक हिचकी से।
सारा क़िस्सा तमाम होता है।।

उसको मिलती नहीं कभी मंज़िल।
हौसला जिसका ख़ाम[1] होता है।।

जान दे दे जो दूसरों के लिए।
किससे यह नेक काम होता है।।

एहतरामन नज़र नहीं उठती।
उनसे फिर भी सलाम होता है।।

देखने वाला चाहिए ऐ 'मयंक'।
उसका जलवा तो आम होता है।।

1. टूटा हुआ।

वह जो तिश्नाकाम बहुत है।
उसके लिए इक जाम बहुत है।।

किसको करें और किसको छोड़ें।
उम्र है कम और काम बहुत है।।

माना मैं रुसवाए जहां हूं।
लेकिन मेरा नाम बहुत है।।

अहले खुदी की खुद्दारी पर।
छोटा सा इल्ज़ाम बहुत है।।

महफ़िल-महफ़िल किसी के चर्चे।
और कोई गुमनाम बहुत है।।

कम कहता हूं कम लिखता हूं।
फिर भी मेरा नाम बहुत है।।

दर्दे जुदाई देने वाले।
तेरा यह इनआम बहुत है।।

उसकी दीद के सब हैं तालिब।
जिसका जलवा आम बहुत है।।

क़ैद है जुल्फेयार में जब से।
दिल को 'मयंक' आराम बहुत है।।

हिचकियां ले के न रो क़ब्र पे रोने वाले।
जाग जाएं न कहीं चैन से सोने वाले।।

नाखुदाओं पे यक़ीं सोच-समझकर करना।
ला के साहिल पे डुबो देंगे डुबोने वाले।।

फ़स्ले नौ तल्ख़ न होगी तो भला क्या होगी।
ज़हर के बीज अगर बोएंगे बोने वाले।।

खूं का हर दाग़ मेरे क़त्ल का शाहिद होगा।
लाख दामन से लहू धो मेरा धोने वाले।।

क्या मिलेगा तुझे ज़रदार से नफ़रत के सिवा।
पैरहन अपना पसीने में भिगोने वाले।।

महफ़िले ऐश की क्यों देता है दावत हमको।
सिर पे तन्हाई का हम बोझ हैं ढोने वाले।।

कृष्ण की राधा से कह दो कि ज़माने में 'मयंक'।
अब तो अंदाज़ कहां श्याम सलोने वाले।।

अपने ज़ब्ते ग़म को रुसवा चार सू मत कीजिए।
चार दिन की ज़िंदगी है हाय हू मत कीजिए।।

बज़्मे रिंदां में ऐ ज़ाहिद कीजिए रिंदी की बात।
ज़ुहदो-तक़्वा[1] पर ख़ुदारा गुफ़्तगू मत कीजिए।।

हो न जाऊं किसको सुनकर और भी मग़रूर मैं।
यूं मेरी तारीफ़ मेरे रू-ब-रू मत कीजिए।।

कौन जाने कब बदल जाए बहारों का मिज़ाज।
एतबारे गुलसिताने रंगो बू मत कीजिए।।

यूं ही रहने दीजिए जेबो गरेबां चाक चाक।
दस्ते-वहशत[2] कब बहक जाए रफ़ू मत कीजिए।।

लाख सींचे जाएं लेकिन फूल फल सकते नहीं।
ख़ारज़ारों के लिए ज़ाया लहू मत कीजिए।।

रहिए ज़िंदा ऐ 'मयंक' इस दौरे पुर आशोब में।
चैन से जीने की लेकिन आरज़ू मत कीजिए।।

---

1. परहेजगारी, 2. दीवानगी का हाथ।

तुम से क्या रस्मो-राह[1] कर बैठे।
अपनी दुनिया तबाह कर बैठे।।

अपना मक़सद था सुन्नते-आदम[2]।
इसलिए हम गुनाह कर बैठे।।

चाहतों के जहान में हम भी।
तुमसे मिलने की चाह कर बैठे।।

देखकर उनके हुस्ने रंगीं को।
लोग सब वाह-वाह कर बैठे।।

हाथ आया न कुछ मुहब्बत में।
यह गुनह ख़्वामख़्वाह कर बैठे।।

जब्र वालों की अंजुमन में 'मयंक'।
शिद्दते-ग़म[3] से आह कर बैठे।।

---

1. तालुकात, 2. आदम की पैरवी करना, 3. बहुत अधिक ग़म

अब दिमाग़ आसमानों में है।
पांव लेकिन ढलानों में है।।

क़ैद अब भी मता-ए-वतन।
सिर्फ़ कुछ ख़ानदानों में है।।

हर नफ़स इक न इक मसअला।
ज़िंदगी इम्तहानों में है।।

बालों पर जिसके अपने नहीं।
वह भी ऊंची उड़ानों में है।।

जिनके ताबे है माहे[1] मुबीं[2]।
रोशनी उन मकानों में है।।

आजकल अस्मते ज़िंदगी।
ऊंची-ऊंची दुकानों में है।।

सांस लेना भी मुश्किल है अब।
वह घुटन आशियानों में है।।

होशमंदों की सफ़ में था जो।
वह भी शामिल दिवानों में है।।

ढूंढते हो जिसे तुम 'मयंक'।
वह हक़ीक़त फ़सानों में है।।

1-2. पूर्णमासी का चंद्रमा।

पहले मिला के मुझसे नज़र बात कीजिए।
फिर उसके बाद शिकवा-शिकायात कीजिए।।

होगी ज़रूर अपनी मुहब्बत भी कामयाब।
लेकर खुदा का नाम शुरूआत कीजिए।।

हर लम्हा यूं न बैठिए हाथों पे धर के हाथ।
बर्बाद यूं न ज़ीस्त के हालात कीजिए।।

सैलाबे ग़म में डूब के मिट जाएगी हयात।
आंखों से यूं न अश्कों की बरसात कीजिए।।

हां मानता हूं मैं हूं गुनहगार आपका।
जो चाहे वह सलूक मेरे साथ कीजिए।।

कब तक वफ़ा की लाश को ढोते रहेंगे आप।
चलिए रविश[1] पे दुनिया की और घात कीजिए।।

हासिल[2] यही है प्यार का ऐ हज़रते 'मयंक'।
करवट बदल-बदल के बसर रात कीजिए।।

1. रास्ता, 2. नतीजा।

रंजो ग़म हमारे हैं और ख़ुशी तुम्हारी है।
हम तो यूं ही जीते हैं ज़िंदगी तुम्हारी है।।

दोस्ती ग़ज़ब की थी पहले दैरो काबा में।
वह सदी हमारी थी यह सदी तुम्हारी है।।

कौन काम आया है कौन काम आएगा।
हर किसी से दुनिया में दुश्मनी तुम्हारी है।।

किस क़दर निराला है खेल यह मुहब्बत का।
चित्त भी तुम्हारी है पट्ट भी तुम्हारी है।।

अपनी ज़िंदगी पर भी कुछ नहीं है हक़ अपना।
कल भी यह तुम्हारी थी आज भी तुम्हारी है।।

तुमसे ही मुनव्वर[1] है इस जहां का हर ज़र्रा।
चांद और सूरज में रोशनी तुम्हारी है।।

आशिक़ी के बारे में तजुर्बा है क्या तुमको।
मौज और मस्ती की उम्र अभी तुम्हारी है।।

लाख रंग भरता हूं रंग पर नहीं आती।
इसलिए कि महफ़िल में इक कमी तुम्हारी है।।

शोहरतों की मंज़िल पर पहुंचोगे 'मयंक' इक दिन।
फ़िक्रो फ़न से वाबस्ता शायरी तुम्हारी है।।

---

1. ज्योतिर्मय, प्रकाशित।

मेरे आंसू गरचे मेरी दास्तां कहते रहे।
कहने वाले फिर भी मुझको बेज़बां कहते रहे।

और कुछ कहने की फ़ुर्सत ज़िंदगी ने दी कहां।
उम्र भर हम अपने ग़म की दास्तां कहते रहे।।

कर दिया बर्बाद जिसकी मेहरबानी ने हमें।
हम उसी नामेहरबां को मेहरबां कहते रहे।।

जिनके दम से थी बहुत महफ़ूज शाख़े आशियां।
हम उन्हीं तिनकों को अपना आशियां कहते रहे।।

जिसने ख़ुद लूटा सरे मंज़िल हमारा कारवां।
हम उसी को अपना मीरे कारवां कहते रहे।।

जिसकी मिट्टी ने हमारे जिस्म को बख़्शी जिला[1]।।
उम्र भर हम उस जमीं को आसमां कहते रहे।।

ख़ाना-ए-दिल में हमारे जी मकीं है ऐ 'मयंक'।
तौबा-तौबा हम उसी को लामकां[2] कहते रहे।।

---

1. चमक, 2. बेघर।

जिनको डर है दाग़ चेहरे के नज़र आ जाएंगे।
आईनों के शहर में जाते हुए घबराएंगे।।

हर बुरे आग़ाज का अंजाम होता है बुरा।
इक न इक दिन वह किए की खुद सज़ा पा जाएंगे।

है हरीफ़ अपना ज़माना और मुखालिफ़ है फ़िज़ा।
ज़िंदगी तेरे लिए किस-किस से हम टकराएंगे।।

डाल रक्खे हैं अना[1] ने पर्दे अक़लो होश पर।
जो समझकर भी न समझे उसको क्या समझाएंगे।।

ज़ुल्म ढाने के लिए कुछ ख़ास दिल मख़्सूस हैं।
जो तड़पना जानते हैं उनको ही तड़पाएंगे।।

तोड़कर जो अहदो पैमां हो गए गोशा-नशीं[2]।
आ के किस मुंह से वो हमको अपना मुंह दिखलाएंगे।।

ठोकरें खाते हुए हमको ज़माना हो गया।
और कितने दिन तेरी राहों में ठोकर खाएंगे।।

जब हमारी भी नीयत भर जाएगी शेख़े हरम।
आप ही की तरह हम भी पारसा हो जाएंगे।।

मत सुनाओ अपनी रुदादे अलम उनको 'मयंक'।
सुनके वह भी तीर दिल पर तंज़ के बरसाएंगे।।

---

1. खुदी, 2. कोने में बैठना।

हम जो गुल फ़रोशों को तख़्त पर बिठा देंगे।
यह चमन की अज़मत को ख़ाक में मिला देंगे।।

आंधियों के झोंकों को रोशनी से ज़िद सी है।
शम्अ हम जलाएंगे और वह बुझा देंगे।।

मत करो उजालों की इनसे कोई फ़रमाइश।
रोशनी जो मांगोगे बस्तियां जला देंगे।।

उस तरफ़ के झोंके गर आ गए गुलिस्तां में।
नफ़रतों के शोलों को और भी हवा देंगे।।

क्या कहें अभी से हम आसमां नशीनों से।
क्या हमारे दिल में है एक दिन बता देंगे।।

धो रहे हैं हाथ अपने वह भी बहती गंगा में।
दूध की जो कहते थे नदियां बहा देंगे।।

जो 'मयंक' रहते हैं आठ-दस क़दम आगे।
हमको आगे जाने को कैसे रास्ता देंगे।।

ग़म में डूबी हुई फ़िज़ा क्यों है।
चेहरा-चेहरा बुझा-बुझा क्यों है।।

दिन कयामत के दूर हैं फिर भी।
लब पे सबके खुदा खुदा क्यों है।।

हम ग़रीबों के शहर में आख़िर।
नारवा[1] बात भी रवा[2] क्यों है।।

सामने रख के आईना कोई।
ऐब औरों के देखता क्यों है।।

प्यार में दो क़दम अरे तौबा।
इतना मुश्किल ये रास्ता क्यों है।।

जिसकी आदत में है ख़फ़ा रहना।
उससे क्यों पूछिए ख़फ़ा क्यों है।।

तर्के उलफ़त के बाद भी क़ायम।
यह मुहब्बत का सिलसिला क्यों है।।

पास जिसके है नेमते दुनिया।
मेहरबां उस पे ही खुदा क्यों है।।

आज को रख नज़र में अपनी 'मयंक'।
कल के बारे में सोचता क्यों है।।

1. जो प्रचलित न हो, 2. प्रचलित।

दिल की लगी को मेरी मिटाने को आ गए।
आंखों में अश्क आग बुझाने को आ गए।।

चौखट पे कारसाज़े[1] ज़माना की बदनसीब।
बिगड़ा हुआ नसीब बनाने को आ गए।।

वह जो तमाम उम्र रहे मुझसे दूर दूर।
कांधे पे मेरी लाश उठाने को आ गए।।

जो दौर था ख़िज़ां का वही दौर है हनूज़[2]।
कहने को दिन बहार के आने को आ गए।।

जिनके लिए मैं इश्क में दीवाना हो गया।
वह भी मेरा मज़ाक़ उड़ाने को आ गए।।

जलते ही शम्अ बज़्म में परवाने ऐ 'मयंक'।
रस्मे तअल्लुक़ात निभाने को आ गए।।

---
1. अल्लाह, 2. अब भी।

मतलब के सब रिश्ते-नाते मतलब का याराना है।
वह जो इतनी बात न समझे पागल है दीवाना है।।

जो लिक्खा है वरक़-वरक़ पर गीता और रामायण में।
मानो तो है एक हक़ीक़त वरना फिर अफ़साना है।।

अच्छे दिनों के सब थे साथी सबसे रस्मो राह मगर।
वक़्त पड़े पर किसने किसको जाना है पहचाना है।।

आपका मसकन[1] सहने गुलिस्तां आप नसीबों वाले हैं।
दीवाने की क़िस्मत में तो सहरा है वीराना है।।

अपनी रौ में निकल गए सब अपनी हद से कोसों दूर।
भूल गए यह बात परिंदे, लौट के घर भी जाना है।।

कौन चलेगा साथ हमारे हम हैं मुफ़लिस हम नादार[2]।
जिसके हाथ में धन-दौलत है उसके साथ ज़माना है।।

कल यह जाकर कहां बसेंगे इनको क्या मालूम 'मयंक'।
बंजारों की क़िस्मत में तो दर-दर ठोकर खाना है।।

1. वेदी, बैठने की जगह, 2. ग़रीब।

जिसे कोई शिकवा-शिकायत नहीं है।
ये तय है उसे तुमसे उलफ़त नहीं है।।

वो तुम हो कि हम हों या हो और कोई।
किसे ज़िंदगी से मुहब्बत नहीं है।।

हुआ मैं जो बर्बाद मेरा मुक़द्दर।
मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है।।

ये इसरार दिल का कहूं बात दिल की।
मगर मुझको इसकी इजाज़त नहीं है।।

हमें मिल गई जो तेरे ग़म की दौलत।
किसी चीज़ की अब ज़रूरत नहीं है।।

कहो तो मैं उड़ जाऊं लेकर कफ़स[1] को।
मफ़र[2] की कोई और सूरत नहीं है।।

'मयंक' इतना क्या कम है इस ज़िंदगी में।
कि मुझसे किसी को अदावत नहीं है।।

1. पिंजरा, 2. छुटकारा।

दिल रो रहा है फिर भी मिरी आंख नम नहीं है।
दुनियां समझ रही है मुझे कोई ग़म नहीं है।।

देते हो हर जगह क्यूं ईमान की दुहाई।
तुमसे किसी का जाहिद ईमान कम नहीं है।।

घबरा के मुश्किलों से जां अपनी कोई दे दे।
दस्तूरे ज़िंदगी में ये तो रकम नहीं है।।

हर हाल में हमें तो रहना है इसपे कायम।
ये क़ौल है हमारा तेरी क़सम नहीं है।।

तलकीने पारसाई बस अपने पास रखिए।
ये मयकदा है वाइज़ सहने हरम नहीं है।।

दुर्वेश हो कि सूफ़ी, हो शेख़ या बरहमन।
तेरी नज़र में कोई अब मोहतरम नहीं है।।

सांसें भी उसकी उखडीं लग़ज़ीदा हैं कदम भी।
क्यूं राहे ज़िंदगी में कोई ताज़ा दम नहीं है।।

अहले क़लम की सफ़ में वो भी 'मयंक' आए।
शे'रो सुख़न में जिनकें ज़ोरे क़लम नहीं है।।

ऐ निगहबां यह बहारों का ज़माना हम से है।
गुंचा-ओ गुल का चमन में मुस्कुराना हमसे है।।

चार तिनके हमने ही लाकर चुने हैं शाख़ पर।
चार तिनकों से नहीं, आशियाना हमसे है।।

है हमारे दम से क़ायम इस ज़मान का वजूद।
हम नहीं हैं इस ज़माने से, ज़माना हमसे है।।

यूं निभाती जा रही है राहो रस्मे दोस्ती।
गर्दिशे दौरां का जैसे दोस्ताना हमसे है।।

इस तरह कुछ सुन रहे हैं दूसरों का हाले ग़म।
उनके ग़म का जैसे वाबस्ता फ़साना हमसे है।।

हुस्ने सीरत हुस्ने सूरत दोनों के क़ायल हैं हम।
उसकी जिसका इक तआर्रुफ़ ग़ायबाना हमसे है।।

जो निगाहों को भली लगती है सब की ऐ 'मयंक'।
शायरों की वह अदाए शायराना हम से है।।

आ गए हैं अब शरारे गुलसितां तक देखिए।
उड़ के यह पहुंचे न अपने आशियां तक देखिए।।

कोई बतलाओ कि लेकर अपना सिर जाएं कहां।
क़ातिलों की हुक्मरानी है जहां तक देखिए।

एक मुद्दत से टिकी है एक मरकज़[1] पर निगाह।
आईना उम्मीद का आखिर कहां तक देखिए।।

मिल नहीं सकता कहीं उसकी बुलंदी का जवाब।
झुक गया क़दमों में जिसके आसमां तक देखिए।।

रोशनी से जिनकी उरियानी झलकती है वहां।
वह अंधेरे आ गए मेरे मकां तक देखिए।।

जिसको कहने के लिए बेताब था मैं ऐ 'मयंक'।
आ गई वह बात अब उसकी ज़बां तक देखिए।।

1. बिंदु।

मुश्किलें पैदा करें बारीक-बीनों[1] के लिए।
यह मुनासिब तो नहीं है नुक्ताचीनों[2] के लिए।।

दूर मंज़िल और राहे शौक़ की दुश्वारियां।
यह सफ़र आसां नहीं है नाज़नीनों[3] के लिए।।

जिसके बाशिंदे हों एख़लाक़ो मुहब्बत के अमीं।
ऐसी इक दुनिया बने पर्दा नशीनों के लिए।।

कैसे कोई रख सकेगा उनको साबित आजकल।
नामुनासिब जब फ़िज़ा है आबगीनों के लिए।।

जिनके हर पतवार का लिक्खा खुदा का नाम हो।
नाखुदा की क्या ज़रूरत उन सफ़ीनों के लिए।।

गो मशीनी दौर हावी आदमी पर हो गया।
आदमी फिर भी ज़रूरी है मशीनों के लिए।।

मैंने माना हुस्ने सूरत भी है लाज़िम ऐ 'मयंक'।
हुस्ने-सीरत[4] भी ज़रूरी है हसीनों के लिए।।

---

1. सूझबूझ वाले, 2. ऐब निकालने वाले, 3. नाज वाले, 4. दर्पण।

अपने पहलू में जगह उसको खुदा देता है।
नेकियां करके जो इंसान भुला देता है।।

अपने साए में पनपने नहीं देता कमबख़्त।
नन्हें पौधों को बड़ा पेड़ दबा देता है।।

एक मरक़ज़[1] पे किसी को नहीं रहने देता।
वक़्त इंसान की औक़ात बता देता है।।

छीन लेता है कभी मुंह का निवाला अल्लाह।
और कभी देता है तो हद से सिवा देता है।।

पहले आंखों पे बिठाता है बड़े प्यार के साथ।
फिर वही शख़्स निगाहों से गिरा देता है।।

यूं तो देता है हर इक शख़्स वफ़ाओं का सिला।
बद्दुआ कोई मुझे, कोई दुआ देता है।।

अपने मुंसिफ़ का भी है सबसे निराला अंदाज़।
जुर्म किसका है मगर किसको सज़ा देता है।।

नाम लेता ही नहीं चैन से जीने वाला।
तुझको हर शख़्स मुसीबत में सदा देता है।।

एक हम हैं कि जो अश्कों से बुझाते हैं 'मयंक'।
एक वह है कि जो शोलों को हवा देते हैं।।

---

1. बिंदु।

रस्मे मुहब्बत आम बहुत है।
लेकिन यह बदनाम बहुत है।।

तेरी ज़ुल्फ़ों के साये में।
चैन बहुत आराम बहुत है।।

कैसे पूरा कर ले कोई।
उम्र है कम और काम बहुत हैं।।

माना तुम हो शोहरत वाले।
मेरा भी तो नाम बहुत है।।

क्या जाने क्यों ज़ाहिद[1] तुमको।
फ़िक्रे ग़मे-अय्याम बहुत है।।

तेरी निगाहों के मैं सदक़े।
मुझको एक ही जाम बहुत हैं।।

जाम अभी मत 'मयंक' उठाओ।
दूर अभी तो शाम बहुत है।।

1. परहेजगार।

दोस्तों की दोस्ती का ज़िक्र चलने दीजिए।
आस्तीं में सांप पलते हैं तो पलने दीजिए।।

आप ज़हमत मत उठाएं ख़ुद-ब-ख़ुद बुझ जाएंगे।
चार दिन के हम दिये हैं हम को जलने दीजिए।।

आप यूं ही लूटिए फ़सले बहारां के मज़े।
हाथ अरबाबे-चमन[1] मलते हैं मलने दीजिए।।

आपके दामन से उलझें, कब गवारा है मुझे।
मुझको इन गुस्ताख़ कांटों को कुचलने दीजिए।।

रफ़्ता रफ़्ता छोड़ देंगे ख़ुद ही वह बैसाखियां।
अपने पैरों पर उन्हें कुछ दूर चलने दीजिए।।

रुख़ किए महलों की जानिब एक मुद्दत हो गई।
ज़ाविया सूरज को अपना अब बदलने दीजिए।।

आपको तन्हा न छोड़ूंगा ग़मों की धूप में।
आपका साया हूं अपने साथ चलने दीजिए।।

कब तलक डाले रहेंगे रुख़ पे ज़ुल्फ़ों की नक़ाब।
बदलियों से चांद को बाहर निकलने दीजिए।।

फिर उठाऊंगा क़दम मैं जानिबे मंज़िल 'मयंक'।
ठोकरें खाकर मुझे पहले संभलने दीजिए।।

---

1. चमन के लोग।

मेरे आंसू अपनी पलकों पर सजाता कौन है।
दूसरों के वास्ते ज़हमत उठाता कौन है।।

एक कठपुतली की सूरत हैं तमाशागाह में।
नाचते हैं हम मगर हमको नचाता कौन है।।

किसके लब पर गुलसितां में है तबस्सुम की लकीर।
सिर्फ़ गुंचों के सिवा अब मुस्कुराता कौन है।।

जिसके दिल में दर्द है उसको सुनाने आए हैं।
दास्तां बेदर्द दुनिया को सुनाता कौन है।।

यूं तो जांबाज़ों की मक़तल[1] में है इक लंबी क़तार।
देखना है सबसे पहले सिर कटाता कौन है।।

वह अगर रूठे हैं तो रूठे रहें अपनी जगह।
बिन बुलाए अंजुमन में उनकी, जाता कौन है।।

चाहे तुम हो, या कि हम, या और कोई हो 'मयंक'।
बेग़रज़ क़दमों पे उसके सिर झुकाता कौन है।।

---

1. क़त्लगाह।

वरक़-वरक़ पे अदब के निशान छोड़ गए।
जनाबे 'मीर' भी कैसी ज़बान छोड़ गए।।

ज़मीन छोड़ गए आसमान छोड़ गए।
जब आई मौत तो सारा जहान छोड़ गए।।

हमारे गांव में ऐसे भी लोग रहते थे।
मिली हवेली तो कच्चा मकान छोड़ गए।।

अभी भी उनकी सदा गूंजती है कानों में।
सदाक़तों का जो अपने बयान छोड़ गए।।

ब फ़ैज़े आबला[1] पाई रहे मुहब्बत में।
क़दम-क़दम पे हम अपने निशान छोड़ गए।।

चमन के वास्ते हम अपनी जान दे देंगे।
वो और होंगे कि जो गुलसितान छोड़ गए।।

गिरानी होगी हमें नफ़रतों की वह दीवार।
उदू[2] जो मेरे तेरे दरमियान छोड़ गए।।

मैं उनके वास्ते कुछ भी तो कर नहीं पाया।
जो मेरे वास्ते दुनिया जहान छोड़ गए।।

उन्हीं के नक़्शे कदम पर चलेंगे हम भी 'मयंक'।
जो चाहतों की यहां दास्तान छोड़ गए।।

---

1. छाले, 2. दुश्मन।

होगी नसीब होगी किसी दिन ख़ुशी मुझे।
देती रही फ़रेब यही ज़िंदगी मुझे।।

यूं अजनबी की तरह गुज़रती है पास से।
जैसे कि जानती ही नहीं है ख़ुशी मुझे।।

जो ख़िज़्रे-रह[1] के नाम से मशहूर हो गया।
कल मिल गया था राह में वह आदमी मुझे।।

कहते हैं जिसको प्यार में मेराज[2] इश्क़ की।
लाई है उस मुक़ाम पे दीवानगी मुझे।।

हंसते हैं लोग मुझ पे तो इसमें बुरा है क्या।
आती है अपने हाल पे ख़ुद ही हंसी मुझे।।

सहने चमन में एक गुलेतर के वास्ते।
दुनिया से मोल लेनी पड़ी दुश्मनी मुझे।।

किसका हयातो[3] मौत पे है ज़ोर ऐ 'मयंक'।
लाई हयात और क़ज़ा ले चली मुझे।।

---

1. रास्ता दिखाने वाला, 2. बुलंदी, 3. ज़िंदगी।

अलग रहना उसे मंजूर क्यों है।
खुदा मालूम मुझसे दूर क्यों है।।

ये मुख्तारे जहां से कोई पूछे।
कि इंसा इस क़दर मजबूर क्यों है।।

हजारों इन्क़लाब आए हैं लेकिन।
मुहब्बत का वही दस्तूर क्यों है।।

जवानी चांदनी है चार दिन की।
वो अपने हुस्न पर मग़रूर क्यों है।।

उतर जाएगा इक झटके में नशा।
वो दौलत के नशे में चूर क्यों है।।

वहां हर रुख़ पे ताबानी है लेकिन।
हर इक चेहरा यहां बेनूर क्यों है।।

'मयंक' इतना मसीहाओं से पूछो।
हर इक ज़ख्मे जिगर नासूर क्यों है।।

ये ऊंचाइयां तूने पाई कहां से।
ज़मीं पूछती है सवाल आसमां से।।

मुहब्बत ने तेरी वो चक्कर चलाया।
वहीं आ गए फिर चले थे जहां से।।

वही इम्तिहां मेरा लेने चले हैं।
जो गुज़रे नहीं हैं किसी इम्तिहां से।।

सूकूं इसमें रहके न पाया कभी भी।
मुहब्बत है फिर भी हमें आशियां से।।

पसे-मर्ग[1] आए हैं पुर्सिश को मेरी।
तुझे ज़िंदगी अब मैं लाऊं कहां से।।

कहे शौक़ से बेवफ़ा उनको दुनिया।
मगर हम कहें क्यों ये अपनी ज़बां से।।

'मयंक' आप ही इसके आशिक़ नहीं हैं।
मुहब्बत है हमको भी उर्दू ज़बां से।।

1. मौत के बाद।

आ गए फिर दिल दुखाने के लिए।
तोहमतें झूठी लगाने के लिए।।

है सलामत उनका ग़म ऐ ख़िज़्रे[1]-रह।
रास्ता हमको दिखाने के लिए।।

चुन रहे हैं चार तिनके आज भी।
आशियां अपना बनाने के लिए।

जिसने छीनी मुस्कुराहट अब वही।
कह रहा है मुस्कुराने के लिए।।

एक पत्थर का कलेजा चाहिये।
दोस्ती उससे निभाने के लिए।।

जा रहे हो जिसने तुमको ग़म दिया।
हाले दिल अपना सुनाने के लिए।।

कर लिया सब कुछ तो अपने वास्ते।
कीजिए कुछ तो ज़माने के लिए।।

ग़म अगर अपना छुपाना है तो फिर।
मुस्कुराओ मुस्कुराने के लिए।।

दीप अश्कों के जलाओ ऐ 'मयंक'।
जश्ने दीवाली मनाने के लिए।।

---

1. रास्ता दिखाने वाला।

जिसे तेरी निगाहों का मयस्सर जाम हो जाए।
मुझे पूरा यकीं है वह उमर ख़य्याम हो जाए।।

हमें मालूम है आंखों में अपनी डाल कर काजल।
जिधर से भी निकल जाएं वो क़त्ले आम हो जाए।।

तुम्हारे साथ फिर पीने पिलाने का मज़ा लूंगा।
ज़रा यह धूप ढल जाए सुनहरी शाम हो जाए।।

हसीं फूलों के तन वाले हसीं फूलों के मन वाले।
नज़र जिस पर पड़े तेरी वही बदनाम हो जाए।।

मुहब्बत को छुपाना है तो ख़्वाबों में चले आओ।
तुम्हारी बात रह जाए हमारा काम हो जाए।।

यही मेरी तमन्ना है यही कोशिश है अब मेरी।
मुहब्बत का चलन सारे जहां में आम हो जाए।।

'मयंक' इन पर यक़ीं करने से पहले ध्यान यह रखना।
कहीं हावी न तुम पर गर्दिशे ऐयाम हो जाए।।

मेरी नज़रों को ऐसी रसाई[1] न दे।
सामने तू रहे और दिखाई न दे।।

मेरे घर तक रहें मेरी रुसवाइयां।
ऐ मुहब्बत मुझे जग हंसाई न दे।।

ऐसे बेटे के होने से क्या फ़ायदा।
अपनी मां को जो लाकर कमाई न दे।।

चैन से हूं मैं तर्के मुहब्बत के बाद।
फिर मुहब्बत की मुझको दुहाई न दे।।

पेश करना सबूत उसके इजलास में।
हर जगह जाके अपनी सफ़ाई न दे।।

मय गुसारी को आए हैं शेख़िहरम।
जाम उठाने मगर पारसाई न दे।।

हर बला से क़फ़स में, मैं महफ़ूज हूं।
मेरे सय्याद मुझको रिहाई न दे।।

आजकल ऐसे नक़्क़ारख़ाने में हूं।
ख़ुद सदा मुझको अपनी सुनाई न दे।।

ऐ 'मयंक' ऐसी आंखों से क्या फ़ायदा।
देखना जिसको चाहूं दिखाई न दे।।

---

1. पहुंच।

मिटेंगे फ़ासले कब दरमियां से।
ये धरती पूछती है आसमां से।।

कोई पूछे तो मीरे कारवां से।
कि मंज़िल दूर है कितनी यहां से।।

मिले अम्नो अमां मुझको कहां से।
अदावत बर्क़ को है आशियां से।।

हमारा इम्तिहां लेकर तो देखें।
डराते हैं जो हमको इम्तिहां से।।

तुम्हीं यह फ़ैसला करके बता दो।
सुनाएं दास्तां तुमको कहां से।।

किसी ने कान उनके भर दिए हैं।
नज़र आते हैं वह भी बदगुमां से।।

वही मुजरिम है जो है आज मुंसिफ़।
ये बिलकुल साफ़ है मेरे बयां से।।

समर वाले शजर घर में नहीं हैं।
तो पत्थर सहने में आए कहां से।।

'मयंक' उनको ज़माना जानता है।
वो क्या हैं क्यों कहूं अपनी ज़बां से।।

अश्क बहते हैं तो बहने दीजिए।
हाले ग़म इनको भी कहने दीजिए।।

मत बिठाएं अपनी पलकों पर मुझे।
अपने क़दमों ही में रहने दीजिए।।

छीनिए मत मेरे होठों की हंसी।
हर सितम हंस-हंस के सहने दीजिए।।

काटकर रख दें ज़बां, पहले मगर।
कहने जो आया हूं कहने दीजिए।।

इश्क़ में जो हैं बराबर के शरीक।
कुछ सितम उनको भी सहने दीजिए।।

मैं चलूं बैसाखियों पर आपकी।
यह इनायत मुझ पे रहने दीजिए।।

रुख़ हवाओं का बदलिए मत 'मयंक'।
रेत की दीवार ढहने दीजिए।।

दर्द दिल से जुदा न हो जाए।
ज़िंदगी बे मज़ा न हो जाए।।

आदमी के सुलूके बेजा से।
आदमीयत फ़ना न हो जाए।।

मरने देगी न ज़िंदगी जब तक।
कर्ज़ इसका अदा न हो जाए।।

मुझको डर है शुरु-ए-उलफ़त में।
इब्तिदा[1] इन्तिहा[2] न हो जाए।।

देखकर मेरी मुस्कुराहट को।
कोई मुझसे ख़फ़ा न हो जाए।।

ख़ुदग़रज को ये फ़िक्र रहती है।
दूसरों का भला न हो जाए।।

दूसरों का भला बजा लेकिन।
मेरे हक़ में बुरा न हो जाए।।

रंग दुनिया का देख के ऐ 'मयंक'।
बावफ़ा बेवफ़ा न हो जाए।।

1. शुरुआत, 2. अति।

चलूं प्यार का मैं तो परचम उठाए।
ये दुनिया अगर मरे आड़े न आए।।

जमाने के मैं काम आता रहूंगा।
जमाना मेरे काम आए न आए।।

मुसाफिर को है सिर्फ़ साए से मतलब।
हो मस्जिद का साया कि मंदिर के साए।।

हमै उनसे जब से मोहब्बत हुई है।
न वो मुस्कराए न हम मुस्कराए।।

यही काम है ख़ालिके दो जहां का।
बनाए मिटाए, मिटाए बनाए।।

हंसूंगा मैं अब अपनी बर्बादियों पर।
कहां तक कोई अपने आंसू बहाए।।

उसूले मोहब्बत न समझाओ उसको।
समझ कर भी जिसकी समझ में न आए।।

अदीवों के लहज़े में उरियानियां है।
'मयंक' अब कहां वो इशारे कनाए।।

सारी दुनिया को जो तीरगी दे गए।
वह अंधेरे मुझे रोशनी दे गए।।

उनका अंदाज़े चारागरी देखिए।
मेरा ग़म ले गए और ख़ुशी दे गए।।

जानते थे हमें कुछ मिलेगा नहीं।
फिर भी दर पर तेरे हाज़िरी दे गए।।

यूं तो शबनम ने आंसू बहाए मगर।
गुंचा-ओ-गुल को इक ताज़गी दे गए।।

ले गए छीनकर मेरा सब्रो सुकूं।
मुस्तक़िल मुझको दर्दे-सरी[1] दे गए।।

और क्या नज़्र करते वो तुझको वतन।
देने वाले तुझे ज़िंदगी दे गए।।

उन ख़यालों को मशकूर हूं मैं 'मयंक'।
जो ज़बां को मेरी चाशनी दे गए।।

---
1. सिर का दर्द।

कौन जीता है यहां अपनी ख़ुशी के वास्ते।
जी रहे हैं ज़िंदगी हम ज़िंदगी के वास्ते।।

दिल्लगी ही दिल्लगी में तोड़ मत देना इसे।
दिल तुम्हें हमने दिया है दिल्लगी के वास्ते।।

ख़ुद-ब-ख़ुद उगते नहीं हैं ज़िंदगी की राह में।
आदमी बोता है कांटे आदमी के वास्ते।।

दूर रहकर दोस्ती परवान चढ़ती है कहां।
क़ुरबतें भी हैं ज़रूरी दोस्ती के वास्ते।।

क़ैद कोई भी नहीं है धर्म की ईमान की।
मयकदे का दर खुला है हर किसी के वास्ते।।

प्यार में बख़्शा है जिसने मुझको जीने का शऊर।
ज़िंदगी में वक़्फ़[1] कर दूंगा उसी के वास्ते।।

गर हमें तौफ़ीक़ देता देने वाला ऐ 'मयंक'।
हम भी इक सूरज उगाते रोशनी के वास्ते।।

---

1. सौंपना।

न अपनों के क़रीं रहिए न गैरों, के क़रीं रहिए।
मयस्सर हो जहां दिल को सुकूं जाकर वहीं रहिए।।

तक़ाज़ा वक़्त का है छोड़ दें अब कूचाए जानां।
मगर दिल है कि कहता है बहरसूरत यहीं रहिए।।

न होगी अंजुमन सूनी किसी की रोज़े महशर तक।
उसे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि रहिये या नहीं रहिए।।

पता खुद देगी बढ़कर आपका जलवों की ताबानी।
निगाहें ढूंढ लेंगी आपको चाहे कहीं रहिए।।

यही सिखला रहा है आपको दौरे सियासत क्या।
हमारी आस्तीं में बन के मारे-आस्तीं[1] रहिए।।

ज़माना वह नहीं है आजकल जो था कभी पहले।
मुनासिब है कि अपने घर में ही गोशा[2] नशीं रहिए।।

'मयंक' उनकी निगाहें लुत्फ़ होंगी आप पर इक दिन।
झुकाए उनकी चौखट पर यूं ही अपनी जबीं रहिए।।

---

1. आस्तीन का सांप, 2. कोने में बैठने वाला।

वह जो बनने-संवरने लगे।
आईने रक़्स करने लगे।

पानी-पानी हुई कहकशां।
जब भी वह मांग भरने लगे।।

दहशतों का वो आलम कि हम।
अपने साये से डरने लगे।

फिर मुहब्बत ने अंगड़ाई ली।
हादसे फिर गुज़रने लगे।।

उसने की फिर नमक-पाशियां[1]।
ज़ख़्म जब दिल के भरने लगे।।

वह तअस्सुब का तूफ़ां उठा।
लोग बेमौत मरने लगे।।

मेरे क़ातिल मेरे क़त्ल का।
मुझ पे इल्ज़ाम धरने लगे।।

आईना तो नहीं थे मगर।
टूट कर हम बिखरने लगे।।

बात वाले थे जो भी 'मयंक'।
बात कहकर मुकरने लगे।।

---

1. नमक छिड़कने वाला।

मुख़ालिफ दौरे हाज़िर की हवा है।
चिराग़े ज़ीस्त फिर भी जल रहा है।।

जिन्हें औक़ात का मतलब सिखायां
वो कहते हैं तेरी औक़ात क्या है।।

न हल होगा कभी तुमसे ये वाइज़।
निगाहो दिल का हज़रत मसअला है।।

करम फ़रमाइए हम पर भी एक दिन।
जहां वालो ! हमारा भी खुदा है।।

है लहजा तो बहुत ही सख़्त उसका।
मगर वह आदमी दिल का भला है।।

मुझे कहती है क्यों दीवाना दुनिया।
कोई बतलाओ मुझको क्या हुआ है।।

उसूलों की न कीजे बात हम से।
मुहब्बत जंग में सब कुछ रवा है।।

कहां ले आई है मुझको मुहब्बत।
कोई हमदम न कोई हमनवा है।।

वो दिल लेकर करेगा बेवफ़ाई।
'मयंक' इतना तो हमको भी पता है।।

चाहत की तराज़ू पर हर लफ़्ज़ को तौलेंगे।
अंदाज़े तग़ज़्ज़ुल[1] में फिर आप से बोलेंगे।।

दुनिया पे मुहब्बत का हम राज़ न खोलेंगे।
तन्हाई में हंस लेंगे तन्हाई में रो लेंगे।।

हम सुख के नहीं तेरे, दुख-दर्द के साथी हैं।
अश्कों को तेरे, अपने दामन में समो लेंगे।।

मज़दूर हैं हम, हमको जब नींद सताएगी।
अख़बार बिछा लेंगे फुटपाथ पे सो लेंगे।।

सूली पे चढ़ा दो तुम या ज़हर का प्याला दो।
जो सच के पुजारी हैं वह झूठ न बोलेंगे।।

एहसास हमें होगा जब अपने गुनाहों का।
हम अश्के निदामत से दामन को भिगो लेंगे।।

रक्खेंगे क़दम अपने जो राहे तअस्सुब में।
तलवों में 'मयंक' अपने वह ख़ार चुभो लेंगे।।

---

1. ग़ज़ल का रंग।

अगर अपने हाथों में कशकोल लेंगे।
तो ख़ैरात हम तुझसे अनमोल लेंगे।।

बदल जाएंगे ग़म के लम्हे खुशी में।
ज़रा देर तुमसे जो हंस-बोल लेंगे।।

अगर प्यार से दो घड़ी साथ बैठो।
तो दिल में पड़ी हर गिरह खोल लेंगे।।

ज़माने से हम हैं ज़माना है हम से।
ज़माने से क्यों दुश्मनी मोल लेंगे।।

खुलूसों वफ़ा कैसे सीखेंगे बच्चे।
अगर अपने हाथों में पिस्तोल लेंगे।।

नज़र आएगी जब रिहाई की सूरत।
परिंदे अपने पंजों से पर खोल लेंगे।।

'मयंक' उनके आंसू गिरे जो ज़मीं पर।
तो मोती समझकर उन्हें रोल लेंगे।।

जबसे उनका साथ नहीं है।
जीने में वह बात नहीं है।।

मत बांटो ख़ानो में उसको।
उसकी कोई ज़ात नहीं है।।

उसकी बज़्मे नाज़ में जाऊं।
मेरी यह औक़ात नहीं है।।

सूरज पर छाया है कुहरा।
दिन है दिन यह रात नहीं है।।

सब्र आएगा आते-आते।
घबराने की बात नहीं है।।

पलकों पर है भीड़ ग़मों की।
खुशियों की बारात नहीं है।।

प्यासे खेतों की क़िस्मत में।
सावन है बरसात नहीं है।।

रिज़्क जो लिक्खा है क़िस्मत में।
यह कोई ख़ैरात नहीं है।।

तुम भी 'मयंक' अब हुए पराए।
जाओ कोई बात नहीं है।।

तेरी बस्ती में लगता मन नहीं है।
यहां लोगों में अपनापन नहीं है।।

लगाएं हम कहां तुलसी का पौधा।
हमारे घर में अब आंगन नहीं है।।

खिलौने तब कहां थे खेलने को।
खिलौने हैं तो अब बचपन नहीं है।।

किधर से आ रहे हैं घर में पत्थर।
पड़ोसी से मेरी अनबन नहीं है।।

जलाते हैं इसे हर साल हम सब।
मगर मरता कभी रावन नहीं है।।

धड़कने को धड़कते दिल हैं फिर भी।
दिलों में प्यार की धड़कन नहीं है।।

करो मत अपने जिस्मों की नुमाइश।
ये भारत है कोई लन्दन नहीं है।।

क्यों अपने आप से अन्जान है वह।
क्या उसके हाथ में दर्पण नहीं है।।

करे तन्क़ीद[1] जो शेरों पे मेरी।
'मंयक' इतना किसी में फ़न नहीं है।।

---

1. आलोचना।

नक़ाबे रुख उठाकर जब कोई पहलू बदलता है।
तो यूं लगता है जैसे सुब्हे दम सूरज निकलता है।।

पहुंच जाता है हंसता-खेलता वह अपनी मंज़िल पर।
जो राहे ज़ीस्त में लेकर ख़ुदा का नाम चलता है।।

ज़रूरी है यहां पर सुन्नते आदम अदा करना।
तभी जा कर कोई इंसान के पैकर में ढलता है।।

तुम्हीं बतलाओ आख़िर झूमकर बादल किधर बरसे।
कभी यह गांव जलता है कभी वह गांव जलता है।।

बसेरा जिस पे लेते हों परिंदे आ के रातों में।
शजर वह ही चमन में फूलता है और फलता है।।

लगाए चेहरे पर चेहरा कोई बज़्मे सियासत में।
कहीं चेहरा बदलने से किसी का दिल बदलता है।।

ये कैसा शौक़ है अहले चमन का, ऐ निगहबानो।
कोई कलियां मसलता है कोई गुंचा मसलता है।।

खिलौने दे के वादों के न मेरे दिल को बहलाओ।
कहीं ऐसे खिलौनों से किसी का दिल बहलता है।।

'मयंक' अब तुम बदलते वक़्त में ख़ुद को बदल डालो।
बहारों के दिनों में हर शजर कपड़े बदलता है।।

किसी पैमां शिकन से अहदो पैमां करके पछताए।
दिले मुज़्तर की बर्बादी का सामां करके पछताए।।

मदद मिलते ही जिन लोगों ने आंखें फेर लीं हमसे।
हम उन एहसां फ़रामोशों पे एहसां करके पछताए।।

तड़प देती थी इक तुरफ़ा सुकूं हमको मुहब्बत में।
हम अपने दर्द हाय दिल का दरमां करके पछताए।।

सुनाने को सुना तो दी कहानी जौरे बेजा की।
सरे महफ़िल मगर उनको पशेमां करके पछताए।।

परेशां देखकर उनको हुई हमको परेशानी।
तुम्हारी जुल्फ़े पुरख़म को परेशां करके पछताए।।

न सोचा हमने है यह ख़ारोख़स का आशियां अपना।
बफ़ूरे[1] शौक़ में जश्ने चिराग़ां करके पछताए।।

न रास आई हमारी गुफ़्तगू फ़ितना परस्तों को।
बहारों में भी हम ज़िक्रे बहारां करके पछताए।।

नवाज़िश ऐ 'मयंक' आख़िर हुई फिर दश्ते वहशत[2] की।
जुनूं में हम रफ़ू जेबो गरेबां करके पछताए।।

---

1. जयादती, 2. दीवानगी का हाथ।

हमारे अश्क हमें रास्ता दिखाएंगे।
अंधेरी शब में ये जुगनू ही काम आएंगे।

अगर न दैरो हरम हमको रास आएंगे।
तो अपने दिल को इबादतकदा बनाएंगे।।

किसे ख़बर थी बुरे दिन भी ऐसे आएंगे।
सफ़ीने आ के किनारे पे डूब जाएंगे।।

ज़मीन बंटने से टुकड़े अगर दिलों के हुए।
तेरा लगान भी ऐ भाई हम चुकाएंगे।।

क़बीले वालो न घबराओ वक़्त आने पर।
गिरा पसीना तुम्हारा तो ख़ूं बहाएंगे।।

ज़हर लपेट के तुम चाशनी में दो तो सही।
बड़ी ख़ुशी से तुम्हारे, फ़रेब खाएंगे।।

हर एक शाख़ पे सय्याद की नज़र हो 'मयंक'।
तो फिरे परिंदे कहां आशियां बनाएंगे।।

जो बाहर न निकलेंगे घर में रहेंगे।
हवाओं के वो भी असर में रहेंगे।।

लुटेंगे सरे राह हम कितने दिन तक।
कदम अपने कब तक सफ़र में रहेंगे।।

है सारा जहां जिनका, उनको ये ज़िद है।
हमेशा किराये के घर में रहेंगे।।

भला कैसे फिर उनकी पहचान होगी।
जो वो भी लिबासे बशर में रहेंगे।।

जिन्होंने अदब को नई ज़िंदगी दी।
वो अहले अदब की नज़र में रहेंगे।।

न अंदाज़ जीने का बदलेगा अपना।
हमेशा इसी कर्रोफ़र में रहेंगे।।

न मांगेंगे हम बालों पर दूसरों से।
'मयंक' अपने ही बालों पर रहेंगे।।

जख़्म देखे आपने वह जो मेरे तन पर लगे।
वह नहीं देखे जो मेरे जिस्म के अंदर लगे।।

गो ज़मीं में दफ़्न हो जाना है सबको एक दिन।
काम ऐसा कीजिए जो आसमां से सिर लगे।।

जो मिज़ाजे मौजे तूफ़ां से बहुत थे आशना।
वह सफ़ीनें[1] ही फ़क़त आकर किनारे पर लगे।।

चाहे गुरुद्वारा हो गिरजा हो कि हों दैरो हरम।
सबके-सब उस लामकानी के हमें तो घर लगे।।

सोचता हूं दुश्मनों से दोस्ती कर लूं मगर।
जो पुराने दोस्त हैं उन दोस्तों से डर लगे।।

दूर उड़कर क्या गया ख़ुद से बिछड़ कर रह गया।
जब मेरी घायल तमन्नाओं को यारो ! पर लगे।।

जिनकी जानिब हो न पाईं उसकी नज़रें ऐ 'मयंक'।
उन सभी लोगों के अश्के ग़म से चेहरे तर लगे।।

---

1. बेड़ा।

आपकी आमद से सारे मसअले हल हो गए।
आपको देखा तो हम ख़ुशियों से पागल हो गए।।

कल तलक जो आपकी चाहत ने बख़्शे थे मुझे।
वह सभी मंज़र मेरी आंखों से ओझल हो गए।।

रूठ कर मैं आपसे चल तो दिया था कल मगर।
दो क़दम भी चल न पाया पांव बोझिल हो गए।।

क़त्ल जब भाई को भाई का गवारा हो गया।
घर के आंगन भी हमारे तब से मक़तल[1] हो गए।।

तुमसे मिलते ही मुझे एहसास यह होने लगा।
जज़्ब जैसे आज में, बीते हुए कल हो गए।।

डर गया टूटे हुए छप्पर में बेचारा ग़रीब।
आसमां पर जब कभी घनघोर बादल हो गए।।

कैकटस पर फूल आए बाग़ में जब से 'मयंक'।
रंग-बिरंगी तितलियों के पंख घायल हो गए।।

---
1. क़त्लगाह।

यह ज़ौक़े तजस्सुस की क्या खूब कहानी है।
तलुवों में मेरे छाले और आंखों में पानी है।।

आंसू को मेरे लेकर दामन पे ज़रा देखो।
जम जाए तो यह ख़ूं है, बह जाए तो पानी है।।

क्या कोई करे शिकवा इन ज़ोहरा जबीनों से।
दिल लेके दग़ा देना यह रीत पुरानी है।।

जिस हाल में जीते हैं उस हाल में जी लेंगे।
क्यों हमको मिटाने की ज़िद आपने ठानी है।।

समझी है न समझेगी यह बात मुहब्बत की।
क्या इससे कोई उलझे यह दुनिया दिवानी है।।

यूं खुल के न मिलिए अब पहले की तरह सबसे।
वह दौरे लड़कपन था यह दौरे जवानी है।।

क्या मैंने बिगाड़ा है दुनिया का 'मयंक' आख़िर।
जिसको भी यहां देखो वह दुश्मने जानी है।।

वो चिट्ठी में तो तुझको प्यार का पैग़ाम लिखता है।
लिफ़ाफ़े पर मगर मेरे अदू का नाम लिखता है।।

उन्हीं को मयकशी के दोस्तो आदाब आते हैं।
कि जिन रिंदों की क़िस्मत साक़ी-ए-गुलफ़ाम लिखता है।।

उसे मालूम है, है कौन कितने ज़र्फ़ का मालिक।
वो कमज़रफो की क़िस्मत में कहां आराम लिखता है।।

सरापा जब बयां करता है तेरा कोई भी शायर।
तेरे रुख़ को सहर और गेसुओं को शाम लिखता है।।

उसे तो रोशनाई की ज़रूरत ही नहीं, जब से।
फ़साना अपने ख़ूं से आशिक़े नाकाम लिखता है।।

है ताबे इब्तिदा उसके, है ताबे इंतिहा उसके।
वही आग़ाज लिखता है, वही अंजाम लिखता है।।

मज़ाके बादानोशी बढ़ गया है इस क़दर उसका।
'मयंक' अपने को अब यारो उमर ख़य्याम लिखता है।।

हाथ यारी का बढ़ाते हुए डर लगता है।
प्यार हर इक से जताते हुए डर लगता है।।

छीनकर मुझसे कहीं तोड़ न डाले ज़ालिम।
आईना उसको दिखाते हुए डर लगता है।।

मेरे घर में भी कहीं लोग न फेंकें पत्थर।
पेड़ आंगन में लगाते हुए डर लगता है।।

लोग दर पर भी तेरे आते हैं तलवार लिये।
सिर को सजदे में झुकाते हुए डर लगता है।।

इश्क़ का अब तो पतंगों ने चलन छोड़ दिया।
शम्अ महफ़िल में जलाते हुए डर लगता है।।

और मग़रूर न हो जाए सितम पर अपने।
हाले ग़म उसको सुनाते हुए डर लगता है।।

कैसे पुर्सिश[1] को 'मयंक' आएंगे वह रात गए।
जिनको ख़्वाबों में भी आते हुए डर लगता है।।

---

1. हाल-चाल पूछना।

रंगत तेरे जिस्म की ऐसी ऐ जन्नत की हूर।
दूध में जैसे घोल दिया हो चुटकी भर सिंदूर।।

देख के तेरी मस्त अदाएं और यौवन भरपूर।
हर दिलवाला दिल देने को हो जाए मजबूर।।

उनकी बेटी ने कितने ही घर बरबाद किए।
सोच रहे हैं बैठे-बैठे आज मियां अंगूर।।

मेरे मुंह से अपने हुस्न की सुनकर तुम तारीफ़।
किसको पता था हो जाएगी इस दरजा मग़रूर।।

प्यार में मजनूं लैला बन गया लैला बन गई क़ैस।
मानो न मानो इसको मगर यह क़िस्सा है मशहूर।।

जल्दी से तुम प्यार का मरहम लेकर आ जाओ।
ऐसा न हो ये जख़्म जिगर के बन जाए नासूर।।

सजधज के वो देख रहे हैं प्यार से आईना।
उनके तू नज़दीक न जाना ऐ चश्मे-बद्दूर।।

कैसे उससे प्यार निभाएं सोचो ज़रा 'मयंक'।
जिसके शहर में ज़ुल्म ही ढाना प्यार का हो दस्तूर।।

क्यूं हर इक शख़्स की आंखों में नमी लगती है।
बात छोटी है मगर मुझको बड़ी लगती है।।

यूं तो हर पेड़ दिया करता है साया लेकिन।
मां के आंचल की मुझे छांव घनी लगती है।।

एक मरक़ज पे नहीं रहती है क़ायम कमबख़्त।
ज़िंदगी फूल कभी नागफनी लगती है।।

फूल बनकर यही ढाएगी क़यामत इक दिन।
आज गुलशन में जो मासूम कली लगती है।।

बज़्मे रिंदां में कभी आके तो देखो वाइज़।
दुख़्ते रज़ शीशे में मानिंदे परी लगती है।।

ये जो उठता है धुआं ज़ेरे शजर रह-रहकर।
एक चिन्गारी तहे ख़ाक दबी लगती है।।

क्या बताऊं मैं तुम्हें ये तो उसी से पूछो।
बानिए बज़्म को क्यूं मेरी कमी लगती है।।

क्या करे कोई यहां अच्छे-बुरे की पहचान।
दौरे हाज़िर में तो नेकी भी बदी लगती है।।

चाहे जैसा भी हो कहने का तरीक़ा ऐ 'मयंक'।
जो बुरी बात है वो सबको बुरी लगती है।।

इक ऐसा भी रिश्ता होता है जो तश्तअज़ बाम नहीं होता।
कुछ रिश्ते नाम के होते हैं और कुछ का नाम नहीं होता।।

बाज़ारे मोहब्बत में जाना तो आंख मूंद कर ले आना।
इक दिल का ही सौदा ऐसा है जो सौदा ख़ाम नहीं होता।।

ये शहरे मोहब्बत है अपना तहज़ीबो तमद्दुन का मरक़ज़।
रहती है ज़ुलेख़ा परदे में यूसुफ़ नीलाम नहीं होता।।

मालूम है मुझको भी वाइज़ मत इश्क़ का हासिल समझाओ।
आग़ाज तो अच्छा होता है अच्छा अंजाम नहीं होता।।

गर जाशे जुनुं के कहने पर तज़दीदे मोहब्बत करता मगर।
सब काम तेरे ख़ुद बन जाते और तू नाकाम नहीं होता।।

ये कंघी क्या संवारेगी तुम्हारी ज़ुल्फे पुरख़म को।
हमारे हाथ हाज़िर हैं, इजाज़त दो अगर हम को।।

मोहब्बत में सिवा रोने के कुछ हासिल नहीं होता।
बहुत समझाया मैंने हर तरह से चश्मे-पुरनम को।।

गुनह करने की उनकी कोई मस्लेहत होगी।
ख़ुदा ने इसलिए एजाज़े अव्वल बख़्शा आदम को।।

जो होनी थी वो रुसवाई तो वापिस आ नहीं सकती।
बताकर राज़े दिल पछता रहा हूं अपने महरम को।।

बनामे आशिकी थोड़ा सहारा तुम अगर दे दो।
मना लेंगे बहरसूरत तुम्हारी ज़ुल्फ़े बरहम को।।

उन्हें तुम ज़िंदग़ी की तल्ख़ियों से क्यूं डराते हो।
जो पीते आए हैं साग़र में भरके तल्ख़िए ग़म को।।

गिले-शिकवे उठाकर ऐ 'मयंक' अब ताक पर रखिए।
न जाया कीजिए चाहत के इस रंगीन मौसम को।।

न वो आदाब पीने के, न पीने का चलन साक़ी।
भरी है बेशऊरों से ये तेरी अंजुमन साक़ी।।

हरम और दैर से आकर जो मयख़ाने में बैठा हूं।
ये मेरी होशमंदी है कि है दीवानापन साक़ी।।

जो मुमकिन हो तो दे इक जाम अपनी चश्मे मयगूं से।
मैं हो जाऊंगा ताज़ा दम मिटेगी हर थकन साक़ी।।

शराबे सरफ़रोशी का नशा कुछ और होता है।।
जगा देता है दिल में जज़्ब-ए-हुब्बे वतन साक़ी।।

कहां हर रिंद को पीने की तू तालीम देता है।
हर इक मयख़ार को आता नहीं पीने का फ़न साक़ी।।

यहां तफ़रीक़े ख़ासो आम की बातें नहीं होतीं।
यहां पीते हैं मिलकर साथ धरती और गगन साक़ी।।

यहां मयख़्वार अपने ख़ून से करते हैं आपाशी।
तभी तो फूलता फलता है अपना ये चमन साक़ी।।

इसे दोज़ख बना डाला 'मयंक' अहले सियासत ने।
कभी फिरदौस के मानिंद था अपना वतन साक़ी।।

एक दिन ऐ चश्मेतर आ जाएगा।
मुझको हंसने कर हुनर आज जाएगा।।

गर कहूंगा मैं ज़माने को बुरा।
इक ज़माना मेरे सिर आ जाएगा।।

खुद-ब-खुद झुक जाएगी मेरी जबीं।
सामने जब उसका दर आ जाएगा।।

उल्टे पांवों लौट जाएगी अजल।
वक़्ते रुख़सत वो अगर आ जाएगा।।

आह में तासीर होनी चाहिए।
खुद ही खिंच कर चारागर आ जाएगा।।

ले ही डूबेगा उसे उसका ग़रूर।
अर्श से वो फ़र्श पर आ जाएगा।।

इश्क़ में गर वो हुए रुसवा 'मयंक'।
सारा इल्ज़ाम आप पर आ जाएगा।।

ख़्वाहिशे नातमाम क्या मानी।
चार दिन का क़याम क्या मानी।।

दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं तो फिर।
लब पै अल्लाह का नाम का मानी।।

जब मुहब्बत नहीं तुम्हें मुझसे।
ये पयामो-सलाम क्या मानी।।

अगले पल का नहीं भरोसा जब।
इस क़दर ताम झाम क्या मानी।।

अपने अपनों के ज़ेरे लब सागर।
दाव-ए-इज्नेआम क्या मानी।।

ज़िंदगी में मेरी अंधेरा है।
शाम के बाद शाम क्या मानी।।

कुफ्र वालों की बज़्म में ऐ 'मयंक'।
ये हलालो हराम क्या मानी।।

मौत के पैकर में ढलने दीजिए।
चींटियों के पर निकलते हैं निकलने दीजिए।।

आग लग जाएगी पाकिस्तान में
हिंद को शोले उगलने दीजिए।।

ख़ाक़ हो जाएगा इक दिन खुद-ब-खुद।
हमसे जो जलते हैं जलने दीजिए।।

जोश जो दिल में हमारे है उसे।
जंग के पैकर में ढलने दीजिए।।

देखता है ख़्वाब जो कश्मीर का।
उसको ख्वाबों में ही पलने दीजिए।।

ठोकरें खा कर गिरेंगे मुंह के बल।
झूठ की राहों पर चलने दीजिए।।

जो मेरी आंखों में चुभते हैं 'मयंक'।
मुझको वो कांटे कुचलने दीजिए।।

दिल में वो अज़्में सफ़र रखते नहीं।
जो सलामत वालों पर रखते नहीं।।

रु-ब-रू रखते है अपने आईना।
दूसरों पर हम नज़र रखते नहीं।।

वो न होंगे काम यारो जो मरा।
जो तिरी चौखट पे सिर रखते नहीं।।

पार कर पाते न दरिया आग का।
हौसला दिल में अगर रखते नहीं।।

क्या करें, खानाबदोशों की तरह।
दोश पर हम अपना घर रखते नहीं।।

सिर्फ़ डरते हैं ख़ुदा के खौफ़ से।
और किसी का दिल में डर रखते नहीं।।

शे'र वो भी कह रहे हैं एक 'मयंक'।
शायरी का जो हुनर रखते नहीं।।

सरहदों तक आ गए हैं राहज़न आगे बढ़ो।
लूट लेंगे वरना ये सारा चमन आगे बढ़ो।।

जंग में मिलती नहीं जिनकी सुजाअत की मिसाल।
दाद देने को उन्हें अहले सुखन आगे बढ़ो।।

पाक के नापाक इरादों को कुचलने के लिए।
ऐ जवानो, बांधकर सिर से कफ़न आगे बढ़ो।।

इनके सब वादे हैं झूठे, हर चलन मशकूक है।
तोड़ने को दुश्मनोंक का मक्रोधन आगे बढ़ो।।

अपनी फितरत से कभी ये बाज आ सकते नहीं।
घात में बैठे हुए हैं अहरमन आगे बढ़ो।।

ख़ुद-ब-ख़ुद बढ़ के तुम्हारी फतह चूमेगी क़दम।
दिल में लेके जज्बए-हुब्बे वतन आगे बढ़ो।।

देश की मिट्टी को माथे से लगाकर ऐ 'मयंक'।
दुश्मनों के ख़ूं से करने आचमन आगे बढ़ो।।

दर्दे शबे फ़िराक़ रुलाए तो क्या करूं।
तेरे बग़ैर चैन न आए तो क्या करूं।।

ऐ ज़ाहिदो बताओ कि तौब के बाद भी।
नज़रों से अपनी कोई पिलाए तो क्या करूं।।

दो भाइयों के बीच का ऐ दोस्तो निफ़ाक़।
खुद अपने घर को आग लगाए तो क्या करूं।।

कर तो रहा हूं उसको मनाने की कोशिशें।
बातों में मेरी फिर भी न आए तो क्या करूं।।

सब कुछ गवां के कोई सियासत के नाम पर।
बरबादियों का जश्न मनाए तो क्या करूं।।

इंसान अपनी जाति मफ़ादात के लिए।
इंसानियत का ख़ून बहाये तो क्या करूं।।

वाकिफ़ हूं सब अपने ख़तों ख़ाल से 'मयंक'।
आईना मुझको कोई दिखाए तो क्या करूं।।

यूं तो फूलों के पास रहते हैं।
फिर भी अक्सर उदास रहते हैं।।

वो भी मिलते हैं अजनबी की तरह।
जो मेरे घर के पास रहते हैं।।

क्या ख़िजां क्या बहार उनके लिए।
जो सदा बेलिबास रहते हैं।।

जाने क्यों महवे यास रहते हैं।
और पहरो उदास रहते हैं।।

होश वालों के शहर में आखिर।
लोग क्यों बदहवा रहते हैं।।

जी यही ग़मज़दों की बस्ती है।
हां यहीं ग़म शनास रहते हैं।।

ज़िंदगी से मयंक कोसों दूर।
मौत के आस-पास रहते हैं।।

बुज़ुर्गों की तालीम का ये असर है।
कुशादा है दिल और नज़र मोतवार है।।

हैं रखे में नफ़रत की कांटे ही कांटे।
मुहब्बत की फूलों भरी राह गुज़र है।।

सरे राह लूटा है उल्फत में जिसने।
ग़ज़ब है ख़ुदा का वही हमसफ़र है।।

ये ख़्वाहिश है दुनिया को जी भर के देखूं।
क़याम अपना लेकिन सयहां मुख़्तसर है।।

मैं अपने गुनाहों की क्या दूं सफाई।
सज़ा दें कि बख़्शें हुज़ूर आप पर है।।

ज़ुबां से वो करते हैं इनकार उल्फ़त।
नज़र कह रही है तअल्लुफ़ मगर है।।

चले आएंगे कच्चे धागे से बंधकर।।
मुहब्बत मयंक उनको तुमसे अगर है।।

नूर बनके वो जो अपनी ज़िंदगी में आ गए।
हम अंधेरों से निकलकर रौशनी में आ गए।।

तेरे चलते आशिक़ी के ऐ गुनाहे अव्वली।
हम फरिश्ते थे लिबास आदमी में आ गए।।

पड़ गई शायद इसी से दोस्तदारी में दरार।
कुछ ग़लत नुक्ते हमारी दोस्ती में आ गए।।

वुसअते नज़री ने आखिर हमको वा तौफ़ीक दी।
अनकहे मजमूं हमारी शायरी में आ गए।।

हम तो ये कह कर गए थे अवन आएंगे कभी।
दिल नहीं माना तो फिर तेरी गली में आ गए।।

लुट रहा है हर क़दम पै रहख़ाने ज़िंदगी।
रहज़नी के तौर जबसे रहवरी में आ गए।।

और भी तो मर्तबा वाले हैं महफिल में मयंक।
ख़ाक़सारी के चलन क्यों आप ही में आ गए।।

छन रही है साक़िए गुल्फ़ाम से।
कट रही है इन दिनों आराम से।।

इंतक़ामन लब पे शोला रख लिया।
इस कदर जलते हैं मेरे नाम से।।

मयकदे में पांव क्यूं रखती नहीं।
पूछिए ये गर्दिशे-अय्याम से।।

कौन क्या करता है ये मत देखिए।
काम रखिए आप अपने काम से।।

आरिज़ो गेसू तुम्हारे ज़िंदाबाद।
सुबह से मतलब न मुझको शाम से।।

आ गई मंजिल करीब अपने मगर।
डर रहा हूं दूरिए दो गाम से।।

जानता हूं प्यार का हासिल 'मयंक'।
क्यूं डराते हो मुझे अंजाम से।।

कोई ग़म से निढाल है तो है।
ज़िंदगी का सवाल है तो है।।

क़तल करते हो तलवार से।
गिर गए अपने मैयार से।।

मंज़िलें गर्द होती गईं।
वक़्त की तेज़ रफ़्तार से।।

रक्स में आ गई ज़िंदगी।
तेरी पायल की झंकार से।।

कोई चेहरा शगुफ़्ता नहीं।
लोग लगते हैं बीमार से।।

शौक़ से दीजिए गालियां।
हां मगर दीजिए प्यार से।।

सिर को टकरा न रे हम कहीं।
नाउम्मीदी की दीवार से।।

मोल लाए हैं ग़म ऐ मयंक।
हुस्न वालों के बाज़ार से।।

तुमको ख़ुशी पसंद हमें ग़म पसंद है।
तुम ही बताओ हौसला किसका बुलंद है।।

होगी नसीब उसको ही मेराजे आशिक़ी।
हाथों में जिसके प्यार की ऊंची कमंद।।

मुझको किसी के दर्द का एहसास क्यों न हो।
सीने में मेरे भी तो दिले दर्दमंद है।।

अच्छे-बुरे को ख़ैर से पहचानता है वो।
पागल है वो ज़रूर मगर होशमंद है।।

लाऊं कहां से दिल के लिए दिलनशी 'मयंक'।
शहरे वफ़ा में प्यार का बाज़ार बंद है।।

लब नहीं खुलते ये कहने के लिए।
क्या हमीं हैं जुल्म सहने के लिए।।

ज़ब्त की हद में ये रह सकते नहीं।
अश्क होते हैं बहने के लिए।।

एक जुमला बदसलूकी का बहुत।
प्यार की दीवार ढहने के लिए।।

हम भी गुलशन के परवानों में हैं।
दो जगह हमको भी रहने के लिए।।

उनका जलवा देखते ही रह गऐ।
आए थे क्या-क्या न कहने के लिए।।

एक पत्थर का कलेजा चाहिए।
हादसाते ग़म को सहने के लिए।।

हर कोई आज़ाद है अब तो 'मयंक'।
अपनी-अपनी रौ में बहने के लिए।।

नज़्मे दौरां है कि चलता जा रहा है।
वक़्त हाथों से निकलता जा रहा है।।

एक नन्हा सा उम्मीदों का दिया क्यूं।
जाने कब से दिल में जलता जा रहा है।।

हश्र के असबाब सारे सामने हैं।
हश्र फिर भी है कि टलता जा रहा है।।

हाथ क्या आया उसी से जाके पूछो।
वो बशनू जो हाथ मलता जा रहा है।।

तजुर्बा काम आ रहा है आदमी के।
ठोकरें खा के संभलता जा रहा है।।

क्या कहे तहज़ीब की उरियानियों का।
दोष से आंचल भी ढलता जा रहा है।।

हर मुहक़्क़िक़ तेरे बारे में 'मयंक' अब।
ज़ाविया अपना बदलता जा रहा है।।

घरागों की फरावानी बहुत है।
तेरी महफ़िल में ताबांनी बहुत है।।

बहुत मुश्किल है जीना इस जहां में।
मगर मरने में आसानी बहुत है।।

बहाएं क्यूं न हम अश्के नियायत।
गुनाहों पै पशेमानी बहुत है।।

बहर आलम है तारी बेक़रारी।
बहर सूरत परेशानी बहुत है।।

ये तीरों तंजजिद्दत के बजा हैं।
मगर लहजे में उरियानी बहुत है।।

बहुत मुश्किल है जीना चार दिन भी।
यहां दो दिन भी मेहमानी बहुत है।।

'मयंक' अब अजनबी लगती है हमको।
जो सूरत जानी-पहचानी बहुत है।।

आप क्यूं हाथ मलने लगे।
मेरी शोहरत से जलने लगे।।

उनको इतना सहारा दिया।
पांव पै अपने चलने लगे।।

उनसे मिलने की इतनी खुशी।
अश्क आंखों से ढलने लगे।।

जब जवानी ने अंगड़ाई ली।
दिल में अरमांक मचलने लगे।।

ये तसन्ना की हद देखिए।
लोग चेहरे बदलने लगे।।

खुद को जब चोट गहरी लगी।
तो बांसों उछलने लगे।।

फूल तो फूल हैं ऐ 'मयंक'।
लोग कलियां मसलने लगे।।

मुफ़लिसी के बीज लो फिर बो गई पागल हवा।
मेरे खेतों से उड़ाकर ले गई बादल हवा।।

उनको जब देखा कि वो हैं माइले तहज़ीबे नौ।
उनकी पलकों से उड़ाकर ले गई काजल हवा।।

इसको हम फैशन कहें या शौक़े उरियानी कहें।
दोश से हर नाज़नी के हो गया आंचल हवा।।

उनके कूचे में चला करती है इस अंदाज़ से।
बांध कर आई हो जैसे पांव में पायल हवा।।

दीदनी है वह शरारत और शोखी का समा।
एक चंचल से मिला करती है जब चंचल हवा।।

क्या हुआ जो आज उनके लब पे तोल पड़ गये।
अपनी अपनी बज़्म में जो बांधते थे कल हवा।।

मुद्दतों के बाद आई भी तो गुलशन में 'मयंक'।
पत्ते-पत्ते को शजर के कर गई घायल हवा।।

पहले प्यादो को वज़ीरों में बदलकर देखिए।
फिर बिसाते ज़िंदगी पर चाल चलकर देखिए।।

चंद लोगों के बदलने से न बदलेगा निज़ाम।
गर बदल सकते हैं तो दुनिया बदलकर देखिए।।

शमा कहती है मज़ा लेने को सीज़े इश्क का।
आप भी परवाने की मानिंद जलकर देखिए।।

नर्म कलियों को मसलकर नाज़ मत फरमाइए।
है अगर हिम्मत तो कांटों को कुचलकर देखिए।।

जिंदगानी का हसीं चेहरा नज़र आ जाएगा।
ग़म के इस माहौल से बाहर निकलकर देखिए।।

इक उचटती सी नज़र से आएगा कब कुछ नज़र।
आईने में ज़ीस्त के खुद को संभलकर देखिए।।

क्या मिला दैरो हरम से ज़िंदगी को ऐ 'मयंक'।
दो क़दम अब मैकदे की सिमथ चलकर देखिए।।

मोहब्बत में दिलो जां वार करके।
बहुत पछताए उनसे प्यार करके।।

मैं रहज़न से शिकायत क्या करूं जब।
मुझे लूटा गया होशियार करके।।

तुम्हारे हाथ क्या आया बताओ।
हमारी ज़िंदगी दुश्वार करके।।

चले आओ कि मैं बैठा हुआ हूं।
ज़मीने आशिक़ी हम वार करके।।

मिला क्या हज़रते मूसा से पूछो।
किसी के हुस्न का दीदार करके।।

भटकते थे जो तेरी जुस्तजू में।
बहुत ख़ुश है तेरा दीदार करके।।

दिले नादां की जिद रखनी पड़ेगी।
किसी से इश्क का इज़हार करके।।

मोहब्बत में 'मयंक' इक बेवफ़ा से।
बहुत पछताए आंखें चार करके।।

ख़ुशी कहते हैं जिसको उस ख़ुशी से दूर रहते हैं।
वो नादां हैं जो दौलत के नशे में चूर रहते हैं।।

खिला देते हैं हरसू फूल मेहनत के पसीने से।
महक उठती है वो धरती जहां मज़दूर रहते हैं।।

जो बख़्शा है सितमकारों ने उस माहौल से पूछो।
ख़ुशी के दौर में भी लोग क्यूं रंजूर रहते हैं।।

दिए जो जख़्म उनकी बेरुख़ी ने मुझको चाहत में।
मिरे सीने में बनकर अब वही नासूर रहते हैं।।

'मयंक' आख़िर बताएं तो बताएं क्या सबब इसका।
कि क्यूं हम मयकदे में बिन पिए मख़मूर रहते हैं।।

मुसलसल मोहब्बत में बेदाद करके।
मिला क्या तुम्हें हमको बरबाद करके।।

कुछ ऐसा करो इस ज़माने की ख़ातिर।
कि रोए ज़माना तुम्हें याद करके।।

न आया मदद को कोई भी हमारी।
कई बार देखा है फ़रियाद करके।।

ख़ुदा जाने क्यों मालिके दो जहां ने।
किया हमको बरबाद आबाद करके।।

न दिल को रही जब रिहाई की ख़्वाहिश।
गया तब हमै कोई आज़ाद करके।।

सितम जितना चाहे कोई हम पै तोड़े।
यहां दिल को बैठे हैं फ़ौलाद करके।।

मिलेगी न दिल को मेरे शादमानी।
कभी भी 'मयंक' उनको नाशाद करके।।

ग़ज़ल

मैकदे में फिर न छलकेगा कोई भी जाम क्या।
सूनी-सूनी सी रहेगी इसकी हर इक शाम क्या।।

चैन से जीने की ख़ातिर ये तगौदो कब तलक।
ज़िंदग़ी को मिल न पाएगा कभी आराम क्या।।

करके तर्के रस्मों रह क्या भूल जाओगे मुझे।
फिर न आएगा तुम्हारे लब पे मेरा नाम क्या।।

हाथ आईं मेरे जिसजा इश्क़ में नाकामियां।
फिर वहीं ले जा रहा है ऐ-दिले नाकाम क्या।।

क्या इरादा है तिरा-ए-ज़ज़्बर जोशे जुनूं।
मुझको कर देगा ज़माने भर में तू बदनाम क्या।।

क्या मोहब्बत में न होगी क़ुर्बतें उनकी नसीब।
उम्र भर यूं ही रहेंगी, दूरिए दोगाम क्या।।

वक़्त पे जिसके हमेशा काम आया हूं 'मयंक'।
वो भी देगा वक़्त पड़ने पर मुझे दुश्नाम क्या।।

ग़ज़ल

फिर आस्तीं में शौक़ से कालों को पालिए।
दांतों से उनके पहले मगर विष निकालिए।।

हमदर्दियों का आज जमाना नहीं, रहा।
अब नेकियों की बात समंदर में डालिए।।

हमराह अपने चलने का फिर कीजिए सवाल।
पहले हमारे पांवों के कांटे निकालिए।।

उस बेवफा के साथ निभाना मुहाल है।
क्यूं खामख्वाह खुद को मुसीबत में डालिए।।

रिंदों के साथ बैठिए आकर जनाबे शैख़।
और तल्खिए-हयात को शीशे में ढालिए।।

गुज़रेगा कल भी ख़ैर से इसका यक़ीन क्या।
जो काम आज करना है, कल पै न टालिए।।

ढाएगा कौन आपको ताउम्र ऐ 'मयंक'।
खुद अपना बोझ कांधों पे अपने संभालिए।।

ग़ज़ल

रू-ब-रू फ़ौजें भी हैं, और अम्न का एलान भी।
सुलह के आसार भी हैं, ज़रा का इम्कान भी।।

कैसे क़ायम रख सकेगा कोई उनसे रस्मोराह।
मक्रोफ़न का जो है पैकर, फितरतन शैतान भी।।

वो कि अमरीका हो, पाकिस्तान हो, या चीन हो।
अब किसी से कम नहीं है अपना हिंदुस्तान भी।।

जंग के मैदां की जानिब जब बढ़ाते हैं क़दम।
साथ में चलते हैं लेकर आंधियां तूफ़ान भी।।

अपने इस दावे को हम दो बार साबित कर चुके।
जीतना आता है हमको जरा का मैदान भी।।

दिल में गर भड़का हमारे जज़्बए ग़ैज़ो ग़ज़ब।
हम मिटा देंगे तुझे भी, तेरी झूठी शान भी।।

वक़्त पड़ने पर वतन के काम आए सब 'मयंक'।
ये तक़ाज़ा धर्म का है, दीन का फरमान भी।।

रोक दो लिल्लाह कत्लें आम को।
मत करो बदनाम तुम इस्लाम को।।

साथ देंगी हर क़दम वैसाखियां।
छोड़ दो तुम इस ख़याले ख़ाम के।।

जिसने दो-दो बार ग़ारत कर दिया।
मत सदा दो फिर उसी अंजाम को।।

जो क़ुराने पाक ने तुमको दिया।
क्यों भुला बैठे हो उस पैग़ाम को।।

तुम पै थूकेगा तुम्हारा ही ज़मीर।
छोड़ भी दो इस घिनौने काम को।।

तुम रहो अच्छे पड़ोसी की तरह।
भूल जाओ दुश्मनी के नाम को।।

एक ही सिक्के के दो रूप हैं 'मयंक'।
प्यार से देखो रहीमो राम को।।

उम्र बीत जाती है जिसको घर बनाने में।
आग क्यूं लगाते हो उसके आशियाने में।।

ख़ास इक तअल्लुक़ है इक़ ग़ज़ब का रिश्ता है।
ज़ीस्त की कहानी में इश्क़ के फ़साने में।।

कब मुझे गवारा है मुफ़लिसी की रुसवाई।
मुंह छुपाए बैठा हूं मैंक ग़रीबख़ाने में।।

रात भर चला आख़िर खेल ये मोहब्बत का।
कट गई शबे-रंगीं रूठने-मनाने में।।

दोस्त तो बना लेना हर किसी को है आसां।
मुश्किलें हज़ारों हैं दोस्ती निभाने में।।

हमको छू नहीं पातीं तल्ख़ियां ज़माने की।
आके जब से बैठे हैं हम शराबख़ाने में।।

मशवरा ये मेरा है भूल के भी मत करना।
तज़किरा वफ़ाओं का बेवफ़ा ज़माने में।।

क्या करें 'मयंक' अपना कुछ भी बस नहीं चलता।
आग हम लगा देते वरना इस ज़माने में।।

उसे जबसे मोहब्बत हो गई है।
वो लड़की ख़ूबसूरत हो गई है।।

मोहब्बत अब तिजारत हो गई है।
ये शो केसों की ज़ीनत हो गई है।।

मताए-ज़िंदगानी बेच डाली।
अमानत में ख़्यानत हो गई है।।

कही मुझको बुरा ओर मेरे मुंह पर।
तुम्हारी इतनी जुर्रत हो गई है।।

ख़फ़ा हमसे है सब ए-शाकगोई।
सभी को हमसे नफ़रत हो गई है।।

हमारे इश्क़की क्या जाने कैसे।
ज़माने भर में शोहरत हो गई है।।

खरी-खोटी 'मयंक' आओ सुनाओ।
मुझे सुनने की आदत हो गई है।।

वहदत का पीके जाम ग़ज़ल कह रहा हूं मैं।
लेके ख़ुदा का नाम ग़ज़ल कह रहा हूं मैं।।

लफ़्जों में अपने भरके तसव्वुफ़ की चाशनी।
ऐ रहमते तमाम ग़ज़ल कह रहा हूं मैं।।

बुगूज़ो हसद मिटाओ रहो मेलजोल से।
देने को ये पयाम, ग़ज़ल कह रहा हूं मैं।।

हासिल हुआ जो मीर को ग़ालिब को दाग़ को।
पाने को वो मुक़ाम ग़ज़ल कह रहा हूं मैं।।

ये दौर है बदी का मगर फिर भी ए 'मयंक'।
होने को नेकनाम ग़ज़ल कह रहा हूं मैं।।

है जबानों पे दशहत के ताले, पांवों में ख़ौफ़ की बेड़ियां हैं।
बोलने पर भी है कैद आइद चलने फिरने पे पाबंदियां हैं।।

कोई बतलाओ उनवान क्या दूं मैं हदीसे ग़में ज़िंदगी को।
हर वरक़ पै है अश्कों के छींटें खूं से लिक्खी हुई सुर्ख़िया हैं।।

क़ुर्ब में उनके हैं फिर भी हमको लुत्फ़ मिलता नहीं क़ुबर्तों का।
दूर रहकर भी जो दूरियां थीं पास रहकर वही दूरियां हैं।।

उजड़ी-उजड़ी है हर ज़िंदगी, कोई चेहरा शगुफ़्ता नहीं है।
इशरतों के ये कूंचे नहीं हैं ग़म के मारों की ये बस्तियां हैं।।

किसलिए ए मयंक अपने पे चाहतों का हम इज्ज़ाम ले लें।
शोख़ियां ये हमारी नहीं हैं दीदओ-दिल की गुस्ताखियां हैं।।

हमने ज़िंदादिली दिखाई तो।
बात इंसाफ की उठाई तो।।

मुद्दतों बाद ही सही लेकिन।
याद उनकी हमारी आई तो।।

आप जिसकी वफा पे नाज़ां हैं।
की उसी ने ही बेवफाई तो।।

हश्र के रोज़ जुर्मे उल्फ़त की।
उसने मांगी अगर सफाई तो।।

आप जीते, बजा सही लेकिन।
तीरगी रौशनी में आई तो।।

ये भी तौहीने मयकदा होगी।
प्यास अश्कों से ग़र बुझाई तो।।

तौबा पीने से कर तो लू लेकिन।
रास आई न पार साई तो।।

कहके दीवाना अपनी महफिल में।
उसने मेरी हंसी उड़ाई तो।।

तुम जला तो रहे हो शम्अ 'मयंक'।
आंधियां न रास आईं तो।।

आप जब याद आने लगे।
जख़्मे दिल मुस्कुराने लगे।।

जब भी आंखों से आंखें मिलीं।
बिन पिए लड़खड़ाने लगे।।

हमने ऐसा भी क्या कह दिया।
आप आंखें चुराने लगे।।

दफ़्न सब कुलफ़तें हो गईं।
और हम भी ठिकाने लगे।।

जिनकी यारी पै नाजां थे हम।
वो भी दामन छुड़ाने लगे।।

क्या है दुनिया समझ तो गए।
हमको लेकिन ज़माने लगे।।

जब सताने लगी दूरियां।
मेरे नज़दीक आने लगे।।

ढाके इंसानियत के महल।
आकबत वो बनाने लगे।।

शर्मिंदा जब हूं अपनी खताओं के वास्ते।
कैसे उठाऊं हाथ दुआओं के वास्ते।।

मुद्दत से कर रहे हैं रफ़ूगर की हम तलाश।
लोगों की चाक-चाक कबाओं के वास्ते।।

अब ज़िंदगी से कोई मुहब्बत नहीं मुझे।
मैं जी रहा हूं उनकी जफ़ाओं के वास्ते।।

दौरे जफ़ाओं जौर से भी हम वफ़ा-शनास।
क्या क्या न कर रहे हैं वफ़ाओं के वास्ते।।

कुछ और आग उगलेगा मौसम का कल मिज़ाज।
तरसेंगे लोग ठंडी हवाओं के वास्ते।।

हम वार कर रहे हैं सियासत की सरज़मीं।
दोनों ही अपने-अपने खुदाओं के वास्ते।।

कोई जोहरा जमाल है तो है।
आप अपनी मिसाल है तो है।।

गुलसितां पायमाल है तो है।
ये बहारों का हाल है तो है।।

बातों-बातों में दिल चुरा लेना।
ये हसीनों की चाल है तो है।।

मैं ख़ुदा उसको कह नहीं सकता।
आदमी बेमिसाल है तो है।।

प्यार करना गुनाह है वाइज़।
आपका यह ख़्याल है तो है।।

मौतक़िद हम नहीं तेरे फ़न के।
तुझको हासिल कमाल है तो है।

तर्क कर ली जो दोस्ती हमने।
उनको इसका मलाल है तो है।।

अपनी किस्मत में है फ़क़ीरी 'मयंक'।
तू अगर मालामाल है तो है।।

क्यूं सियासत की करमफ़रमाई है गुजरात पर।
सीधे-सीधे आइए ऐ मोहतरम इस बात पर।।

गर तअस्सुब का फ़िज़ाओं में ज़हर घुलता रहा।
हम न क़ाबू पा सकेंगे मुश्तइल जज़बात पर।।

हाथ गंदे करके भी कुछ हाथ आएगा नहीं।
किसलिए कीचड़ उछालें हम किसी की जात पर।।

दामने सब पर चमकते हैं जो जुगनूं की तरह।
आदमी के खून के छींटें हैं काली रात पर।।

कब तलक उलझे रहेंगे आरिज़ो गेसू में आप।
शे'र कहना है तो कहिए आज के हालात पर।।

कब तलक सहते रहेंगे आपका बेजा गुरूर।
आपको लाना पड़ेगा आपकी औक़ात पर।।

इस कदर बेहिस हुई है ज़िंदगी अब तो 'मयंक'।
ओस जैसे पड़ गई है अपने अहसासात पर।।

जब से उनकी निगाहें करम हो गईं।
ज़िंदगी और भी मुहतरम हो गई।।

जब भी उभरी तबस्सुम की लब पर लकीर।
इंतिक़ामन मेरी आंख नम हो गई।।

जिस जगह भी मिले तेरे नक़्शे क़दम।
एहतरामन जबीं मेरी ख़म हो गई।।

भर लिए जब भी दामन में अश्कों के फूल।
ज़िंदगी रश्के बाग़े इरम हो गई।।

क्या रक़ीबों की काम आ गईं साज़िशें।
क्यों इनायत तेरी मुझ पे कम हो गई।।

कोई जुंबिश नहीं कोई हरकत नहीं।
ज़िंदगी अपनी तस्वीर ग़म हो गई।।

करके वादा न आया कोई जब 'मयंक'।
ज़िंदगी मेरी अश्कों में ज़म हो गई।।

क़ायनात

दीवान-ए-मयंक

आ गए जबसे वह निगाहों में।
फूल बिखरे हुए हैं राहों में।।

दूर रहता था मुझसे जो कल तक।
भर लिया आज उसने बांहों में।।

शहरे ख़ूबा में बस गए वह भी।
जो कि रहते थे ख़ानक़ाहों में।।

यूं तो जीना मुहाल था लेकिन।
ज़िंदगी कट गई गुनाहों में।।

था वो जाहो-जलाल क़ातिल का।
ख़लबली मच गई गवाहों में।।

तू सज़ा दे कि बख़्श दे हमको।
आ गए ले तेरी पनाहों में।।

एक मसनद के वास्ते ऐ 'मयंक'।
कितनी चश्मक है सरबराहों में।।

SADHNA PUBLICATIONS

साधना पब्लिकेशन्स